ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २६० म अंक १५ अक्टूबर २०१८ (वर्ष ११ मास १३० अंक २६०)

वि दे ह *विदेह Videha विदेह* *http://www.videha.co.in* *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-

अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

पाठकीय

आशीष अनचिन्हार

पछिला किछु समयसँ विदेहपर देवेश झाजीकेँ पढ़ि रहल छी। नीक लागल। आगुओ हुनकर रचनाकेँ पढ़ैत रहब से उम्मेद अछि। अंक २५९ मे संतोष कुमार राय "बटोही" जीक कविता पढ़ि लागल जे भविष्यमे ई बहुत दूर धरि जेता। आगुओ एबाक चाही हिनक रचना

२. गद्य

२.१.१. डॉ. बचेश्वर झा- मिथिलाक विभूति आयाची मिश्र २. नारायण यादव-गिफ्ट ३.आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-३

२.२.डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क उपन्यास- हमर गाम

२.३.रबीन्द्र नारायण मिश्र- दूटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

२.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास) धारावाहिक आ दूटा लघुकथा

१. डॉ. बचेश्वर झा- मिथिलाक विभूति आयाची मिश्र २. नारायण यादव-गिफ्ट ३.आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-३

१

डॉ. बचेश्वर झा

मिथिलाक विभूति आयाची मिश्र

मिथिलाक भूमि एहन अछि जाहिठाम अदौसँ माँ मैथिलीक कोखिसँ विद्या भास्कर लोकनि जन्म ग्रहण करैत रहलाह अछि।

एहि सरिसबक माटिमे माँ मैथिलीक कोखिसँ एक एहन सूर्यक उदय भेल जे जन्म-ग्रहण करितहि अपन रश्मिसँ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक क्षेत्रकेँ आलोकित कएल। विद्याध्ययन कऽ कौलिक मर्यादाक रक्षा कएलन्हि। एहन प्रात: स्मरणीय संतोषी, तपस्वी, निर्लोभी एवम् निरासक्त व्यक्ति भवनाथ मिश्र छलाह। हिनकासँ पूर्व आ पछातियो अनेक सरस्वतीक वरद पुत्र लोकनिक नाम लेल जा सकैछ जे मिथिलाक रहितहु मिथिलेत्तर प्रान्तोमे अपन नामोज्वल कएने छलाह ओ लोकनि थिकाह- "गौत्तम, कणाद, याज्ञवल्क्य, उदयनाचार्य, पक्षधर, मण्डन मिश्र, वाचस्पति, जय कृष्णा, त्रीलोचन, हरि मिश्र, गंगेश, विद्यापति, चन्दा झा,भारती, गार्गी, लक्ष्मीनाथ प्रभृति।" एहूमे अधिकांश सरिवसक माटिमे उत्पन्न भेनिहार छलाह। तप: पूत, परम ज्ञानी, शास्त्रानुसार चलनिहार एवम् नवन्यायक निष्णात भवनाथ मिश्र

आजीवन ककरोसँ किछु याचना नहि कयल तेँ ई अयाचीक नामसँ बहु चर्चित भऽ गेलाह। अपन उपनाम अयाची सँ जगत विख्यात भेलाह। अभाव ओ असंतोषकेँ अपना लग कहियो फटके नहि देलन्हि। मात्र सवा कट्ठा बाड़ी जगह खेत ओ खरिहानक काज करैत छलन्हि। एहीसँ जीविका चलैत छलन्हि। दुर्वासा दूभिक रस खाय रहैत छलाह। तेँ अयाची साग-पात खाय काया ठाढ़ रखने छलाह। भव नाथक 'अयाची' टेक तोड़बा लए दैविक आ लौकिक प्रलोभवन सभ आएल मुदा ई टस-सँ-मस नहि भेलाह।

एहि तरह संकल्पक पालनमे हिनक धर्म पत्नी भवानीक सेहो सराहनीय सहयोग रहल। एहन आस्तिक दम्पतिक कोखिसँ अद्‌भुत संस्कारी पुत्रक जन्म भेल कहबी छैक 'बाढ़े पूत पिता के धर्मे' बालकक नाम शंकर मिश्र राखल गेल। शंकर शंकरे समान छल। त्यागसँ अमरत्वक प्राप्ति होइछ। असली सुख त्यागेसँ भेटैछ। त्यागी लोकक तुलना ककरोसँ नहि कएल जा सकैछ। अयाची द्वारा सांसारिक सुखक त्याग एक प्रेरणा पुंजक रूपमे अछि। वास्तविक ओ विशिष्ट आनन्दक अनुभूति त्यागीकेँ होइछ। बिना संकोच कहल जा सकैछ जे अयाची पारखी छलाह तेँ ने ओ त्याग मय जीवन जीबाक आदर्श उपस्थित कएल। एहि सन्दर्भमे कविक उक्ति अछि-

"धन्य-धन्य मातृभूमि, सकल ज्ञान-गुणक खान

कतहु सबा कट्ठा मात्र बाड़ीक साग-पात,

औखन चमकैत अछि अयाचीक स्वाभिमान।।"

पूजा-पाठमे लीन रहनिहार अयाची पलखति भेलापर विद्या विलासमे लीन होथि। हुनक ख्याति सर्वत्र पसरि गेल छल। जखन दूर-दूरसँ जिज्ञासू छात्र लोकनि शंकाक समाधानार्थ हिनका लग अबैत छल तँ ई अपन बालककेँ भिड़ा देथि। आगन्तुक छात्रकेँ झुझुआइत देखि अयाची बुझि जाथि जे बालक शंकरक वयस कम तेँ ई लोकनि अपन अपमान बूझैत छथि तखन ओ कहि देथिन्ह जे शंकरक वयस नहि देखू।

बालक शंकरक प्रखड़ विद्वताक थाह पाबि ओ लोकनि स्वीकारैत छलाह जे मिथिलाक जतेक नाम सुनल ताहिसँ बेसी एहिठामक विशेषता अछि। अयाची पुत्र शंकरक संस्कार देखि मुक्त कण्ठसँ हिनक भाग्यक भूरि-भूरि प्रशंसा करथि। भवनाथ जौं महादेव तौं भवानी सद्य: पार्वती प्रतीक छलीह। निर्धन पतिक अनुगामिनी,सती साध्वी ओ परम सहिष्णु छलीह। टकुरीसँ सूत काटि वस्त्र अपन आ पतिक हेतु ओरिआउन कऽ लैत छलीह। अभावी घर रहितो आतिथ्य भावमे अग्रगणी छलीह। जनश्रुति अछि एक समय अतिथि-सत्कारक हेतु घरमे ओरिआउन नहि भेलापर लोटा बन्धकी राखि भोजन सामग्री जुटाए बाड़ीसँ खम्हारू उपाड़ैत छलीह कि एक तमघैल स्वर्ण मुद्रा प्राप्त भेलन्हि। भवानी पुलकित भऽ गेलीह जे आब दरिद्रीक अन्त भऽ जाएत। मुदा अयाची लोहि स्वर्ण मुद्राक तमघैलकेँ अपन पुत्र शंकरक द्वारा राजाक कोषमे जमा करा देलन्हि किएक तँ माटिक धन राजकोष थिक। एहिपर हुनक पत्नी विचलित रहि गेलीह। एकरा दैवी प्रलोभन कहि सकैत छी।

मिथिलाक सभ्यता ओ संस्कृति संसारक सभ्यता ओ संस्कृतिसँ श्रेष्ठ अछि। विभिन्न ठामक विद्वान एहिठाम वर्षे रहि अपन ज्ञान पिपासाकेँ शान्त करैत छलाह। एहिठामसँ सभ्य ओ सुसंस्कृत भऽ जाइत छलाह। अपन संस्कारक परिचय लग-भग पाँचे वर्षक अवस्थामे अयाची पुत्र शंकर मिथिलेशकेँ जखन देल तँ ओ अवाक् रहि गेलाह आ अयाचीक तपश्ययाक प्रसादात् बालक बुझि नतमस्तक भऽ अभिनन्दन कएलन्हि- शकरक उक्ति :

"वालोहं जगदानन्द, नमे बाला सरस्वती,

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णेयाम जगत्रयम्।"

भवनाथ ओ भवानी दुहुक कर्म-कमलसँ धर्मक जे पराग झड़ल ताहिसँ मिथिलाक माटि अपलखित अछि।

अयाचीक निर्लोभता प्रस्ट प्रमाण तखन भेटैछ जखन मिथिलेश बालक शंकरक संस्कारसँ संतुष्ट भऽ अपन वेश कीमती रत्नक माला दर्गनि उतारि शंकरक गरामे पहिरा देल आ एक मोटरी स्वर्ण मुद्राक संग स्वयं हाथीपर बालक शंकरकैँ अयाचीक डीहक माटि माथमे लगएबाक हेतु नेने एलाह। मिथिलो चित ढंगसँ तत्कालीन महाराजक सम्मान कएल। महाराज हिनक दैन्य दशा देखि खोरिस हेतु प्रर्याप्त धन प्रदान करबाक ईच्छा प्रगट कएल तँ अयाची करवद्ध कहल-

"अपने हमर टेककैँ नहि तोड़ू। हमरा कोनो वस्तुक प्रयोजन नहि अछि। ई व्रत निमहि जाय इएह हमर आकंक्षा।"

मिथिलेश हुनक चरण रज लऽ अपना कए धन्य मानल। बादमे भवानी बालक शंकरक कमाइ पुरस्कारसँ भिज्ञ करोलन्हि तँ प्रसन्न भेला जे आब दरिद्रता भागि जाएत मुदा तत्क्षणहि बालक शंकरक जन्मक समय मरनी चमैनकैँ निछाउर किछु नहि देने छलीह से मोन पड़ि गेलन्हि।

ताहि समय सहर्ष कहल जे ई सभटा रत्न स्वर्ण मरनीकैँ बाजा कए देल जाय। दुनू प्राणीक मतैक्यसँ मरनी डरीनकैँ दऽ देल गेल। ओहो एहि प्राप्त धनकैँ धर्म काज बुझि पैघ पोखरि खुनाए देलक। जे मधुबनी जिलान्तर्गत विद्यमान अछि, मुदा काल-क्रमे ई पोखरि विकृत ओ भथन भऽ गेल अछि जे औखन चमनिया-डावर नामसँ जानल जाइछ।

एखनहुँ ई श्लोक अयाची मिश्र पुत्र शंकर आ पक्षधर मिश्रक प्रति अछि-

"शंकर वाचस्पतियो:

शंकर वाचस्पति सदृशी,

पक्षधर प्रति पक्षी भूतो

न भवति।"

अर्थात् शंकर ओ वाचस्पति तँ महादेव आ वृहस्पतिये छलाह। कहल जाइछ जे अयाचीक शंकर पक्षधर मिश्रक बाद भेल छलाह। ईहो अनुमान अछि जे मिश्र उपाधि- ओहि समयमे विद्वान लोकनिक होइत छल। खेदक विषय अछि जे एहन उद्भट न्यायक पण्डित अयाचीक कीर्त्ति गाथाक कोनोटा प्रमाणिक पोथी- आ हिनक जन्म सम्बन्धी ई. सनक परिचय- ठोस रूपमे नहि प्राप्त अछि।

अयाचीक निर्माउल भूमि सरिसब अद्यावधि म.म. सर गंगा नाथ झा एवम् हुनक पुत्र लोकनि सन विभूतिक जन्म देने अछि। कवि सेहो अयाचीक डीहक माटि माथमे लगबैत कहि उठैत छथि-

"हे डीह!अमर कीर्त्तिक निधान

जकरा कण-कणमे स्वाभिमान।

थिक विप्र अयाचीक वर्त्तमान

से माटि थिक चन्दन समान।

सबा कट्ठा बाड़ीक साग

रखने छल अयाचीक पाग।।"

अन्तमे श्रद्धा सुमन चढ़बैत एहि मिथिलाक विभूतिकैँ नमन करैत छी।

२

नारायण यादव

गिफ्ट

ब्रह्मानन्द काकाक उमर ढलल जा रहल छल। बियाह भेला बहुतो दिन भय गेल छलैक। कोनो बाल बच्चा नहि भय रहल छल। कतेको बेर डॉक्टरसँ देखा चुकल छलाह। एतेक रास धन-सम्पतिक उपभोग के करत? ताहि सोचमे पड़ल रहैत छलाह ब्रह्मानन्द काका। बहुतो ओझा-बैद्यसँ सेहो आशीर्वाद लय चुकल छलाह। हिनक पत्नी सेहो बहुतो देवी-देवताकेँ कबुला-पाती कय चुकल छलीह। स्त्रीगणक विचारसँ कतेक धामीक हाथे कायल छलाह। सासु ननद सभ ओकरा पत्नीकेँ बड़ उपराग दैत कहैत छल जे ई मौगी अभागिन अछि, बाँझ अछि तेँ बाल-बच्चा नहि भय रहल छन्हि। दुनू पक्षसँ माने लड़का आ लड़की पक्षक स्त्रीगण बहुतो देवी-देवताकेँ कबुला पाती केयने छल। भगवानक महिमाकेँ कियो नहि जानि सकैत अछि। मखना सन मुसहरकेँ सत्ता सोरे धिया-पुता छैक। सुभेश्वर मण्डलकें जेकरा ने रहैक लेल घर छै आ ने घराड़ी सरकारी जमीन यानि गैरमजरूआ जमीनमे घर बनेने अछि। राति खाइत अछि तँ दिन लय झखैत अछि आ दिन खाईत अछि तँ रातिक लेल चिन्ता लागल रहैत छन्हि। शुभेश्वर मण्डल ब्रह्मानन्द काकाक लगुआ जन अछि।

ब्रह्मानन्द काका हरबाही कय जे चारि सेर धान भेटै छलै ताहिसँ सभ बाल बच्चाक भोजन साजन चलैत छैक। शुभेश्वर मण्डल मिहनतिया जन अछि। ब्रह्मानन्द काकाक दू बिगहा खेत बटाई करैत छल। 25-30 मन धान सालमे बटैया खेतसँ आ धन-कटनी कय 10-20 मन धान कमा लैत छल। ओहि धानसँ सालभरिक लत्ता-कपड़ा, तेल, साबुन आदिक व्यवस्था भय जाइत छलैन्ह। अधिक खर्चक लेल गिरहत मदद करबा लेल तैयार रहिते छन्हि। ब्रह्मानन्द काका शुभेश्वर मण्डलकेँ बड़ मानैत छथि।

ब्रह्मानन्द काकाकेँ उदास देखि शुभेश्वर मण्डल सेहो चिन्तित रहैत छल। मण्डलजीक धिया-पुता भरि दिन ब्रह्मानन्द काकाक अँगना घरमे टहल-टिकोरा करैत रहैत अछि। मालिक ओकरा धियापुताकेँ बड़ मानैत छथि। कहियो-कहियो पैंट-शर्टक व्यवस्था सेहो कय दैत छथि। मण्डलोजी भगवानसँ गोहार लगबैत रहैत अछि। जे हमरा गिरहतकेँ बाल-बच्चा होइन्ह।

किछु दिनक पश्चात् ब्रह्मानन्द काकाक शुभचिन्तकक प्रार्थना भगवान सुनलैन्ह। ब्रह्मानन्द काकाक पत्नी (लाल काकी) गर्भवती भेलीह।

ई शुभ समाचार सुनि सभ शुभचिन्तकक मन प्रफुलित भय गेलैन्ह। चारू तरफसँ शुभकामनाक संदेश आबय लागल। समय बितैत गेल। महिला डॉक्टरक संरक्षणमे लाल काकी रहय लगलीह। समयपर बच्चाक जन्म भेल। जच्चा-बच्चा सही सालामत रहल। घरमे खुशहाली आबि गेल। सासु-ननदिक उलहन-उपराग बन्द भय गेल। बच्चाक छठिहारमे हित-अपेक्षित आमंत्रित भेलाह। खूब नीक जकाँ भोज भात भेल। बच्चाकेँ ढेर रास उपहार भेटलैक। रातिमे सभ रश्म पूरा कय बच्चाक नाम भोला राखल गेल।

क्रमहि भोला किशोरावस्थामे पदार्पण कयलक। भोला बड़ संस्कारी बच्चा निकलल।

एक समयक बात छल। भोला बीमार भेल। ब्रह्मानन्द काका आ लालकाकी ओकरा नीक डॉक्टर लग इलाजक हेतु लय गेलाह। डॉक्टर साहेब सभ तरहक जॉंच लिखलक। पौथोलजिक जॉंच रिपोर्ट आयल। डॉक्टर

साहेब रिपोर्ट देखलैन। जाँचमे ई ज्ञात भेल कि दिलमे सहस्त्र छेद अछि। डॉक्टर साहेब कहलैन जे एकर दिल वदलऽ पड़त। किछु दिन ठीक रहत, तकर बाद भोलाकेँ दिक्कत होमय लागत।

व्रह्मानन्द काका आ लाल काकी खूब कनलैथ। लालकाकी मनहि मन निश्चय कयलक जे हम अपन कलेजा दय बेटाक जान बचायब।

दबाई लिखल गेल। दबाई चलऽ लागल। भोला पूर्वक स्थितिमे आबि गेल। डॉक्टर साहेबक सलाह छलैन्ह जे चारि-पाँच वर्ष धरि ठीक रहत। तकर बाद दिल बदलबा देबैक। चारि-पाँच वर्षक बाद जखन भोलाक उम्र सत्रह वर्षक छलैक तखन मायकेँ कहलैन जे माय हमरा उठारहम जन्म दिनपर कोन तरहक गिफ्ट देबही।

लाल काकी बजलीह-

“बौआ, तोहर अठारहम जन्म दिनपर जे गिफ्ट देबऽ से आलमारीमे राखल रहतऽ। तौ लयलीह।”

भोला जिज्ञासा कयलैन्ह-

“माय हमरा कहि दे जे की देमे।”

लाल काकी बजलीह-

“बेटा, आई धरि गिफ्ट कियो नहि देने हेतैक से तोरा देबह। अखन गिफ्टक नाम कहलासँ मजा किरकिरा भय जेतह।”

भोला चुप भऽ गेलाह। समय बितैत गेल। जहिया भोलाक अठारहम साल पुरितै, ताहिसँ किछु दिन पूर्वे ओ बीमार भऽ गेलाह। माय-बापक एकलौता सन्तान। सभक आँखिक तारा।

फेर ओकर माय-बाप भोलाकेँ पूर्वक डॉक्टर लग लय गेलाह। ओ डाक्टर साहेब भोलाकेँ पहचैन गेलाह। ओ हुनका अभिभावककेँ दिल प्रत्यारोपणक सलाह जे पूर्वहिमे देने छल पुन: दोहरौलैथ। भोला माय अपन दिल देबाक लेल तैयार भेलीह। ऑपरेशनक तैयारी हेतु माय-बाप घर अयलाह। ऑपरेशनक फीसक व्यवस्था कयल गेल। भोलाक माय एकटा पत्र लिखि एकटा डिब्बामे बन्द कय आलमारीमे राखि देलक।

ऑपरेशन करयबाक हेतु भोलाक माय-बाबू डॉक्टर ओतय पहुँचलाह। भोलाक दिल निकालि, ओकर मायक हृदयमे आ मायक दिल भोलाक हृदयमे प्रत्यारोपित कयल गेल। माय-बेटा दुनू दुरुस्त छलाह। भोलाक स्वास्थ्य दिनानुदिन ठीक होमय लगलैक। ओ भोला मायक स्वास्थ्य दिनानुदिन छीन होयम लगलैक। जहिया भोलाक जन्म दिन छल ताहिसँ 25-30 दिन पहिनहि भोलाक माय स्वर्गवासी भय गेलीह।

श्राद्ध कर्म नीक जकाँ सम्पादित भेल। भोलाक जन्म दिन खूब धूम-धामसँ मनाओल गेल। भोलाकेँ अपन मायक द्वारा देल गिफ्टक बात मन परलैन्ह। ओ आलमीराकेँ खोललैन्ह। तँ देखलक जे एकटा डिब्बापर लिखल छैक जे हैपी बर्थ डे टू यू बेटा। भोला डिब्बा खोललैन्ह। डिब्बामे एकटा पत्र लिखि राखल छल। भोला मोरल पत्रकेँ पसारि पढ़य लगलाह। पत्रमे लिखल छल-

“बेटा, हमर जिगरक टूकड़ा यदि तौं एहि पत्रकेँ पढ़ि रहल छह तँ तू बिल्कुल ठीक भय जेबह। तोरा याद होयतह जे जखन तौं बीमार भेल छलह तखन हम तोरा डॉक्टर साहेबक पास लऽ गेल रही। डाक्टर साहेब बजलाह जे एकरा दिलमे बहुत रास छेद छैक। दवाई सँ ई ठीक नहि होयत, ओहि दिन हम बहुत कनलहुँ। आ निर्णय लेलहु जे बेटाकेँ हम अपन दिल दय ओकरा जीवन प्रदान करब। तोरा इहो याद हेतह जे एक दिन तूँ बाजल छलह जे माँ हमरा अपन 18म जन्म दिनपर कोन प्रकारक गिफ्ट देबही, से बेटा हम तोहरा गिफ्टक रूपमे अपन दिल दय रहल छीह। एकरा सम्हारि कऽ रखियह। हैपी बर्थ डे टू यू बेटा।”

३.

आशीष अनचिन्हार

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-3

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम तँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

"सूरज" फिल्म केर ई नज्म जे कि मो. रफीजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि हसरत जयपुरी। संगीतकार छथि शंकर जयकिशन। ई फिल्म 1966 मे रिलीज भेलै। एहिमे राजेंद्र कुमार, वैजयन्तीमाला आदि कलाकार छलथि।

बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है

हवाओं रागिनी गाओ मेरा महबूब आया है

ओ लाली फूल की मेंहँदी लगा इन गोरे हाथों में
उतर आ ऐ घटा काजल, लगा इन प्यारी आँखों में

सितारों माँग भर जाओ मेरा महबूब आया है

नज़ारों हर तरफ़ अब तान दो इक नूर की चादर
बडा शर्मीला दिलबर है, चला जाये न शरमा कर
ज़रा तुम दिल को बहलाओ मेरा महबूब आया है

सजाई है जवाँ कलियों ने अब ये सेज उल्फ़त की
इन्हें मालूम था आएगी इक दिन ऋतु मुहब्बत की
फ़िज़ाओं रंग बिखराओ मेरा महबूब आया है

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222 1222 1222 1222 अछि। पहिल अंतरामे "मेंहँदी" शब्दमे मात्राक्रम गलत अछि हमरा हिसाबें मुदा उर्दूमे "शब्दक बीच बला "ह" केर उच्चारण पहिल शब्दमे मीलि क' ओकरा दीर्घ बना दैत छै जेना कि "लहरि" केर उच्चारण "लैर" सन आदि, "मेंहँदी" केर उच्चारण तेहने भ' सकैए (पक्का पता नै) ओनाहुतो ई नज्म छै आ ताहूमे फिल्मक लेल लिखल गेल। शाइर एकरा गजल घोषित नै केने छथि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि।

2

"आप आये बहार आई" फिल्म केर ई नज्म जे कि मो. रफीजी ओ लता मंगेशकरजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनन्द बक्षी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत प्यारेलाल। ई फिल्म 1971 मे रिलीज भेलै। एहिमे राजेंद्र कुमार, साधना आदि कलाकार छलथि।

दिल शाद था कि फूल खिलेंगे बहार में
मारा गया ग़रीब इसी इंतज़ार में

मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल गया होता
अगर तूफ़ाँ नहीं आता किनारा मिल गया होता

न था मंज़ूर क़िस्मत को न थी मर्ज़ी बहारों की
नहीं तो इस गुलिस्ताँ में कमी थी क्या नज़ारों की
मेरी नज़रों को भी कोई नज़ारा मिल गया होता

ख़ुशी से अपनी आँखों को मै अश्को से भिगो लेता
मेरे बदलें तू हँस लेती तेरे बदलें मैं रो लेता
मुझे ऐ काश तेरा दर्द सारा मिल गया होता

मिली है चाँदनी जिनको ये उनकी अपनी क़िस्मत है
मुझे अपने मुक़द्दर से फ़क़त इतनी शिकायत है
मुझे टूटा हुआ कोई सितारा मिल गया होता

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222 1222 1222 1222 अछि। बहुत काल शाइर गजल वा नज्मसँ पहिने माहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अनिवार्य नै छै। एहि नज्मसँ पहिने एकटा शेर "दिल शाद था कि फूल खिलेंगे बहार में मारा गया ग़रीब इसी इंतज़ार में" (एहू शेरमे बहर छै) माहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि।

3

"दो बदन" फिल्म केर ई नज्म जे कि मो. रफीजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि शकील बदायूँनी। संगीतकार छथि रवि। ई फिल्म 1966 मे रिलीज भेलै। एहिमे मनोज कुमार, आशा पारेख आदि कलाकार छलथि।

भरी दुनियाँ में आख़िर दिल को समझाने कहाँ जाएं
मुहब्बत हो गई जिनको वो दीवाने कहाँ जाएं

लगे हैं शम्मा पर पहरे ज़माने की निगाहों के
जिन्हें जलने की हसरत है वो परवाने कहाँ जाएं

सुनाना भी जिन्हें मुश्किल छुपाना भी जिन्हें मुश्किल
ज़रा तू ही बता ऐ दिल वो अफ़साने कहाँ जाएं

नजर में उलझने, दिल में है आलम बेकरारी का
समझ में कुछ नहीं आता सुकूँ पाने कहाँ जाएँ

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222 1222 1222 1222 अछि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क

उपन्यास- हमर गाम

निवेदन

वन्धुवर जगदीश प्रसाद मण्डलक आग्रह जे 24 मार्च 2018कँ आयोजित 'सगर राति दीप जरय' लेल हम एकटा बाल उपन्यास जरूर लीखी जकर विमोचन ओतए कएल जाएत। हम पहिनहि कहि देने छलिएनि जे किछु निजी व्यस्तताक कारण हम एहि आयोजनमे सशरीर उपस्थित नहि भऽसकब।

बाल उपन्यासक एकटा खाका दिमागमे तैयारो कएल मुदा आकस्मिक चक्रव्यूहमे फँसि गेलासँ ओ तैयार नहि भऽसकल। मात्र दू दिन बचल छल जखन दोसरे किछु फुरा गेल आ चारि पाँती लीख बैसलहुँ। जे अछि, अपनेक समक्ष अछि। एकरा उपन्यास कहबै, उपन्यासिका, कथा आ कि गामक लेखा-जोखा से निर्णय अपनहि करबै।

अत्यल्प समयमे चि. उमेश मण्डल एकरा पुस्तकाकार बना विमोचन लेल तैयार केलनि ताहि लेल हुनक आभारी छी।

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

कलकत्ता, 21 मार्च 2018

1. हमरो गाम मिथिले मे छै

हम कोनो पढ़ल-लिखल लोक नहि छी, अपितु यदि कहियै जे हमरा गाममे एकटा कैं छोड़ि कियो पढ़ल लिखल नहि अछि तऽबेसी उचित होएत। घीच-घाँचि कए कहुना दशमा पास केलहुँ आ चल गेलहुँ दिल्ली रोजगारक खोजमे। शुरुएमे बुझा गेल जे एतए अपनाकैं दशमा पास कहलासँ लाभ नहि नोकसाने अछि तें एहि बातकैं नुका रखलहुँ आ जे काज हाथमे आएल से धरैत करैत गेलहुँ। अवसर देखैत काज छोड़ैत पकड़ैत कहुना दस साल बाद लगलहुँ टेम्पू चलबए। ताबत गाम दिश सेहो सड़क सब सुधरि रहल छलैक, फोर-लेन बनब शुरू भऽगेल रहै तऽसोचलहुँ जे गामे घुरि चली, ओतहि टेम्पू चलाएब। कने कमो कमाइ हैत तऽबेसिए लागत कारण गाममे कमसँ कम दिल्लीक सड़लाहा बसातसँ त्राण भेटत। कतबो किछु महग होउ, गाममे एखनहु बसात साफे छैक आ फ्री सेहो कारण एखन तक ओहिपर कोनो मालिक हक नहि जतौलक अछि।

हमर नीक कि खराप लति बूझू एतबे जे भोरमे तीन टाकाक एकटा अखबार कीन लैत छी आ टेम्पूपर जखन बैसल रहैत छी तखन ओकरा पढ़ैत रहैत छी। एक दिन एहने अखबारमे पढ़ल जे मिथिलामे नवका चलन एलैक अछि अपना अपना गामक महान विभूतिक वर्णन करैत किताब लिखब। किछु एहने किताब बजारसँ कीन अनलहुँ। देखलहुँतऽहर्षो भेल आ ताहिसँ बेसी इर्ष्यो आ ग्लानि भेल। हर्ष एहि लऽकए जे पहिल बेर बुझलहुँ मिथिलामे एहन महान विभूति सब भेलाह आ इर्ष्या आ ग्लानि एहि लेल जे हमरा अपन गाममे एहन कोनो विभूति किएक नहि भेलाह।

हमरा चिन्ता भेल- की सत्ते हमरा गाम मे कोनो विभूति नहि भेला? किछु बूढ़ पुरान सँ गप कएल। एक गोटे पूछि देलनि-

"खाली पढ़ले लीखल लोक विभूति होइ छै की?"

हम सोचए लगलहुँ। ठीके, से रहितै तऽ सिनेमा स्टार आ कि खिलाड़ी सब कें कियो चिन्हबे नहि करितै। हमरा बुझा गेल जे आन गामक विभूति सन तऽ नहि,तैयो एतेक जरूर जे हमरा गामक विभूति सब एक हिसाबें कतबो विचित्र रहथु मुदा ओहो लोकनि अपना समय मे गामक नाम कोनो तरहें उजागर करबे केलनि ।

सेहन्ता भेल जे हमहूँ अपना गामक बारेमे किछु लीखी। मुदा की लीखब? लिखबाक लुरियो तऽनहि भेल। तैयो हम ठानि लेल जे लिखबे करब। विभूति लोकनि जे छलाह, जेहन छलाह, भेलाह तऽमिथिलेक सुपुत्र/सुपुत्री ने। आ हमरो गाम जेहने अछि, अछि तऽओही माटिपर कमला बलान कोशीसँ घेराएल, रौदी दाही भोगैत अशिक्षा आ गरीबीमे उबडुब करैत। तें हम निश्चय कएल जे हिनका लोकनिक कीर्तिक गाथा लीखल जाए।एखुनका युगे विज्ञापन आ प्रचारक छिऐ, से गामक नुकाएल छिड़िआएल रत्न सबकेँ बहार करबाक चाही। हम गौआँ भऽकए यदि नहि लिखबनि तऽअनगौआँकेँ कोन मतलब छैक?

ओना तऽलिस्ट पैघ बनि गेल मुदा हम बहुत पुरान लोककेँ पहिने छाँटि कए मात्र दसटाक वर्णन एतए प्रस्तुत करए जा रहल छी। एहिमे पहिल नौटा छथि हमरा गामक नवरत्न आ दसम भेलाह विशिष्ट अतिथि रत्न। आशा करैत छी गौआँ लोकनि हमर एहि प्रयासक प्रशंसा करबे करताह। यदि किछु अनगौआँ मैथिल समाजकेँ हमर गामक एको गोटेक कीर्ति नीक लगलनि तऽहमर प्रयास खूबे सफल बूझल जाएत। नहि तऽकमसँ कम किछु लिखित तऽरहिए जाएत जे एखनुक बूढ़ पुरानक दिवंगत भऽगेलाक बाद नवका पुस्तकेँ पूर्वजक यशक किछु ज्ञान देतैक।

हमर लिखल वस्तु सबकेँ मटिकोरबा गामक मिडिल स्कूलक हेडमास्टर साहेब बहुत कटलनि छँटलनि आ शुद्ध केलनि ताहि लेल हुनका बहुत धन्यवाद। बिना हुनकर सहयोग के ई अपने सबकेँ पढ़बा योग्य नहिए भेल रहैत।हम अपना गामक विभूतिक फोटो नहि छापि रहल छी। एकर कारण अपने सब पूरा पुस्तक पढ़लाक बाद बुझिए जेबैक।

विनीत

रामलाल परदेशी
(गामक एक उत्साही युवक)
गाम : खकपतिया
डाकघर:मटिकोरबा
जिला : मधुबनी।

2. बीए

मूल नाम: राम किसुन सिंह

पिताक नाम: अजब लाल महतो

जन्म तिथि: 1 जनवरी 1940। ई हुनकर सर्टिफिकेटमे लिखल छनि, मुदा हुनक पिताक अनुसार ओ तीन चारि बरख जेठ जरूरे छथि। जखन ओ मटिकोरबा गामक मिडिल स्कूलमे नाम लिखौलनि तऽहेडमास्टरकेँ जे बूझि पड़लै से लीख देलकै। हुनकर जन्म तऽभरदुतिया दिन भेल छलनि।

शिक्षा: यथा नाम, माने ओ बी.ए. पास छथि। ओ गौरवसँ एखनहुँ लोककँ सुनबै छथिन जे मैट्रिक, आइ.ए. आ बी.ए.मे लगातार ओ तृतीय श्रेणीमे पास केलनि। संगहि मैट्रिकमे दू बेर, आइ.ए.मे तीन बेर आ बी.ए.मे चारि बेर फेल केलनि।

उपलब्धि: हुनक सबसँ पैघ उपलब्धि छनि हमरा गामक पहिल आ एखन तक के अन्तिम ग्रेजुएट भेनाइ। पछिला करीब पचास बरखसँ एहि रेकॉर्डकँ पकड़ने छथि। ओहू पुरान जमानामे ग्रेजुएट भैयो कए हुनका जखन दस साल तक कतहु नोकरी नहि भेलनि तखन ओ हारि कए पुस्तैनी काज, खेती,मे लागि गेलाह।

एहन नहि जे सत्ते कतहु नोकरी नहि भेलनि। पुर्णियामे एक ठाम हाइ स्कूलमे अध्यापक भेलाह मुदा पहिले दिनक हिनक पढ़ाइ देखि कए ओतुका विद्यार्थी सबकँ हिनक योग्यताक बेस अन्दाज लागि गेलैक आ ओ सब हड़तालपर बैसि गेल। एमहर साँझमे हिनका जे मच्छर कटलक से बोखार भऽगेलनि। दोसर दिन स्कूल जाइ के काजे नहि पड़लनि। कहुना एक हप्तापर गाम घुरि एलाह। विद्यार्थी सबकँ विचारल बात विचारले रहि गेलैक। फेर दोसर बेर एहन योग्य शिक्षकसँ भैंट नहिए भेलनि हुनका सबकँ।

स्वस्थ भेलाक बाद ओ नियारलनि जे मास्टरी हुनका बुते पार नहि लगतनि। चल गेलाह कलकत्ता भाग अजमबै लेल।कलकत्तामे एखनहु बीए पैघ योग्यता बूझल जाइत छलैक। ओना जाहि समय बीए बीए केलनि ताहि समय बिहारक परीक्षा पद्धतिक चर्चा आन आन ठाम शुरू भऽगेल छलैक आ किछु लोक बिहारी बीएकँ ओकर उचित हक देबा लेल तैयार नहि छल। कलकत्तामे मटिकोरबा गामक एक गोटे कोनो सेठक ड्राइवर छल। ओ हिनक पैरवी केलक सेठ लग। किछु बेसिए बढ़ा चढ़ा कए कहि देलकै सेठकँ। फल ई भेल जे सेठ हिनका बिना कोनो पूछताछ के अपना गद्दीपर मनेजर बना देलकनि। ई बहुत खुसी भेलाह।

मुदा भाग्यकँ किछु दोसरे रस्ता देखेबाक छलैक। तेसर दिन सेठक एकटा मित्र आबि गेल आ ओकरा अनुपस्थितिमे ओहिना हिनका संग गपसप करए लागल। ओकरा मोनमे कोनो दुर्भाव नहि छलैक मुदा समस्या छल घेघ कतहु नुकाएल रहए ! सेठक मित्रकँ बीएक असली चिबही बीए हेबापर कने सन्देह भऽगेलै आ एकर चर्चा ओ साँझमे अपना मित्र लग केलक। अगिला दिन जखन बीए गद्दीपर बैसलाह तखन सेठ आबि कए हुनका पछिला तीन दिनक हिसाब किताब पूछि बैसल। बीए घबरा गेलाह। ओना ओ कोनो गड़बड़ी नहि केने छलखिन मुदा हिनका ई बात सिखले नहि छलनि जे यदि किओ हिसाब किताब पूछत तऽउत्तर कोना देल जाए। एखन तक ओ खाली किताबी प्रश्नक उत्तर रटैत आएल छलाह। व्यावहारिक काजक उत्तर देब सिखबे नहि केलनि। से एतए ओ गड़बड़ा गेलाह। फल जे ओही दिन दुपहरियामे गामक गाड़ी धेलनि।

एहिना ओ पटना, दिल्ली मुम्बइ आदि कतेको छोट पैघ शहरमे सेहो भाग्य अजमौलनि मुदा भाग्य तऽहुनका गाम घीचऽचाहैत छलनि से पुर्णिया रहओ कि पटना,लखनउ कि लुधियाना, सब ठाम कोनो ने कोनो एहन परिस्थिति भइए गेलनि जे दू चारि दिनसँ बेसी नहि टिक सकलाह।

बीए सौंसेसँ बौआ कए गाममे खेती करए लगलाह। खेतीमे खूब नाम कमौलनि। दस किलो के मूर आ सात किलो के बैगन हुनके खेतमे उपजल छलनि। हमरा गाममे गुलाब आ गेंदा फूलक खेती हुनके शुरू कएल छिएनि। एखन हमर गाम एकर नीक व्यवसाय कऽरहल अछि। आब तऽदेखादेखी अगल बगलक गाम सबमे सेहो फूलक नीक खेती भऽरहलै अछि। एहि प्रयास लेल हुनका गामक पंचायतसँ विशेष पुरस्कार भेटलनि।

बीएक सबसँ पैघ उपलब्धि भेलनि गामक लोककँ स्कूली आ कौलेजिया पढ़ाइक प्रति अविश्वास करौनाइ। तकर बाद कियो अपना धीया-पूताकँ स्कूल कौलेज नहि पठौलक। मात्र साक्षर बनै लेल मटिकोरबाक मिडिल स्कूल तक। हमहू जे दशमा पास केलहुँ से एही कारण सम्भव भेल जे बाबूजी गुजरि गेला आ माएकँ हम कहियो ई बूझऽनहि देलियै जे हम कतए जाइ छी आ की करै छी।

दस साल तक विभिन्न शहर सबमे घुमैत ठोकर खाइत बीएकैं किछु नीक बुद्धि तऽभैए गेलनि। एकर उपयोग ओ केलनि गाममे झगड़लगौनाक रूपमे। हुनकर विशेषता अछि जे हुनका संग जे लोक पाँचो मिनट बैसि गेल आ हुनकर देल एक खिल्ली पान खा लेलक ओ अपना दियादी आ कि पारिवारिक झगड़ामे जरूर फँसत। आ ओहि झगड़ाक पंचैतीमे बीए जरूरे रहता। बेसी झगड़ा गामक पंचैतीसँ उपर नहिए जाइ छैक। किछुए एहन घटना भेलैक जे बीए बादमे सम्हारि नहि सकला आ मोकदमा भऽगेलै। कतबो माँजल ओझा गुणी रहथु, किछु भूत हुनको हाथसँ छुटिए जाइ छनि ने। तहिना बूझू।

हमरा गामक सीमामे जे चारू कातक चारि पाँच गामक लोकक जमीन जाल छैक ओहो सब एहि झगड़लगौना प्रेतक चक्करमे फँसिये जाइत अछि। सबकैं बूझल छैक जे बीए संग बैसनाइ आ हुनकर पान खेनाइ माने भेल कपारपर दुरमतिया सवार। मुदा कहाँ कियो बचि पबैत अछि? बीएक मधुर सम्भाषणक आगू सब फेल।

बीए एहि लूड़िसँ कोनो कमाइ नहि करैत छथि, ई तऽमात्र हुनकर मनोरंजन छिएनि। एहन उदार चरित्रक लोक परोपट्टामे नहि भेटत। एहि किताब लिखबाक क्रम मे एक दिन हम पूछि देलिएनि-

“एखन तक कतेक लोकक बीच झगड़ा लगा देने हेबै?”

ओ तऽ सबटा लीख कए रखने छला। एकटा पैघ लिस्ट हमरा आगू पसारि देलनि। हम चकित भऽ गेलहुँ। बीए तऽ नारदोक कान कटलनि मुदा किनको बूझल नहि। जरूर एकरा एक बेर गिनीज बुक अथवा लिमका बुक मे छपबैक कोशिश करबाक चाही। से भऽ गेला सँ अहीं कहू हमर गाम अपना जिला आ कि प्रदेश मे नाम करत की नहि?

q

3. खुरचन ठाकुर

मूल नाम: किसुनलाल ठाकुर, प्रसिद्धि खुरचन ठाकुर

पिताक नाम: तिरपित ठाकुर

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: सन उनैस सौ सतासी सालक बाढ़िमे

उपलब्धि: खुरचन ठाकुरक प्रसिद्धि खुरचने लऽकए भेल। हुनका लेल अस्तूरा बेकार छल। अनेरे लोक टाका खर्चा करत। ओ खुरचनकैं पिजा लैत छलाह आ केहनो बढ़ल केस-दाढ़ी रहओ, काटि दैत छलाह।ओहीसँ नह सेहो काटि दैत छलाह। जखन केश छँटबैक प्रचलन बढ़लै तखन खुरचन ठाकुर अपन ओही औजारसँ केश छाँटब सेहो शुरू केलनि। केशमे ककबा सटा दैत छलखिन आ ओहि उपरसँ खुरचन चला दैत छलखिन। देखनिहारकैं चकचोन्ही लागि जाइ छलनि जे बिना कैंची के केश कोना एतेक सुन्दर छँटा जाइत छलैक।

आ केहनो फोरा-फुन्सी रहओ खुरचन ठाकुरक डाकदरीक आगू सब जेना सरेंडर कऽदैत छल। फोराक डाकदर रूपमे खुरचन ठाकुर परोपट्टे नहि दश कोसमे नामी छलाह। कहियो कए तऽहुनका दूरापर लोकक लाइन लागि जाइत छल। खुरचन ठाकुरक खुरचनक स्पर्श होइतहि लोककेँ आरामक बोध होमए लगै छलै।

बीए जखन एक बेर कोनो शहरसँ घुरलाह तऽखुरचन ठाकुर हुनका देखलक ओतुका सैलूनमे केश छँटेने। बीएकेँ एखनहुँ मोन छनि खुरचन ठाकुरक हुथान। आ ओहि 'अलूरि' नापितक लेल प्रयोग कएल गेल अपशब्द सब जे बीए हमरा सुना तऽदेलनि मुदा लिखबासँ मना कऽदेलनि।

पूरा गाममे खुरचन ठाकुर एकसर, सौंसे गाम हुनकर जजमान। मुदा मात्र एकटा औजार, खुरचन, आ गाम नेहाल। एहन छलाह रत्न हमर खुरचन ठाकुर।

q

4. टहलू दास

मूलनाम : सियाराममण्डल

पिताक नाम: जगदेव मण्डल

जन्मतिथि: अज्ञात

मृत्यु: अकालकवर्ष (सम्भवतःउनैससौछियासठि)

उपलब्धि : टहलूटहलैततऽकमेछलाहमुदाहुनकचालिमेबड़काबड़काहारिजाइतछल।बूढ़लोकसबखिस्साकहैत छथिजेएकबेरककरोसारसाइकिलपरचढ़िकए

हमरागामएलाह।हुनकरगामकरीबसात-आठकोस (एखुनकालोकलेलबूझूचौबीस-पचीसकिलोमीटर) दूर।साइकिल ओहि समय ककरो ककरो रहैत छलै, हमरा गाममे ककरो नहि छलै से बूझू सौंसे गाम जमा भऽगेल साइकिल देखबा लेल।

टहलूहुनकापूछिदेलखिन-

"कतेकसमयलागलसाइकिलसँहमरागामअबैमे?"

ओगर्वसँबजलाह-

"इएहगोटेकघंटाबूझिलिअऽ।"

ओहो अन्दाजे बजलाह कारण हाथमे घड़ी तऽछलनि नहि आ ने टहलूएकेँ बूझल छलनि जे एक घंटा कतेक समय होइत छैक।टहलूहुनकादूसैतबजलाह-

"एतेककालमेतऽहमपएरेचलजाएबआघुरिकएचलोआएब, आयदिइन्तजामकएलरहततऽअहाँकघरपरभोज नोकऽलेब।"

सारकँभेलनिजेअनगौआँबूझिकनेडींगहँकैतछथि।ओहुनालोक गाममे आएल ककरोसारकसंगहँसीमजाककऽलैतेछल।एहनोकतहुभेलैएजेलोकसाइकिलसँदूनोसँबेसीचलिलेत? मुदाएकरफरिछौ हटिकोनाहोअए?ओजमानातऽमोबाइलटेलीफोनकछलैनहिजेतुरत्तेईककरोखबरिकऽदितथिनगाममेजँचैलेलजेसत्तेमे टहलूओहिगामपहुँचलाहकिनहि।

योजनाबनलजेबड़कीपोखरिकचारूकातदूनूगोटेघुमता।सारसाइकिलसँआटहलूपएरे।पोखरिक चारू कात रस्ता साइकिलो चलबै लेल नीके छलैक। जेना कि ओहि समय सब ठाम रहैत छलै, कच्चिए मुदा समतल आ पीटल-पाटल।
जतेकतेजअपनचलिसकथिसेचलथु।यदिटहलूसत्तेमेबड़तेजचलैतछथितऽचक्करलगबैमेकमेसमयलगतनि।ओचक्करलग बैतरहताहजाबतसार

महोदयसाइकिलस

ँएकचक्करपूरानहिकऽलेथि।यदिसारेमहोदयपहिनेएकचक्करलगालेताहतऽओहोताबततकचक्करलगबैतरहता जाबतटहलूएकचक्कर

पूरानहिकऽलेथि

।अन्तमेजेजतेकबेसीचक्करलगौनेरहतसेततेकसौटाकाजीतत।मानेभेलजेएकचक्करकेसमयमेयदिकियोदूचक्करल गालेततऽएक चक्कर बेसी भेलैक ताहि लेल एकसौरुपैयाजीतत।यदिआधाचक्करबेसीलगाओततऽपचासरुपैयाजीतत।एहिसँकमभेलापरदूनूकेँबरोबरिएबूझलजा एत।

गौआँजमाभऽगेलदेखबालेल।सारकबहिनोकँकहलगेलनिहुनकेपक्षमेरहैलेलजेकोनोतरहकबेइमानीकगुंजाइस नहिरहै।खेलाशुरूभेल।

जतेकताकतछलनिततेक

पैडिलमेलगबैतसारमहोदयसाइकिलदौड़ेलनि।मुदाटहलूतऽनिपत्ता।जाबतओएकमोहारटपथिताबतटहलूएक चक्करपूराकऽलेलनि।

साइकिलआपएरेदौड़चलैत

रहल।अन्तमेसारमहोदयपूरेतीनसौटाकाहारिगेलाह।

ओजेहमरागामसँपड़ेलासेफेरघुरिकएकहियोनहिएएला।टहलूदासकएहिगुणकजानकारीगामोमेबहुतोलोककेँ नहिछलैक।

आबतऽहिनकरगुणकबखानसबतरिहोमएलागल।डाकविभागहिनकादौड़हाकनोकरीदेबालेलतैयारभऽगेलआ एहिआशयकेचिट

्ठीसेहोहिनकापठा

देलकनि।मुदाईअस्वीकारकऽदेलखिन।

"उत्तम खेती, मध्यम बान, अधमचाकरी, भीखनिदान"

बलाफकराजेरटनेरहथि।ओकोनोदशामेचाकरीनहिकरताह। नहिए केलनि।

एहनमहानछलाहटहलूदास।

q

5. चिलमसोंट भाइ

मूलनाम : केवलराउत

पिताकनाम : बनारसीराउत

जन्म तिथि : अज्ञात

मृत्यु: करीबचालीससालपहिने।

उपलब्धि : नामगुणकाजछलनिहुनकर।चिलमसोंटनामेपड़लनिजखनहुनकाचिलमसँबीतभरिधधराउठएलग लै।गामैकगजेरीसाहुकअभिन्नमित्र।गजेरी

साहुगाजाबेचथिआचिलमसोंटकीनथिआताहिपरसोंटलगाबथि।सोंटलगबैमेकिछुगोटेआरसंगदैतछलखिनमु दाओसबहमरासंकलनलेल

महत्वपूर्णनहिछथि।

एकबेरगाममेदूटाबबाजीएला।ईदूनूएकनम्बरकेगँजेरी।ओ बरकी पोखरिक पाकरि गाछ तर अपन आसन जमा लेलनि। एकटा गौआँकेँ चेला मुड़लनि, ओहि दिनक बुतातीक जोगार सेहो केलनि आ चिलम लेल गाजाक जोगार सेहो। अपनामे मस्त ई दूनू लगलाह चिलम सोंटए।

किछु गौआँ हिनक चिलमक सोंट देखि रहल छल। अति साधारण रूपें ई सब सोंट लगा रहल छलाह। ओ टिप्पणी कैए देलक-

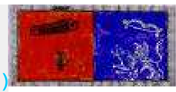
“अहाँ दूनूसँ नीक तऽहमर गौआँ चिलम धुकैत अछि, ओकर नामे पड़ि गेलैक चिलमसोंट भाइ।”

बबाजी सबकेँ लगलनि जे गौआँ सब हिनकर निन्दा कऽरहल छनि। ओ चिलमसोंटकेँ बजबै लेल कहलखिन।

चिलमसोंट बजाओल गेलाह। फोकट के गाजा आ तकर सोंट – ई बात सोचिए कए ओ मुदित भेल छलाह। तैयो अपन गुणकेँ नुकबैत बबाजी दूनूकेँ टिटकारी देलखिन नीकसँ सोंट लगबै लेल। ओ सब पूरा दम लगा कए सोंट खिचलनि तऽएक बेर कने दू-तीन आँगुर धरि धधरा उपर उठलैक। चिलमसोंट विनम्र भावें अपन चिलम सुनगौलनि आ लगला सोंट खीचए। जेना जेना गाल धँसैत गेलनि तेना तेना धधरा उपर उठैत गेलै। अन्तमे पूरे हाथ भरि धधरा उठि गेलै। एहन चमत्कार तऽपहिने कोनो गौआँ नहि देखने छल। बबाजी सब तऽचकित आ डराएल। ओहिमे एक गोटे दोसरकेँ कहलखिन-

“एकरा चेला बना लेब ठीक रहत।”

चिलमसोंटकेँ गाजा चढ़ि गेल छलनि। ओ उनटे ओहि बबाजीकेँ भरि पाँज कऽधेलनि आ बजलाह-



"रौ सार, चिलम सोंटैक लूरि तऽछौके नहि, हमरेपर गुरुआइ करमे? हमरा चेला बनेमे? ढहलेल नहि तन। चल, आइसँ तो दूनू हमर चेला बनि जो आ हमर नोकर जकाँ काज कर। साँझुक पहर हम तोरा दूनूकेँ चिलम सोंटैक लूरि सिखाएल करबौ।"

आब तऽदूनू बबाजीक बोलती बन्द। कहुना अपनाकेँ छोड़ा कए ओ दूनू नाङरि सुटकबैत गामसँ भगलाह।

चिलमसोंट भाइ अपना काजमे अद्वितीय छलाह। इलाकामे करीब दस गामक बीच हुनकासँ हाथ मिलबै बला कियो नहि भेल छल।

q

6. नक्कू पहलमान

मूल नाम: परमेसर यादव

पिताक नाम: शीतल यादव

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: सन उनैस सौ बेरासी साल

उपलब्धि: नक्कू कने नकिआइत छलाह बजबामे तें ई नाम भेलनि। हुनका हनुमानजीक सराप आ आशीर्वाद छलनि जे कोनो कुश्ती खेलामे पहिल दू बेर तोरा हारए पड़तौ। जखन तों दू बेर हारि जेमे तखन तेसर बेर केहनो पहलमानसँ भिरमे, जितबे करमे, से ओ साक्षात भीमे किएक नहि आबि जाथु। बूझि ले हम अपनहि तोरा शरीरमे प्रवेश कऽजेबौ।

ई बात ककरहु नहि बूझल छलैक हुनकर बाबूजीकेँ छोड़ि। साधारण भिड़न्तमे हारि-जीत चलिते रहैत छलैक। लोक एतेक ठेकान नहिए करैत छल जे कोना दू बेर हारलाक बाद नक्कू निश्चिते तेसर बेर जीत जाइते छथि।

एक बेर दरभंगा राजक पोसुआ कैलू पहलमान हमरा गाम दिससँ जाइत छला। हुनका गुमान जे पूरा जिलामे हुनकासँ हाथ भिरबै बला कियो नहि छनि। ई गप ताहि दिनक छी जहिया मधुबनी जिला नहि बनल छलै आ दरभंगे जिलाक सबडिविजन छलै। हमरा गाममे कियो अगत्ती छौंड़ा हुनका टिटकारि देलक जे गामक नक्कू पहलमानसँ एक बेर हाथ भिरा लेथि। पहिने तऽओ अपन प्रतिष्ठा बूझि एकरा अनठबए चाहलाह मुदा गौआँक जिदपर अखाड़ामे उतरि गेला। नक्कू सेहो उतरला आ हनुमानजीकेँ स्मरण केलनि।

खेला शुरु भेल। कैलू आ नक्कू अखाड़ामे चक्कर्घिन्नी कटैत आ एक दोसरापर दाओ बजारैक चेष्टामे लागल। कियो दोसराक देहमे सटि नहि रहल छल। आ कि नक्कू किछु केलनि आ क्षणेमे कैलू चित, नक्कू हुनका छातीपर सवार। लोक अकचकाएले रहि गेल। तालीपर ताली परए लागल। कैलूकेँ किछु बुझाइये नहि रहल छलनि जे की भेलै, कोना भेलै, कोन दाओ लगलै जकर ओ सम्हार नहि कऽसकला।

दूनू पहलमान उठलाह, देह झाड़लनि, हाथ मिलौलनि आ अपन अपन गन्तव्य दिस विदा भेला।

नक्कू जीत गेलाह मुदा हुनका एकर कोनो गुमान नहि छलनि। हुनका बूझल छलनि जे अगिला दू कुश्ती हुनका हारबाक छनि। ओ अपनाकेँ कहियो महान नहि कहलनि, ई हुनकर नम्रता छलनि।

q

7. पण्डितजी

मूल नाम : राधाकृष्ण मिश्र

पिताक नाम: लक्ष्मण मिश्र

जन्म तिथि: उनैस सौ पचास सालक फगुआ दिन।

उपलब्धि: हमरा गामक एकमात्र ब्राह्मण पुरोहित परिवार, पण्डितजी खाली नामेसँ पण्डित छथि। हिसाबें औंठा छापे रहि गेला। भरि गामक जजमनिका सम्हारै लेल भागिनकेँ बजा अनलनि। अपने ओकरा संग खाली नोंत खेबा लेल जाइ छथि।

मुदा पण्डितजी अद्वितीय भैए गेलाह। ई भेल हुनक अद्‌भुत गुणक कारण। ओ महिंसलेट भऽगेला। महींसपर बैसल बाधे बाध बौआइत रहबामे ओ ककरो कान काटि सकैत छथि। बच्चहिंसँ ओ महींसपर जे चढ़ए लगलाह से एखन तक कइए रहल छथि। महींसे पोसब हुनक मुख्य व्यवसाय भेलनि। एकटा ब्राह्मण कुलमे जन्म लइयो कए ओ कोनो यादव परिवारसँ बेसी दूधक व्यापार केलनि आ ओहिना कोनो यादव परिवारसँ बेसी पानि दूधमे मिलबैत रहला। तैयो हिनक दूधक बिक्री कम नहि भेल। महींसक खरीद बिक्री केलनि, ओकर दवाइ दारू सेहो बुझैत छथि आ सब तरहें महींसक विशेषज्ञ रूपें इलाकामे प्रसिद्ध छथि। हिनका प्रसादें कतेक महींस कें प्राण बचलै। ब्लॉक के मवेसी डाकदर सेहो हिनकर ज्ञानक प्रशंसा करैत छनि।

पण्डितजी एकटा आर गुण लेल प्रसिद्ध छथि– आशीर्वाद देबाक हिनक शब्दकोष बिल्कुल अलग अछि। 'जीबू जागू ढनढन पादू' तऽ हिनकर तकिया कलाम अछि मुदा जखन कियो कोनो तरहक छोट पैघ गलती कऽ बैसैत अछि तखन हिनक मुह सँ बहराएल शब्द विश्वक कोनो कोष मे भेटऽ बला नहि। आ सुननिहार केहनो मोट चामक बनल रहओ, कान मूनहि पड़ैत छैक। ओ आशीर्वाद-वर्षा लोकक धैर्यक परीक्षा सेहो लैत छैक। आ जे कने अधीर भेल तकरा तऽ भूलुण्ठित भेनहि कल्याण।

महींसक संग संग ई गायक व्यापार सेहो करैत छथि। गाय दरबज्जापर पोसैत कमे छथि, खाली खरीद बिक्रीक काज हाटपर करैत छथि। मटिकोरबा गामक हाटपर मरदुआरि कैल गाय सस्त दामपर कीनैत छथि, ओकरा दस दिन नीक जकाँ खुआ पिआ कए आ जहिना आइकालि लोक केश रंगैत अछि तहिना नवका तरीकासँ रंग चढ़ा कए कारी गायक रूपमे दुन्ना-तिगुन्ना दाममे बेचि लैत छथि। बेचबा काल ध्यान रखैत छथि जे ग्राहक बेस दूरक इलाकासँ रहए। लग पासक ग्राहककेँ ओ कारी गाय नहि बेचैत छथि। एक दू बेर गौआँकेँ सर सम्बन्धीक

मारफत सुनबामे एलै जे मासे दिनक भीतर गायक रंग बदलए लगलै। मुदा ई शिकाएति सीधे पण्डितजी लग कियो नहि पहुँचेलक। आशीर्वाद-वर्षा मे भिजबाक डर जे रहैत छैक।

एखन तक पण्डितजी बेदाग अपन व्यवसायमे लागल छथि।

q

8. लम्बोदर

मूल नाम: दरिद्र नारायण झा

पिताक नाम: पलटू झा

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: पाँच वर्ष पहिने

उपलब्धि: लम्बोदर नाम गुण पैघ उदर बला छलाह। हमहूँ देखने छिऐनि हुनकर शरीर। कण्ठसँ डाँड़क बीच मात्र एक तिहाइमे छाती आ दू तिहाइमे लम्ब उदर। से कोनो पैघ धोधि फूटल नहि, सपाट। आइ कालि हीरो सब सिक्सपैक चमकबैत रहैत अछि मुदा लम्बोदरकेँ छातीआ पाँजरक सबटा हाड़ लोक सौ मीटर दूरोसँ गनि सकैत छल। हुनका बुझलो नहि छलनि जे ई शारीरिक सौष्ठवक विशेषता छिऐ।

वृत्तिएँ लम्बोदर मरणोपरान्तक संस्कार करबैत छलखिन।आ पोखरिपर भोजन करब हुनक एहि वृत्तिक अंश छल। मुदा एक बेरक खिस्सा जे बूढ़ लोक कहैत छथि से अद्‌भुत छल।

लम्बोदर अपन जजमनिकामे कोनो गाम गेल छलाह। ओतए चूरा-दही भोज छलैक। इन्तजाम तऽठीके छलैक मुदा हिनका सबहिक भोजन बेर किछु कुव्यवस्थाक कारण दही कने कम पड़ि गेलै कारण पोखरि पर सामान हिसाबे सँ पठाओल गेल छलै। लम्बोदर लगलाह अखरा चूरा फाँकए। जाबत घरवारी दहीक व्यवस्था केलनि ताबत ई करीब पाँच सेर चूरा सधा देलखिन। आब हाल ई छल जे जाबत दही आबए ताबत हिनका पातमे चूरा सधि जाए, ई छुच्छे दही सुड़कथि आ तकर बाद फेर अखरा चूरा फाँकथि। ई अपना दूनू कात माटिपर चेन्ह दऽकए आन लोककेँ उठि जेबाक संकेत देलखिन आ अपने खाइते रहलाह। जखन करीब एक बोरा अखरा चूरा आ चारि तौला दही सधा देलनि तखन घरवारी हाथ जोड़ि कए ठाढ़ भऽगेलखिन। तैयो ई ढकार नहिए लेलनि मुदा परिस्थितिकेँ बूझि घरवारीकेँ कहि देलखिन-

"अहाँ पार उतरि गेलहुँ, हम आब तृप्त छी।"

एतबा कहि ओ उठि कए हाथ धोलनि, पान सुपारी लेलनि आ दस किलोमीटर टहलैत टहलैत गाम आबि गेलाह। कियो कखनहु हुनकर पेट उठल कि फूलल नहि देखलक। अगिला दिन लम्बोदर फेर कोनो भोज खेबा लेल तैयार। हिनके भोजन देखि ने कियो फकड़ा बनौने छल –

पाँच पसेरी अखरा चूरा, दही छाँछ भरि जलखै जकरा

की हैत चटने पाभरि जोड़न? ऊँटक मुहमे जीरक फोड़न !

हमरा अपना गाममे हुनका के खुअबितए? मुदा ओ परिस्थितिकेँ बुझैत छलखिन आ गामक भोजमे कहियो छूटल घोड़ा जकाँ व्यवहार नहि केलनि।

हमरा गाममे किएक ककरो बूझल रहतैक जे गिनीज बुकमे हुनकर नाम रेकॉर्डमे लिखबितए। हमसब एहि गौरवसँ चूकि गेलहुँ तें हम नियारल जे अपन संकलनमे हुनकर चर्चा जरूर करब।

q

9. नटवर लाल

मूल नाम: जयन्त कुमार लाल दास

पिताक नाम: शिव मोहन दास

जन्म तिथि: सन उनैस सौ अठतालीस के चौरचन दिन

उपलब्धि: नटवर लालक पिता अल्प वयसमे मरि गेलखिन। माताक एकमात्र सन्तान ई गामक बिगड़ल छौंड़ा सब के संगतिमे फँसि गेलाह। यद्यपि हमरा गाममे बीएक असफलताक बाद सब गार्जियन अपन धियापूताकेँ स्कूल जेबासँ परहेज करबए लागल मुदा जयन्त कुमार लाल दास स्कूल गेला जहिना कि हिनका टोलक किछु आर बच्चा सब करैत छल। कहुना अठमा तक घुसकला तकर बाद हाथ उठा देलनि।

बच्चहिंसँ हिनकामे विशेष लूरि छलनि लोककेँ ठकबाक। पहिने तऽबहुत दिन तक माएकेँ ठकलनि आ मटिकोरबा गामक हाटपर झिल्ली कचरी बतासा लड्डू खाइत रहलाह। तकर बाद अनकोपर अपन मंत्रक प्रयोग केलनि। लम्बोदरक पितियौतकेँ जजमनिकामे भेटल रंगल धोती सब ई कामति टोलक लोककेँ किना दैत छलखिन, बेसी दामपर जे तोरा रंगक खर्चा बचि गेलहु, आ धोती बलाकेँ कहि दैत छलखिन जे रंगल धोती कियो नहि कीनत, ओ तऽधन्य कहू जे हम एक गोटेकेँ फुसला कए राजी केलहुँ। धोती बेचनिहार कहियो नहि बुझलनि जे के किनलक आ कीननिहार कहियो नहि बुझलनि जे ककर धोती ई किनलक। एही तरहेँ पुरना किताब विद्यार्थीसँ लऽ कए ओकरा नवका भावें बेचथि। एहि व्यवसायमे हिनका नीक आमदनी होमए लागल। अपने ई लील टिनोपाल देल नीक धोती गंजी पहिरए लगलाह।

एहि बीच किशोर वयसमे प्रवेश करिते हिनक आदति सब बिगड़ए लागल। ई सुनसान गाछी बिरछी आ पटुआ कुसियारक खेतमे शिकार करए लगलाह। हाथमे पाइ रहितहि छलनि से शिकार भेटिए जाइ छलनि। सब गाममे सब तरहक लोक होइ छै आ हमरो गाम एहिसँ बचल नहिए छल। मुदा जखन एक गोटेकेँ किछु भऽगेलै आ ओकर बाप हिनका तंग करए लागल बियाह कऽलेबा लेल तखन ई पहिल बेर डरा कए गामसँ भागि गेला।

छओ मास बाद घुरला तऽमाएकेँ सब बात बुझबामे आबि गेल छलनि। ओ बेचारी नीक रस्ता धेलनि आ हिनकर बियाह करा देलखिन। नटवर लाल पत्नीमे रमि गेला। साले साल पुत्र रत्नक बरखा होमए लागल। तेरह साल पुरैत पुरैत हिनका लग छोट पैघ तेरहटा बच्चा छल– एकछाहा पुल्लिंग। घरमे जगह तऽनहिए छलनि, बुतातोपर आफत आबि गेलनि। ताबत माताराम उपरक रस्ता धेलनि आ ई लगला पुस्तैनी जायदादकेँ बेचि गुजर चलबए।

एहि बीच हिनकर भाग्य जागल जखन मात्रिकक एक गोटे बैंक मनेजर बनि कए राजनगर एलखिन। हिनकर दुर्दशा देखि ओहि बेचाराकेँ दया लागि गेलै आ हिनका बैंकमे चपरासीक नोकरी भेटि गेलनि। आब की छल? राति दिन हिनका आङ्गनसँ माछक सुगन्ध उठए लागल।

बैंकमे पहुचि नटवर लालकेँ अपन असली रूप देखेबाक अवसर भेटि गेलनि। हमरा गामसँ राजनगर दस किलोमीटर। ताबत ने रोड नीक भेल छलै आ ने टेम्पूक चलन भेल छलै। ई लोककेँ फुसिया फुसिया बैंकमे खाता खोलबौलनि आ तकर बाद ओकरा सबकेँ लघु बचत योजनासँ जोरि नित्य साँझमे एकटकही दुटकही, जकरा जेहन जुड़ै, से जमा करए लगला। पासबुक बनि गेलै मुदा सबटा पासबुक ई अपनहि संग राखथि। लोककेँ विश्वासमे लेने। जरूरति पड़लापर सौ पचास उधार सेहो दऽदैत छलखिन ई कहि जे बैंकसँ लोन भेटलहु। लोक लोन सधबए लागल आ अगिला किस्त उठबए लागल।

एहि बीच ई गामक संचित टाका निजी काजमे लगाबए लगला। पासबुकपर किछु चढ़ै नहि। लोककेँ किछु बुझबामे अबै नहि। प्रायः पाँच साल तक ई खेला चलैत रहल। कियो यदि कहियो पासबुकक चर्चो करए तऽई बहन्ना बना देथि जे बैंकमे राखल छै। दश किलोमीटर बिना कोनो साधन के चलि कए जाएब कठिन छलै आ लोक अनठा दैत छल।

एक बेर ककरो बेटीक बियाह लेल पाँच हजार टाका निकासी करबाक जरूरति भेलै। ओकरा हिसाबें जतेक टाका ओ जमा करैत गेल छल ओहिसँ पाँच हजार जरूरे उठाओल जा सकैत छलै। नटवर लाल किछु दिन टालमटोर करैत रहला। मुदा बेटी बला कते दिन मानितए? अन्तमे हारि कए ओ एक दिन पहुँचि गेल राजनगर बैंक।

तकर बाद जे हेबाक छलैक सएह भेलै। सबटा भेद खुजि गेलै आ बेटी बलाक खातामे मात्र अढ़ाइ सौ टाका भेटलै। गामक प्रायः सब के टाका डुबलै। सब अपन कपार पीट कए रहि गेल।

नटवर लालपर विभागीय कारवाइ भेलनि, ओ जेल गेला। एहि बीच तेरह पुत्र सेहो बढ़ैत गेलखिन आ सौंसे भारतमे छिड़िया गेलखिन। हुनका लोकनिक लेल बापक पापक बीच गाममे रहब कठिन भऽगेलनि। पत्नी सेहो अस्वस्थ रहए लगलखिन आ करीब चारि सालक बाद स्वर्ग गेलीह। पेरोलपर आबि नटवर लाल पत्नीक संस्कार केलनि।

करीब सात साल जेलमे सरलाक बाद ओ गाम घुरला। मुदा हुनका मुखरापर कोनो ग्लानिक भाव कहियो नहि एलनि। एखन गामे रहैत छथि आ बेटा सबहक पठाओल टाकापर गुजर करैत छथि।

कोशिश तऽओ एखनहु करैत छथि लोककेँ ठकबाक, पुरान आदति जे छनि, मुदा आब लोक हिनका चीन्हि गेल अछि से हिनका नहि सुतरै छनि।

q

10. झलकी देवी

मूल नाम: अज्ञात, सब दिन लोक ओकरा एही नामसँ जनैत छैक।

पिताक नाम : रतन सदाए

जन्म तिथि: ठीकसँ नहि बूझल मुदा हमर समवयस्के अछि झलकी।

उपलब्धि: झलकी अपन माए-बापक एकमात्र सन्तान। बच्चेसँ कने गौरवाह। कहियो कोनो समवयस्क छौंड़ाकेँ गुदानलक नहि। बियाह भेलाक बाद एतहि रहि गेल। पति घर-जमाए बनि गेलखिन।

झलकी सुन्नरि अछि एखनहु। जखन ओ यौवनक देहरिपर डेग देलक तखन गाममे बहुतोकेँ मोन डोललै। कसल देह, सुगठित बाँहि आ यौवनक अन्य सब लक्षणसँ युक्त जखन ओ अल्हर भावें बाध दिस जाइत छल तखन हमरा उमेरक छौंड़ा सब ओकर पछोड़ धऽलैत छल। ओकरा लेल धन सन। एक बेर चौरमे रहमतबा कने नजदीक आबि गेलै, झलकी पाछू घूमि ओकरा तेहन चाट मारलकै जे ओ ठामहि खसि पड़ल, दाँती लागि गेलै। तकर बादसँ हमरो सबकेँ बूझल भऽगेल आ झलकी अपनहुँ आश्वस्त भेल जे कियो ओकरा देहमे भिरबाक साहस नहिए करतै।

हम जखन दिल्ली चलि गेलहुँ तखनुक घटना थिक। झलकी एकसरिये छल घरमे। एहि बातक फाएदा उठा मटिकोरबा गामक भूतपूर्व मुखियाक बेटा अपन एकटा उद्दंड संगीक संग ओकरा घरमे प्रवेश केलक बलात्कारक उद्येश्यसँ। मुदा चल गेल यमलोक। झलकी कचिया हाँसूसँ दूनूकेँ दू टुकड़ी कऽदेलकै आ घरेमे गारि देलकै। ओतबे नहि, शोणित लगले कपड़ामे रातिएमे हाँसू हाथमे लेनहि सौंसे टोलमे चिकरि कए कहि देलकै जे कियो यदि गवाही देतै तऽओकरो यमलोक जाए पड़तैक। तकर बाद पोखरिमे नहा लेलक, हाँसू धोलक आ आबि कए निश्चिन्त भऽकए सूति रहल।

ओकर एहि धमकीसँ कानूनक काज तऽरुकितै नहि। अगिला दिन थाना पुलिस ओकरा ओहि ठाम पहुँचि गेलै। झलकी घरसँ बहराएल तऽगरदनिमे सातटा कचिया हाँसूक माला पहिरने। एहन रौद्र रूप तऽपुलिसो कहियो नहि देखने छल। दूनू पुलिस दरोगाक पाछू सुटकि गेल जेना मरखाहा साँढ़केँ अबैत देखि छोट बच्चा माएक पाछू सुटकि जाइत अछि।

ककरो हिम्मते नहि होइ ओकरा लग जेतै, आ कि घरमे किछु सर्च करतै। दरोगा ओकरा पुछलकै-

"तों रातिमे ककरो खून केलही?"

झलकी निडर भावें उत्तर देलक-

"एखन तऽदुइएटा केँ कटलइयैए, जँ छौंड़ा सब आबहु नहि सीखत तऽदू सैइयोकेँ काटि देबै एही कचिया हाँसूसँ। जकरा जे करबाक छैक से कऽलिअए। हम ने कतहु जेबै आ ने ककरो अपना देहमे हाथ लगबए देबइ।"

दरोगा मुश्किलमे पड़ि गेल। ओ दूटा सिपाही लेने आएल छल जे खूनीकेँ हथकड़ी लगा कए घिचने आओत थाना, जेना ओ सब दिनसँ करैत आएल छल। एहन काली माइसँ भेँट हेतै तकर सपनोमे कोनो अन्दाज नहि छलै। एकेटा उपाय छलै जे महिला पुलिस बजाओल जाए नहि तऽई मौगी की कऽबैसत से नहि जानि।

दरोगा हेडक्वार्टरकेँ फोन लगेलक आ ओतहि बैसल रहल, झलकी चल गेल आङ्गन अपन काज करै लेल। ककरो हिम्मत नहि भेलै ओकरा आङ्गन ढुकै के। करीब तीन घंटाक बाद मधुबनीसँ जीपपर सवार चारिटा

ejournal 'विदेह' २६० म अंक १५ अक्टूबर २०१८ (वर्ष ११ मास १३० अंक २६०) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

महिला पुलिस एलै। ओ सब जखन झलकीकेँ हथकड़ी लगा पकड़ै लेल गेलै, झलकी ओकरो सबकेँ डाँटि देलकै आ हाथ तेना ने झटकि देलकै जे एकटा महिला पुलिस खसिए पड़ल। ओ बेपरवाहि ओहि चारूसँ पुछलकै-

"तों सब मौगी छें ने। कह जे यदि रातिमे कियो तोहर इज्जत लूटै लेल तोरा लग पहुँचतौ तऽकी करबही? अपन बचाव करमे, ओकरा पाठ पढ़ेमे कि उतान भऽकए पड़ि रहमे?"

सब सकदम। ककरो कोनो जबाबे नहि फुरा रहल छलै झलकीक प्रश्नक। जबाब फुरेबो करतै तऽकोन भाषामे झलकीकेँ उत्तर देतै? बड़ी कालक नाटक के बाद झलकी अपनहि मोने थाना विदा भेल। कियो ओकरा देहमे नहिए भिड़लै। आगू आगू झलकी, ओहिना सातो कचिया हाँसूक हँसुली पहिरने, केश खूजल, उड़ियाइत, आ पाछू दरोगा सिपाही आ किछु गौआँ सब। जिनकर बेटा कटलनि तिनका लोक एखन तक कतहु नहि देखलक।

झलकी हाजतमे बन्द भेल, फेर मधुबनी पठा देल गेल। मोकदमा चललै मुदा सरकारी ओकील कोनो तरहक साक्ष्य जुटेबामे असमर्थ रहलाह। पूरा गाम झलकीक समर्थनमे जुटि गेल। छओ मासक बाद झलकी बरी भेल आ गाम घुरि आएल।

पछिला पंचायत चुनावमे झलकी निर्विरोध सरपंच चूनल गेल। आब ओ ब्लॉकपर आ इलाकामे झलकी देवी नामे प्रसिद्धि पाबि रहल अछि। एखन गामक पंचैतीपर ओकर रौद्र रूपक प्रभाव झलकैत रहैत छैक। फल ई जे अपराधो कम भेलैए।

हम सब लागि गेल छी प्रयास मे जे अगिला विधान सभा चुनाव मे झलकी कें एमएलए बना पटना पठाबी । हमरा सबहक विधानसभा क्षेत्र अनुसूचित जाति लेल आरक्षित छैके । ब्लॉक पर ओकर लोकप्रियता देखैत ई लक्ष्य असम्भव नहि बुझाइत अछि । ओ अपनहुँ एहि दिस ध्यान देलक अछि आ किछु पढ़ब लीखब शुरू केलक अछि।

गामक लोकक कहब छैक जे झलकी साधारण महिला नहि, कालीक अवतार अछि। जखन ई मरत तखन एकरा सारापर काली मंदिर बनाओल जाएत।

q

11. राजा-रानी

हमरा गाममे एकटा एलाह राजा। आ हमरे गामक पुत्री भऽगेलखिन हुनकर रानी। एतए हिनक मूल नाम, जन्म तिथि आदिसँ हमरा सबकें सरोकार नहि अछि, मात्र हिनक अद्भुत चरित्र लीख रहल छी जे हिनका दूनूकेँ वास्तविक अर्थमे हमरा गामक पूज्य राजा-रानीक रूपमे स्थापित कऽदेलक आ इलाकाक अन्य गाम सबमे सेहो हिनकर ख्याति बहुत पसरल।

राजा तऽजहिना नाम तहिना हुनक विशाल शरीर आ उदात्त चरित्र। हुनकर चरित्रक प्रशंसा सुनि बहुतो कुमारि कन्या अपन भाग्य अजमौलनि मुदा राजाकेँ तऽएकेटा पसिन्न पड़लनि। भऽगेल राजा आ रानीमे प्रेम। से एहन प्रेम जे लोककेँ विश्वासे नहि होइ। बूढ़ पुरान सब बाजए लगलाह-

“हौ, ई कोनो साधारण प्रेमी-युगल नहि छथि, जरूर कोनो देव अंश छथि। गामक ई उत्तरदायित्व जे हिनका दूनूक रक्षा करए।”

बस, तहिना भेल। हिनकर आवास बनाओल गेल, सब तरहक सुख सुविधाक इन्तजाम कएल गेल। पार बाँटि गौआँ सब हिनकर भोजन पठबए लागल। जहिया जकर पार होइ ओ अपनाकेँ धन्य बूझए जे आइ ओकरे अन्न-पानिसँराजा-रानी तृप्त भेलाह।

राजा-रानी एक दोसराक लेल प्राण दैत। रानी तऽअपनाकेँ अति भाग्यशाली बूझथि जे सब किछु होइतो हुनकर कोनो सौतिन नहि छलनि। बहुतो लोक प्रयास केलक जे एको नजरि राजा अन्य कन्यापर दऽदेथि मुदा बेकार। राजा तऽरानीक प्रति समर्पित छलाह। आब हुनका एहन आत्मतृप्ति भेलनि जे ककरो अनका दिस तकबो नहि करथि।

जेना कि प्रकृतिक नियम छिऐक, राजा-रानीक प्रेमक फल भेल हुनकर तीन पुत्र आ एक पुत्री। पुत्र लोकनि जेना जेना पैघ होइत गेलाह, अपन अपन व्यवसाय सम्हारलनि। बचि गेलखिन पुत्री। ओहो तीव्र गतिए बढ़ए लगलखिन। रानीकेँ चिन्ता भेलनि एकर बियाह कोना करौतीह। कहियो बियाह नहि करौलनि। अपने तऽतेहन राजकुमारक प्रेममे फँसलीह जे बियाहक प्रश्ने नहि उठलैक। मुदा बेटी?

रानीकेँ डर छलनि जे जवान बेटीकेँ देखि कतहु राजाक मोन डोलि ने जानि। मुदा राजा अपनहि अपनाकेँ सम्हारने रहलाह।

ऋतुमासक समय पर बेटीकेँ पुरुषक जरूरति भेलैक। ओ एम्हर-आम्हर तकलक। कतए जाएत? ओकरा माए-बापक प्रेमक खिस्सा तऽबूझल नहि छलैक। ओ लागल ओही पुरुषक चारू कात चक्कर काटए जे सबसँ लगमे ओकरा भेटलैक। ओ बिसरि गेल जे ओ पुरुष ओकर जन्मदाता छलैक।

पुरुष अर्थात हमरा गामक राजा अपनाकेँ बहुत सम्हारलनि मुदा भावीकेँ के रोकि सकलए? ओ नवयुवतीक चालिमे फँसिए गेलाह। ओकरा शरीरसँ उठैत मादक गन्ध हुनका मदमत्त कऽदेलक। हुनक संयमक बान्ह टुटि गेलनि। नवयुवतीक काम-पिपासा तृप्त भेलैक। ई दृश्य रानीसँ नुकाएल नहि रहलैक। रानी बजली किछु नहि मुदा बहुत दुखी जरूर भेलीह।

ई घटना हमरा सबकेँ देखल अछि जे ओही राति रानी मरि गेलीह। राजा अपनाकेँ दोषी मानए लगलाह। एहि नवयुवतीकेँ अपन दोसर रानीक रूपमे ओ स्वीकार नहिए कऽसकलाह आ एक मासक भीतरे शोकसँ डूबल ओहो शरीर त्याग केलनि।

राजा-रानीक एहि अमर प्रेमक खिस्सा इलाकाक आनो गाममे लोक सबकेँ बूझल छैक।

q

12. अन्तमे

एखनुक समय जकाँ यदि पहिने रियलिटी शो के प्रचार भेल रहितै आ हमरा गामक लोककेँ किछु बूझल रहितैक तऽ खुरचन ठाकुर आचिलमसोंट भाइ जरूरे स्टेजपर सिनेमा स्टारक सामने अपन करतब देखा कए इनाम लूटने रहितथि। तहिना जँ ओलिम्पिक आ अन्य खेल महोत्सव सबमे भाग लेबाक अवसर भेटल रहितै आ कि मैराथनक प्रचार भेल रहितैक तऽके टहलू दासकेँ हरा सकैत छल? आइ मिल्खा सिंहक बदला टहलू दासक

नाम लोक जपितए। हमरा गामक नामे ओलिम्पिक मेडल रहितए। लम्बोदरक भोजनक खोराक जरूरे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्डमे लिखा गेल रहितै। बिग बॉस सन शो लेल बीए अति उपयुक्त व्यक्ति होइतथि, सब प्रतिभागीमे झगड़ा लगा अपने जीत जइतथि। यदि कियो ढंगसँ पैरवी केने रहितै तऽहुनका सरकारक कृषि पण्डित पुरस्कार सेहो भेटि जइतनि। पण्डितजीक आशीर्वचनक शब्दकोष यदि छपि गेल रहितनि तऽ जरूरे अपने सब हमरा गामक एहि विभूतिसँ परिचित भऽ गेल रहितहुँ। छपेबाक प्रयासमे लागल छी। ईहो अद्वितीये होएत से हमरा विश्वास अछि।

फूलन देवीक ओतेक नाम भेलै मुदा हमरा बुझने साहसमे ओ झलकीक पासङ्ग नहिए होइतए। झलकी एखन अछिए आ ओकरा बहुत नाम कमेबाक छैक। हमहूँ एहिमे ओकर मदतिमे लागि गेल छी। जे समय बीत गेल से समय तऽघुराओल जेतै नहि, वर्तमानकेँ तऽसुधारी। जहिया झलकी एमएलए बनि जाएत तहिया हमर खकपतिया गामक नाम अपनहि देश मे सबतरि प्रचारित भऽ जेतै।

आब अपने सब बुझिए गेल हेबै जे हमरा गामक एहि रत्न सभक फोटो किएक नहि देल गेल। दिवंगत लोक सबकेँ फोटो अबितै कतए सँ? विभिन्न कारणसँ बीए, नटवर लाल आ पण्डितजी फोटो नहि खिचौलनि। झलकीक फोटो तऽ छैक मुदा एखन ओ फोटो छपबए नहि चाहैत अछि। ओकर लक्ष्य पैघ छै। फूलन देवीपर सिनेमा बनलै तऽ झलकी पर किएक नहि? जखन झलकी एमएलए बनि जाएत तखन अपनहि ओ ई काज कऽ लेत। ओकरो पूर्ण इच्छा छैक जे गामक नाम उजागर होअए। एकर तैयारी लेल ओकर जतेक प्रोग्राम होइत छैक तकर भीडियो बना कए हम सब रखने जाइ छी। हमरा आशा अछि जे कहियो ओकर उपयोग झलकीपर सिनेमा बनौनिहार करबे करता।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र- दूटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

दूटा आलेख

ई समय ककरो नहि

हम श्यामा भगवतीक दर्शनक हेतु गेल रही। महाराजा रामेश्वरक चितापर बनल ओहि भव्य मन्दिरक अद्भुत सौन्दर्य अछि। टुह-टुह सिंदुरिआ रंगमे रंगल मन्दिरक दहिना कात पोखरि अछि जकर जमकल पानिमे हाथ देलासँ स्वच्छता बढ़क बदला घटि सकैत अछि। मोन पड़ि गेल जे जखन सी.एम. कालेज दरभंगामे विद्यार्थी रही तँ एठि ठाम आबी, भगवतीक दर्शनक बाद पोखरिक घाटपर बैसल करी। ओहि समय पोखरिक हालक बेहतर छल।

श्यामा मन्दिरमे माँकालीक भव्य मूर्ति ओहिना चमकैत, दमकैत छल। भक्तगणक श्रद्धा ओहिना वा कि पहिनहुँसँ बेसी बुझाइत छल। मन्दिरमे कै ठाम भक्तसभ पूजा पाठमे तल्लीन छलाह।

"मिथिलेश रमेशस्य चितायं सुप्रतिष्ठित। श्यामा रमेश्वरीपातु रमेश्वर कुलोद्रवान्।"

मन्दिरक मुख्य द्वारपर लिखल उपरोक्त श्लोक कतेक बेर पढ़ैत रहलहुँ।

श्यामा मन्दिरक बाहर आ अंदरमे प्रसादक विक्रय होइत अछि। अन्दरेमे प्रसाद किनलहुँ। भगबतीकेँ प्रसाद चढ़ओलाक बाद कनीकाल ओतहि बैसि गेलहुँ। कनी कालक बाद बाहर भेलापर चिंता भेल जे प्रसादकेँ बानरसँ कोना बचाबी कारण एकबेर एहिना प्रसाद चढ़ाकए निकलल रही कि एकटा बूढ़बा बानर कहाँसँ दौरल आएल आ प्रसाद लुटि लेलक। हम अबाक देखैत रहि गेल रही। अस्तु, प्रसादकेँ अंगाक अंदर कहुना कए नुकौलहुँ। बाहर आगू बढ़लापर चारूकात कोनो-ने-कोनो महराजक चितापर बनल मन्दिर सभकेँ देखैत मोनमे दरभंगा महराजक अकूत संपत्ति आ ओकर अपव्ययपर ध्यान हठात चलि जाएब कोनो भारी बात नहि। जँ एहि धनक उपयोग एतेक रास मन्दिरक बजाए जनताक कल्याणमे खर्च कएल जाइत तँ लोक समृद्ध होइत, आ महाराजो यशस्वी होइतथि। मुदा जे हेबाक छल से भेल। महराजक राज चलि गेल। बड़का-बड़का देबार सभ ढहि गेल। राजक हाताक अन्दरक जमीन सभ बिका गेल। आब ओहिठाम होटल अछि, दोकान अछि, सामान्य व्यक्ति सभक घर अछि। ने वो रामा ने वो खटोला। महाराजाक गौरब-गरिमाक बखान करए हेतु ढहैत, ढनमनाइत राज परिसरक दुर्दशा अन्तहीन भए गेल अछि।

श्यामा मन्दिरक आस-पास बनल आओर मन्दिर सभ कतेको बेर गेल छी। तें रिक्सा पकड़ि सोझे शुभंकरपुर बिदा भए गेल रही। मोनमे होइत छल जे जँ महराज वा हुनकर सलाहकारक जन कल्याणमे कनिको रूचि रहैत तँ आइ मिथिलाक लोकक भविष्ये किछु आओर होइत।

काली मन्दिरसँ आगा बढ़लापर मिथिला विश्वविद्यालयक विशालकाय परिसर आएल। दरभंगा महराजक ओहि महल सभकेँ सरकार अधिग्रहण कए ओहिमे विश्वविद्याल स्थापित कए देलक। महराजक राज-पाट नाम सभ चलि गेल। एतबो नहि भेल जे वोहि विश्वविद्यालयक नाममे महराजक नाम रहैत। मुदा भावी प्रवल। समय बलबान होइत अछि।

"जो उग्या सो अन्तवे, फूल्या सो कुमलाही

जो चिनिया सो ढही पड़े, जो आया सो जाही।"

कबीरदासक उपरोक्त कथन ध्यानमे आबि रहल छल। संसारक नियम अछि जेकर उदय भेल तकर अस्त होएत। समय रहिते जे किछु कए गेल वएह रहि जाइत अछि।

विश्वविद्यालयक दहिनाकात बदरंग भेल इन्द्रपूजा स्थली आ तकर सामने बड़ीटा खाली मैदान- बिना कोनो देखरेखकें। आश्चर्यक बात थिक जे एहि ऐतिहासिक, सांसकृतिक धरोहरक रखरखावक उचित व्यवस्था किएक नहि भए रहल अछि?

कनीक आगा बढ़ब तँ बड़का-बड़का देबार जे महाराजा सभ बना गेलाह, ओहिमे यत्र-तत्रगाछ सभ जनमि रहल अछि। देबारक बीचमे बनल हनुमानजीक मूर्तिकैं लोक सभ पूजा करैत देखाइत। आश्चर्यक बात ई थिक जे बिना कोनो देखरेखकैं एतेक पुरान देबार सभ अखनो ठाढ़ कोनो अछि?

श्यामा मन्दिरसँ शुभंकरपुर लौटबाक क्रममे महराजी पूलसँ पहिने जाम लागि गेल छल। रिक्सा आगू नहि बढ़ि सकैत छल। संगहि साइकल, स्कूटर, ठेला, पैदलयात्री, कार आ पैदलयात्री तेना ने लदमलद भए गेलाह जे कनी काल लेल भेलैक जे आब एतहिसँ आपस होमए पड़त। पैरे जेबाक सेहो जगह नहि बाँचल छल। चुप-चाप रिक्सा पर बैसल रहि जेबाक अतिरिक्त किछु विकल्प नहि छल।

जाबत ओहि जामकैँ हटि जेबाक प्रतीक्षा करैत रही ताबतेमे किछु गोटे "राम नाम सत्य है, सबका यही गत्त है"बजैत एकटा मृतककैँ कान्हपर उठौने ओतहि आबि कए अटकि गेलाह। हुनका पाछा- पाछा कतेको लोक चलि रहल छलाह जे मृतकक अन्तिम संस्कारक हेतु वएह सभ बजैत चलि रहल छलाह।

कहुना कए कनीक जाम खुजलै। उसास पबिते अन्तिम यात्रापर निकलल वोहि मृतक आ तकरा कान्ह देनिहार सभकैँ लोक सभ आगा जाए देलक। महराजी पूल पार करैत वो सभ आगा बढ़ि गेलाह। हम ताधरि रिक्सेपर थामहि प्रतीक्षा करैत रही जे आब लोक आगा बढ़त तँ ताब।

कनीके कालक बाद फेर वएह ध्वनि। "राम नाम सत्य है, सबका यही गत्त है...।"

किछु गोटे मृतककैँ कान्ह देने छलाह। आगा आगा गोरहाक सुनगैत आगि, कोहा लेने कर्त्ता आ तकर पाछा पाछा मृतकक महायात्राक गवाह सभ राम नामक महिमा गबैत आगा बढ़ि नहि सकबाक कारणें ओहिठाम ठमकि गेल रहथि। हम रिक्सापर रही आ ठीक हमरा सामानान्तरमे पीताम्बरीसँ आवृत, गेनाक फूलसँ लादल वोहि मृतकक निष्प्राण शरीर छल। ओहि दिवंगत आत्माकैँ मोने-मोन प्रणाम कएल। किछु-किछु सोचाए लागल। मोन कनी एमहर ओमहर भेल। ताबे जाम कनी ढील भेलैक। ओ सभ राम नाम सत्य है, सबका यही गत्त है, बजैत आगा बढ़ि गेल। आ हम रिक्सासँ महराजी पुलपर चढ़ि गेलहुँ।

कनीके आगा पुलपर रिक्सा चढ़ले छल कि फेर वएह ध्वनि। राम नाम सत्त है, सबका यही गत्त है। किछु गोटे एकटा मृतकक शवयात्राक संगे राम नामक महिमा गबैत आगा बढ़ि रहल छलाह। मृतकक फूलक मालासँ लादल चारि गोटेक कान्हापर आगा बढ़ि गेल। अगल-बगल कतेको लोक मूकदर्शक छलाह जेना कोनो खास बात नहि भेल हो। तरकारी वाली तरकारी बेचि रहल छल। माछक दोकानपर ओहिना माछक खण्ड बिका रहल छल। कोन पर चाहक दोकानपर लोक चाह पीबि रहल छलाह। कतहु कोनो प्रकारक आलाप, प्रलाप नहि। रिक्साबला गप्पक क्रममे कहलक जे एहिठाम तँ नित्य एहने दृष्य रहैत अछि। आगा बनल श्मशान घाटमे ओकर दाह संस्कार होइत अछि।

संभवत: मृत व्यक्ति सभ वृद्ध छलाह जाहिसँ वातावरणमे, संगे कटिहारी गेनिहार लोकोमे कोनो भाव विह्लता देखबामे नहि आएल।

ओहि दिन साँझमे ओही सड़क बाटे फेर जेबाक अवसर भेटल। हम सभ बरिआती जा रहल छलहुँ। महराजीपुलसँ पहिने जाम लागि गेल छल। लोक ठसाठस भरल छल। हमरा आगा पाछा दोसर बिआहक बरिआती छल। लोककैँ आगू पाछू घसकबाक रस्ता नहि भेटि रहल छल। सजल- धजल बरक कार ठामहि छल कि आगूसँ अबैत कोनो दोसर गाड़ी पों-पों'क आबाज करए लागल। के आगा बढ़त, के पाछा जाएत, कोनो ठेकान नहि। आधा घण्टा धरि ई स्थिति बनल रहल। फेर केना-ने-केना रस्ता खुजल। लोकसभ आगा बढ़ल। हम अपन कारमे आगा बढ़लहुँ। शेष बरिआती, बर पाछा छुटि गेल छल, तथापि ओहिठाम ठाढ़ भाए प्रतीक्षा करब उचित नहि छल। एक्के दिनमे एकहिठामसँ तरह तरहक दृष्य गुजरि गेल छल। राम नाम सत्य है'सँ लए शहनाइक धूनपर नचैत गबैत जाममे थकमकाएल बरियातीक धमाचौकरी देखएमे आबि रहल छल। मुदा ओही स्थानक चारूकात बैसल, ठाढ़ लोक सभ हेतु धनि सन। ने हर्षो न च विष्मय :।

असलमे कोनो घटना विशेष अपने आपमे ताधरि कोनो माने नहि रखैत अछि जाधरि हम ओहिसँ कोनो- ने-कोनो कारणसँ जुड़ि जाइत छी। तात्पर्य ई जे कोन वस्तु हमरा कष्ट देत आ ककरासँ सुख होएत ओ पूर्णत: ओहि वस्तु विशेष वा घटना विशेषक प्रति हमर रूखिपर नर्भर करैत अछि। अस्तु, एकहि दिनमे श्यामा मन्दिरसँ शुभंकरपुरक मध्य कतेको तरहक दृष्य देखबामे आएल। कतेको पुरान घटना सभ स्मृति पटलपर फेरसँ उगि आएल। ई समय ककरो नहि अछि। दरभंगा महराजक नहि अछि, आम आदमीक नहि अछि। मोन हो कठिआरी जाउ, मोन हो बरियाती भए जाउ। मुदा समय ठाढ़ नहि रहत। भोर साँझमे बदलि जाएत। छोड़ि जाएत मोनक कोनो कनतोसमे एकटा आओर निसान जे दिन भरिक घटनाक क्रम देने गेल। काल्हि फेर प्र:काल ओहिना सूर्य उगताह, दिन भरि किछु ने किछु होइत रहत, साँझ होएत। सभटा होएत, मुदा हमर अहाँक जिनगीक

एकटा आओर दिन कम भए जाएत। समयकेँ की हेतै? ओ तँ एहिना आगू चलैत जाएत। गुजरि जाएब हम ओहिना जेना कतेको गुजरि गेलाह आ लोक राम नाम सत्य है..., कहैत महराजीपूलक एहि पारसँ ओहि पार भए जाएत।q

२/११/२०१७

घमंड

जीवनमे बहुत रास अनुभव होइत रहैत अछि। नित्य किछु ने किछु एहन घटना घटित होइत अछि जे हमर आँखि खोलि सकैत अछि मुदा से होइत कहाँ अछि? हमसभ नियतिवश चलिते जा रहल छी, सोचि नहि पबैत छी जे हम एना किएक कए रहल छी? ई बात प्रायः सभ जनैत अछि, जे जन्मल अछि से मरत। मृत्यु अवश्यंभावी अछि, तथापि हमसभ सोचैत रहैत छी जे हम तँ अहिना रहब। युधिष्ठिर द्वारा यक्षकेँ देल गेल एहने प्रश्नक उत्तर एखनो ओहिना सार्थक अछि जहिना ताहि समयमे रहल होएत। आखिर एना कोना होइत अछि जे हमसद्यः घटित होइत घटनाक प्रति अनजान बनल रहि जाइत छी आओर एकदिनसभ किछु एतहि छोड़ि कए सभदिनक हेतु एहि दुनियाँसँ आँखि मुनि लैत छी।

आखिर किछु तँ छैक जे मनुक्ख मात्रकेँ निरंतर ओझरौने रहैत अछि। हम निरंतर अपन आस्तित्वक रक्षाक हेतु संघर्षशील रहैत छी। हम जे कहैत छी से लोक मानए, हमर महत्व बुझए एवम् हमर श्रेष्ठत्वकेँ स्वीकार करए। एहिसभक पाछा हमर घमंड प्रमुखतासँ मुखरित होइत रहैत अछि। जीवनसँ लए कए मृत्यु पर्यंत हमरा लोकनिक व्यवहारकैँपाछा ई तत्व विद्यमान रहैत अछि। हम जाने-अनजाने दोसरसँ अपनाकेँ श्रेष्ठ साबित करबाक फेरमे पड़ि अपन जीवनकेँ तँ अशांत केनहि रहैत छी, संगहि दोसरोकेँ तंग कए दैत छी कारण एहन स्वार्थमूलक सोचसँ व्यक्तिक अहंमे टकराव उतपन्न होइत अछि आओर लोक अपनाकेँ पैघ देखेबाक प्रयासमे दोसरकेँ छोट साबित करए लगैत अछि। परिणाम होइत अछि, व्यर्थक अनवरैत चलैत अन्तरद्वंद।

मान-सम्मान, प्रतिष्ठाक लिप्सा मनुक्ख मात्रमे ततेक बलबती रहैत अछि जे ओ कोनो हालातमे ताहि हेतु किछु करए हेतु तैयार रहैत अछि। लोक हमरा बुझए, मान्यता दिअए, हम समाजमे देखगर लोकमे गनल जाइ, एहि समस्त भावनाक पाछा जँ देखल जाए तँ ओकर घमंडे काज करैत रहैत अछि। एहन घटना नित्य-प्रति देखएमे अबैत अछि जे कतेको गोटे बेबजह अनकर मामलामे टांग अरबैत रहताह। जेना कि ओ चैनसँ रहिए नहि सकैत छथि। एहन आदमी हेतु इहो कहल जा सकैत अछि जे ओ

अपन चालिसँ लाचार छथि। कोनो, ककरो बात उठल कि ओ अपनाकेँ ओहि बीचमे ठाढ़ कए देताह। तरह-तरहक ब्यर्थ उदाहरण दैत रहताह जाहिसँ ई कहुना सिद्ध होउक जे हुनके टा सभबातकेँ बुझए अबैत छनि किंबा ओ जे कहैत छथि सैह ब्रह्मसत्य थिक। एहन आदमीकेँ अहाँ की कहबैक? "एकोहं द्वितीयो नास्ति" -एहि तरहक सोच कोना कारगर भए सकैत अछि?

हमर गाममे एकबेर श्राद्ध भोज होइत रहए। एकटा प्रतिष्ठित व्यक्तिक देहावसान भए गेल छल। अपना जीवन कालमे ओ खूब संपत्ति अर्जित कएलाह। बहुत संघर्ष कए आगा बढ़लाह।तखन तँ मृत्यु सभक होइत अछि से हुनको भए गेलनि। अपने जीवनमे लीखसँ लाख करबाक पुरषार्थ हुनकामे भगवान देलखिन। मृत्युक बाद लोकसभक आग्रह जे जबार होउक,एतेक संपत्ति अरजि कए गेल छथि। मुदा से तँ नहि भेलैक, गामे लए कए भोज हेबाक निश्चय भेलैक। संयोगसँ हमहूँ हालेमे सेवा निवृत भेल रही आ गामे पर रही। भोज खेबाक हेतु गेलहुँ तँ देखैत छी एकटा हमर ग्रामीण, जे भरि जिनगी बाहर कमाइत रहलाह, घरक दरबाजाकेँ गछारि कए ठार भेल छथि, गरजि रहल छथि, बारंबार चेता रहल छथि जे एक-एक कए लोक अन्दर जाथि। हुनकर चिकरब-भोकरब ततेक प्रखर चल जे अनेरे ककरो ध्यान हुनका पर पड़ि जाइत छल। एवम् प्रकारेण हुनका अपन महत्वक प्रदर्शन करबाक आ ताहिसँ संतुष्टिबोध प्राप्त करबाक पर्याप्त अवसर भेटलनि। जँ ओ नहि चिकरितथि, किंवा घरक केबार धए ठाढ़ नहि रहितथि, लोक अपने अबैत जाइत, तैओ भोज भए जैतैक, प्रायः बेसी नीकसँ होइतैक कारण ओ तँ अनेरे केबारकेँ पकड़ि चिकरि कए महौलकेँ गड़बड़ा रहल छलाह, मुदा हुनका तँ देखेबाक रहनि जे ओ एतेक महत्वपूर्ण व्यक्ति छथि, सबके कस्तन कए रहल छथि, हुनके आज्ञासँ लोक भोज खाए अन्दर जाएत नहि तँ ओतए बबाल भए जाएत। बिचारि कए देखबैक तँ एकरा व्यक्ति विशेषक घमंडक अतिरिक्त किछु आओर नहि कहल जा सकैत अछि।

की पैघ, की छोट सभ क्यो कतहुँ ने कतहुँ, कहुना ने कहुना घमंडक चपेटमे पड़िए जाइत छथि। शास्त्र-पुराणसभमे सेहो कतेको एहन प्रसंगक वर्णन अछि जाहिमे एक सँ एक संत महात्मा, देवी-देवता एकरप्रकोपमे पड़ि गेलाह। महाभारतमे एहि सम्बन्धमे बहुत मार्मिक घटनाक वर्णन अछि। एकबेर हनुमान बूढ़ बानरक रूपमे भीमके रस्तामे बैसि गेलाह। भीम हुनका अपन नाङरि हटेबाक हेतु कहलखिनकारण हुनका जल्दी जेबाक रहनि मुदा ओ बानर टस सँ मस नहि भेल, उल्टे व्यंग करैत कहलकनि जे जखन अहाँ एतेक बलवान थिकहुँ तँ नान्हिटा हमर नाङरिकेँ उठाए किएक नहि आगू बढ़ि जाइत छी? भीमकेँ ई बात बहुत अनर्गल बुझेलनि आओर ओ ओहि बूढ़ बानरक नाङरिकेँ हटबएमे लागि गेलाह, सभ प्रयत्न कए थाकि गेलाह मुदा नाङरि ठामहि रहल। हारि कए भीम कहलखिन जे अहाँ साधारण बानर नहि छी, के छी से सत-सत बाजू। तखन हनुमानजी अपन भेद खोलि कहलखिन जे हम आहीँक भाए हनुमान छी। भीम बहुत लज्जित भेलाह आ हुनकासँ घट्टीमानलथि। एहि तरहेँ हनुमानजी हुनकर घमंडकेँ चकना चूर केलाह। कहक माने जे घमंड एकटा एहन व्याधि थिक जे अनेरे हमरा लोकनिक आँखिपर पट्टी लगा दैत अछि आ हम सत्यकेँ देखितहुँ ओकरासँ फराक रहि जाइत छी।

घमंड किंवा अहं केर टकरावसँ कतेकोलोकनिक पारिवारिक जीवान नर्क भए जाइत अछि। हम ककरासँ कम? हमरा ई कहलक, ओ कहलक, हम ओकर बात किएक सहबैक, एहने-एहने छोट-छोट बातकेँ पकड़ि कए लोक धए लैत छथि जाहिसँ आपसी प्रेम ओ विश्वास नष्ट भए जाइत अछि, बात ततेक बढ़ि जाइत अछि जे सम्बन्ध विच्छेद धरि भए जाइत अछि। जौं एहन समयमे क्यो बुझनिक होथि, एक डेग पाछा भए जाथि, हारि मानि लेथि तँ बहुत रास परिवार खंडित हेबासँ बँचि सकैत अछि, बहुत रास धीया-पुताकेँ पारिवारिक आश्रय बनल रहि जाएत एवम् परिवारमे समन्वय, शान्ति बनल रहत। मुदा ई बात बुझब आ बुझिओ कए व्यवहारमे आनब कै बेर बहुत मोसकिल भए जाइत अछि कारण क्यो अपन अहंकेँ छोड़बाक हेतु तैयारे नहि होइत अछि। परिणाम सामने अछि। नान्हिटा टेल्हकेँ माए-बापक बीच कलहक दृष्य देखए पड़ैत छैक। बच्चासभ घरक वातावरणसँ तंग भए घरसँ भागल-भागल रहए लगैत अछि आ गलत संगतिमे पड़ि कए कै बेर नशेड़ी भए जाइत अछि। सोचए बला बात अछि जे माए-बापक व्यर्थक अहंक कारण एहन वच्चाक भविष्यक संगे कतेक अन्याय होइत अछि?

एहन नहि अछि जे कमे पढ़ल-लिखल लोक घमंडक प्रदर्शन करैत छथि अपितु एक सँ एक विद्वान ओ पैघ-पैघ लोकमे एकर व्यापक प्रभाव देखएमे अबैत अछि। जे जतेक पैघ तकर घमंड ततेक विनासकारी भए सकैत अछि। इराकक राष्ट्रपति सद्दाम

ओ अमेरिकाक राष्ट्रपति बुशके बीच जे एतेक भारी युद्ध भेल तकर पाछु की छल? महज अहंक टकराव? जहिना गाम-घरमे मूर्ख लड़ैत अछि तहिना ओ सभ आपसमे ताधरि लड़ैत रहलाहजाधरि सद्दामक विनाश एहि हदधरि नहि भए गेल जे ओ अपन प्राणोसँ हाथ धोलक।

बादमे पता चलल जे ओकरा लगमे कोनो रासायनिक हथियार नहि छल जकरा आधार बनाए इराकपर अमेरिका आक्रमण केलक। कार्यालयमे अधिकारी लोकनि कए बेर अहं पर चोट पड़लापर अधीनस्त कर्मचारीकैं तबाह करबाक कोनो ब्योंत बाम नहि जाए दैत छथि। बदली कएदेब.काजसँ हटा देब आ ताहुसभसँ संतोष नहि भेलनि तँ नौकरीसँ मुअत्तल कए देब सामान्य बात थिक। जे ततेक पैघ अधिकारी तिनक अहंसँ ततेक बेसी सावधान रहब जरुरी थिक। काज करी वा नहि करी मुदा हुनकर सलामीमे कोनो कमी नहि हेबाक चाही। जँ से भेल तँ अहाँक भगवाने मालिक।

असलमे घमंडी व्यक्ति भीतरसँ असंतुष्ट होइत छथि। हुनका लगैत रहैत छनि जेना सौंसे दुनियाँ हुनका पाछा पड़ल अछि, जेना क्यो हुनका संगे न्याय नहि कए रहल अछि, एहि तरहक फिजुल बातसभ हुनकर मोनमे बैसल रहैत अछि जाहि कारणसभ हुनकर व्यवहार स्वयं असंतुलित भए जाइत अछि किंवा लोकसँ बहुत बेसीक अपेक्षा रखैत अछि। परिणामई होइत अछि जे ओ बात-बात पर लोक सभसँ मरए-कटए हेतु तैयार रहैत छथि। सोचबाक बात थिक जे एहन लोककैं शान्ति कतएसँ भेटि सकैत अछि आ "अशांतस्य कुतो सुखम्?"

एहि तरहक अशांत प्रवृतिक लोकमे घमंड भरल रहैत अछि। जाहिर अछि जे एहम लोक आस-पासकैं लोककैं तरह-तरहसँ कष्ट पहुँचबैत छथि। अपने तँ दुख कटिते छथि दोसरोक जीवनकैं नर्क कए दैत छथि।

घमंड कतेको कारणसँ भए सकैत अछि आ कए बेर तँ बिना कोनो औचित्यकैंस्वभाववश सेहो लोक घमंडी भए जाइत अछि। एहन उदाहरण अहाँकैं कतेकोठाम देखबामे आएत। हमरा गाममे एकटा भिखमंगा कहिओ काल अबैत छलाह। यद्यपि ओ भिख चाहैत छलाह मुदा हुनक बाजबाक चहटिसँ क्यो नहि कहैत जे ओ भिखमंगा थिकाह। असलमे ओ पहिने बहुत धनीक छलाह मुदा कालक्रमे गरीब भए गेलाह। जमीन-जायदाद बिका गेलनि। कहबी छैक जे जौर जड़ि गेल मुदा एंठन अछिए। सैह गप्प छलैक।

महाभारतमे खिस्सा अछि जे द्रोपदीकैं अपन सौंदर्यपर बहत घमंड रहनि आओर गाहे-बगाहे ओ एहि कारणसँ कतेको शत्रु बना लेलीह। परिणामसभकैं बुझल अछि। मामला द्रोपदी चीर हरणधरि पहुँचि गेल। की-की तमाशा ने भेल। भयानक युद्ध भेल आओर समस्त परिवार विनाशकैं सीमानधरि पहुँचि गेल। कहक माने जे घमंड चाहे जिनका होनि, आओर जाहि कोनो कारणसँ होनि, एकर परिणामखराबे होइत अछि।

घमंड एकटा मानसिक रोग थिक जे मनुक्खकैं सत्यक दर्शन करएसँ ओहिना रोकि दैत अछि जेना सीसीमे कोनो वस्तुकैं पैसबासँ ठेपी। घमंडी व्यक्ति एक हिसाबे आन्हर होइत अछि जेमदांध भए सही विचारकैं कदापि नहि सुनैत छथि। एहने मानसिकता रावणकैं रहैक जाहि कारणसँ घरहंज भए गेलैक, सभ किछु नष्ट भए गेलैक। मेघनाद सन बीर ओ तेजस्वी संतानसँ हाथ धोअए पड़लैक, कुंभकरण सन भातृभक्त भाए मारल गेलैक, विभीषण घर छोड़ि भागि गेलाह। सभ ओकरा बुझबैत रहलैक, एहि हद धरि जे मंदोदरीक कथन धरिकैं ओ सौतिआ डाह कहि अपमानित केलक। परिणाम सभकैं बुझल अछि। अस्तु, घमंड सर्वथा त्याज्य थिक।

जँ बिचारिकए देखल जाए तँ एहि दुनियाँमे कोनो तरहैँ पार पाएब आसान नहि अछि। पढ़ले देखू तँ एक सँ एक विद्वान छथि। आइन्सटाइन, सेक्सपीयर, कालीदास, राधाकृष्नन,कतेको नाम अछि, ककर नाम लेब, ककर छोड़ब, पन्नाक पन्ना भरि जाएत। धनिकमे गिनती करब तँ गनिते रहि जाएब। एहिना पद, सौंदर्य, वुद्धि सभ तरहैँ एकसँ एक लोक एहि संसारमे भेलाह आओर छथिहो। तखनो जँ क्यो कथुक घमंड करैत छथि तँ की करबै? हँसबे करबै ने? अस्तु, विनम्र होएब सबसँ नीक ऐश्वर्य अछि जे सही कही तँ भाग्यवाने लगमे होइत अछि।

बरसहि जलद भूमि निअराए, नबहि यथा बुध विद्या पाए।

विनम्रता विद्वताक परिचायक थिक। जरुरी अछि जे सहीज्ञान प्राप्त कए स्वभावमे विनम्रताकेँ आनल जाए आओर घमंडसँ मुक्ति पाओल जाए, जाहिसँ जीवन सुखमय होएत।q

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

दूटा लघुकथा

यमलोकक दल-बदलू

ओहि दिन यमलोकमे जबरदस्त गहमा गहमी छल। भेल ई जे मृत्यु लोकसँ हालमे आएल बहुत रास लोक ओतए पहुँचलाक बाद जनतंत्र बहालीक मांग पर अड़ि गेल रहए। नित्य प्रतिक हंगामासँ तंग भए यमराज यमलोकक नव संबिधानक हेतु अध्यादेश जारी केलाह। तकर बाद मृत्यु लोकक तर्जपर चुनावक कार्यवाही प्राम्भ भेल।

यम प्रतिनिधि बनब कतेक कठिन बात थीक से भुक्तभोगिये कहि सकैत छथि। यद्यपि सत्तारूढ़ दलसँ लए कए विपक्षी धरिक सभ व्यक्ति अपन-अपन सेवाक प्रति समर्पणक भावनाक चर्च करैत-करैत अपसियाँत रहैत छथि मुदा असलमे जे वो करैत छथि से जगजाहिर अछि। इएह सभ गप्प हम ओहि दिन सोचैत रही कि यमलोकक अखबारमे प्रतिनिधि सभा चुनावक समाचार निकललैक।

समाचार देखिते एक बेर हमरा जेना करेन्ट जकाँ लागि गेल। कोना ने लागए। यमलोकमे जहिआसँ चुनावक सिलसिला अएलैक तहिआसँ कतेक घर बसि गेल। कतेको बेरोजगार सभ रातिये-राति धनिक भए गेल। इएह कारण थिक जे आब लोक जहाँ यमलोकमे चुनावक हल्ला सुनैत अछि कि टिकट लेबक हेतु एड़ी-चोटीक पसेना एक कए दैत अछि।

यमलोकक प्रतिनिधि सभाक चुनाव भेला एक मास भेल छलैक। कोनो दलक स्पष्ट बहुमत नहि आएल छलैक। प्रधान बनए लेल बेस घमरथन भए रहल छलैक। यद्यपि दल सभहक संख्या तँ ९ टा छल मुदा मूलत: तीनटा दलक सदस्य बेसी छलाह- पिसाँच दल,भूतनाथ दल ओ प्रेत दल।

नव निर्वाचित सदस्यमे सँ कमसँ कम पचासटा सदस्य एहन छलाहजे कमसँ कम पाँच-सात बेर दल बदलि चूकल छलाह। यम प्रतिनिधि सभामे कोनो दलकेँ स्पष्ट बहुमत नहि भेटलासँ हिनका सभहक लेल स्वर्णिम अवसर छलनि। नवका यम प्रतिनिधि सभ अपन-अपन भविष्य सुधारबाक हेतु बेस उत्सुक छलाह।

प्रमुख महोदयकेँ से बेस परेशानी छलनि। हुनका तीनू दलक नेता बेरा-बेरीसँ अपन-अपन समर्थनमे आधासँ अधिक सदस्यक सूची प्रस्तुत केने छलाह। तीनू सूचीमे पचासटा सिद्धहस्त दल-बदलू आ पचीसटा नवका यम प्रतिनिधि केर नाम सामिल छल। प्रमुख महोदय भूतपूर्व

इमानदार छलाह। मुदा जनताक हिसाब देखि कए रंग बदलि लेने छलाह। ओहो मामला नीकसँ बुझि रहल छलखिन। आखिर इमानदारीसँ होइते की छैक? नून रोटी चलि सकैत अछि। घरवाली कहथिन जे कहि नहि कोन करम केलहुँ जे अहाँक संग भेल।

जहिआसँ प्रमुख महोदय अपन चालि-ढालि बदललाह तहिआसँ दुनियाँ दोसर भए गेलनि। जेम्हरे देखू तेम्हरे लक्ष्मीक दर्शन। ई मौका हुनका हेतु स्वर्णिम अवसर छल। जनसेवाक व्रतधारी लोकनिक प्रथम अवतार भए रहल छल। यमराज तीनू नेतासँ गप्प-सप्प करबाक हेतु तिथि निर्धारित कए सूचित कए देलखिन आ अपने भूमिगत भए गेलाह।

प्रेत दलक नेता रातिक बारह बजे यमराजक पत्नीसँ भैंट करए गेलाह। दोसर-तेसर ओहिठाम क्यो नहि छल। सूटकेशसँ नोटक सभ गड्डी निकालि धराधर टेबुलपर राखि देलखिन।

"ई थिक पुतोहुक मुँह देखाइ।"

फेर गप्प-सप्प आगा बढ़ल कहए लगलखिन-

"राजनीतिक हाल-चाल तँ अहाँकेँ बूझले अछि। पिसाँच दल ओ भूतनाथ दलक नेता सभ हमर पक्षक यम प्रतिनिधि सभकेँ फोरि रहल छथि। अहाँ यमराजकेँ हमर सिफारिश कए हमरा न्याय दिआउ।"

यमराजक धर्म पत्नीजीकेँ तीनू लोक सुझि रहल छलनि, मुदा तैयो बजलीह-

"अवश्य कहबनि। अहाँसँ बेसी योग्य, कर्मठ ओ इमानदार के भए सकैत अछि। प्रधानक पद तँ अहींकेँ भेटबाक चाही।"

प्रेत नेता सहर्ष ओहिठामसँ बिदा भेलाह। मुदा ओ समस्याक अन्त नहि छल। आखिर मास दिनक बादे सही, यम प्रतिनिधि सभाक सामना तँ करैक छलनि। तँ कमसँ कम पचासटा आओर यम यम प्रतिनिधि के अपनामे मिलायब जरूरी छलनि।

राता-राती ओ अपन विश्वासपात्र प्रेत नेताक सचिवक ओहिठाम पहुँचलाह। ओमहर पिसाँच दल ओ भूतनाथ दलक लोक सभ सेहो बैसल नहि छलाह।

राति भरि हुड़दंग होइत रहल। असलमे बीस-पच्चीसटा यम प्रतिनिधि कै गोटेसँ टाका लए लेने छलाह। तीनू नेता सोचथि जे ओ सभ हमरा संगे छथि मुदा असलमे वो सभ ककरो संगे नहि रहथि। ओ सभ चुनावमे खर्च भेल अपन पूँजी ऊपर करबाक हेतु अपसियाँत छलाह। मुदा यमराज सेहो आब घवरायल छलाह आ यम प्रतिनिधि लोकनिकेँ साफ कहलखिन-

"जँ अहाँ लोकनि स्पष्ट स्थिति नहि उत्पन्न करब तँ हम यमलोक प्रतिनिधि सभाकेँ भंग करबा देब।"

ई बात सुनि नवका यम प्रतिनिधि सभहक मनमे हड़बड़ी मचि गेल। ओ सभ गोटे प्रेत दलकेँ अपन समर्थन देबाक निर्णय प्रमुख महोदयकेँ अवगत करा देलखिन।

प्रात:काल प्रेत दलक नेता मंगनूकेँ प्रधान पदक हेतु सपथ कराओल गेल।

प्रात:काल सपथ ग्रहण समारोह प्रारम्भ भेल। मनोनीत प्रधानजी अपन जेबीमे सँ एकटा चिट निकालि कए अपन पी.ए.केँ देलखिन। पी.ए. साहेब ओहि कागजकेँ प्रमुखक आप्त सचिवकेँ दए देलखिन।

ओमहर यम प्रतिनिधि लोकनि मंत्री पद प्राप्तिक संभावनासँ अपसियाँत छलाह। किछुए कालमे घोषणा प्रारम्भ भेल। नव मंत्रीमण्डलमे तीस गोट कैबीनेट,बीसटा राज्यमंत्री ओ बीसटा उपमंत्रीक नामक घोषणा कएल गेल। एवम्-प्रकारेण यम प्रतिनिधि सभा क एक तिहाइ सदस्य मंत्री बनि रहल छलाह। शेष सदस्यमे सँ सत्तापक्षक समर्थक यम प्रतिनिधिकेँ कोनो-ने-कोने पद अवश्य देबाक स्पष्ट आभास भेटि गेल छलनि। प्रमुख निकेतन खचाखच भरल छल। सपथ ग्रहण समाप्त होमएपर छल कि सत्तापक्षक एकटा यम प्रतिनिधि गरजि उठला-

"मंत्री पदक हेतु चयनमे पक्षपात कएल गेल अछि!आदि-आदि...।" प्रधानजी मुड़ी उठेलाह आ इसारासँ किछु कहलखिन।

प्रधान विक्षुब्ध यम प्रतिनिधि सभक गुप्त बैसार कए रहल छलाह। रात्रिमे बारह बजे बैसार शुरू भेल से प्रात: छह बजेमे सम्पन्न भेल। बैसारमे पचासटा यम प्रतिनिधि छलाह जे कहैत गेलाह जे जौं अहाँ अपन बात नहि राखब तँ हमहूँ सभ अपन बात बदलबाक हेतु मजबूर भए जाएब।

हारि कए प्रधानजी ओहिमे सँ पन्द्रह गोटेकेँ विभिन्न कैबिनेट मंत्रीक दर्जा संगे अपन-अपन जिलाक प्रशासनिक मुखिया सेहो बनाओल गेल। सभा विसर्जित भेल।

ओमहर पिसाँच दल आ भूतनाथ दलक नेता प्रेत दलक नेताकेँ प्रधान पदक सपथ केर विरोधमे संपूर्ण यमलोकमे हड़ताल कए देलन्हि। यमलोकमे कानून/व्यवस्थाक गम्भीर समस्या उत्पन्न भए गेल। असलमे दूनू नेताकेँ प्रधान पद छुटि जयबाक आक्रोश तँ छलनिहे। सभसँ बेसी कष्टक गप्प छल जे हुनका लोकनिकेँ गम्भीर आर्थिक क्षतिसँ सामना करए पड़ल छलनि। यमलोकक पचासो यम प्रतिनिधि तीनू नेतासँ यथेष्ट पाइ टानि लेने छलाह। प्रधानकेँ अपन कुर्सी बचायब पराभव भए रहल छलनि। प्रमुखक खिलाफ दूनू विरोधी दल यमलोक भरिमे गम्भीर

हड़ताल कए देने छलैक। स्थिति सम्हरने नहि सम्हरि रहल छलैक। अन्ततोगत्वा प्रधानजी विरोधी दलक नेता सभसँ गोपनीय बैसार करबाक निर्णय केलनि।

दोसर दिन विरोधी नेतासभ एक-एक कए प्रधानजीसँ फराक-फराक भेँट करए लगलाह। पाँचटा छोट-मोट नेताकेँ शान्त केलनि। मुदा पिसाँच दल ओ भूतनाथ दलक नेता किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छलाह।

अन्ततोगत्वा प्रधानजी पिसाँच दलक नेताकेँ विपक्षक नेता बनएबाक घोषणा केलनि। हुनको कैबिनेट मंत्रीक दर्जा देल गेल। संगहि भूतनाथ दलक नेताकेँ यम प्रतिनिधि सभा क उप-सभापति बनएबाक निर्णय कएल गेल। दूनू नेताकेँ पाँच-पाँच कड़ोर टाका अपन-अपन जिलाक बिकासक नामपर खर्च करबाक अधिकार देल गेल।

एवम्-प्रकारेण मंत्री मण्डलक कृयाकलाप प्रारम्भ भेल। प्रमुख महोदय सहित यम प्रतिनिधि लोकनिके हरियरी आबि गेल। यमलोकमे यम प्रतिनिधि सभा क अधिवेशन प्रारम्भ भेल। कतेको नव गोटे एहि बेरक अधिवेशनमे देखबामे आबि रहल छल। सदस्य सभकेँ सपथ दिआवोल गेल आ तकर बाद प्रमुख महोदयक भाषण भेल। यमलोकक अगिला बर्खक बजट केर प्रस्ताव प्रस्तुत कएल गेल। एतबा कार्यक्रम भेल छल कि विपक्षी नेता सभ वर्तमानमंत्री मण्डलमे अपन अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत केलनि। यम प्रतिनिधि सभामे जबरदस्त हंगामा होमए लागल। हंगामा नियंत्रणसँ बाहर भए गेल आ अध्यक्षकेँ यम प्रतिनिधि सभाक कार्यवाही स्थगित कए देबए पड़ल।

ओमहर विपक्षक नेता अपन चेला-चाटीक संगे यम सभा अध्यक्षक निर्णायक विरूद्ध यम प्रतिनिधि सभासँ वहिर्गमन कए देल।

यमलोकक राजनीतिक स्थिति कहुना ठहरिये ने रहल छल। प्रधानजी परेशान छलाह। प्रतिपक्षक नेता सभ यमलोकमे हड़तालक आह्वान कए देने छलाह। मुदा प्रधानजी कोनो कीमतपर कुर्सी छोड़बाक हेतु तैयार नहि छलाह। दोसर दिन यम प्रतिनिधि सभा क सत्र फेर प्रारम्भ भेल आ सत्ता पक्ष ओ प्रतिपक्षक नेता एवम् सदस्य लोकनि हंगामा करए पर अड़ल छलाह। प्रधानजी जतबोकेँ मंत्री बना सकलाह ततबो लोक गड़बड़ी नहि करताह तकर कोनो ठेकान नहि छल। शेष लोकनिक कहब मोसकिल।

ओहि दिन सेहो यम प्रतिनिधि सभा क बैसार स्थगित भए गेल। एवम्-प्रकारेण प्रधानजी पाँच दिन काटि लेलाह। ताधरि अनेको उद्योगसँ मंत्रीमण्डलक गठनमे जे आर्थिक दबाब पड़लनिसे आपस भए गेल छलनि। विपक्षक सदस्य सभ यमराजकेँ विज्ञापन-पर-विज्ञापन दैत छलाह जे यम प्रतिनिधि सभा क अधिवेशन शीघ्र बजाओल जाए। अन्ततोगत्वा यमराज प्रधानजीकेँ बजा कए साफ कहलखिन जे अहाँ सात दिनक भीतर प्रतिनिधि सभामे अपन बहुमत सिद्ध करू अन्यथा अहाँक कुर्सी चलि जाएत।

प्रधानजी अपसियाँत छलाह। नवका यम प्रतिनिधि-क गुटक कोनो भरोस नहि छलनि। मुदा झख मारि कए यम प्रतिनिधि सभामे विश्वास प्रस्ताव रखलाह। निर्णय भेल जे काल्हि एहिपर मतदान होएत। विपक्षक सदस्य सभ हर्षसँ थपड़ी पीटए लगलाह।

राति भरि क्यो यम प्रतिनिधि सुतल नहि। प्रात:काल दस बजे यम प्रतिनिधि सभा क बैसार प्रारम्भ भेल। यम सभा अध्यक्ष महोदय आशनपर विराजमान भेलाह। मत विभाजनक घन्टी बाजल। गुप्त मतदानक व्यवस्था छल। आधासँ अधिक सदस्य प्रधानक विरोधमे मतदान कए देलाह। यम सभा अध्यक्ष एहि निर्णयक घोषणा कए देल। प्रधान दल बदलक गम्भीर शिकार भए गेल छलाह। मुदा ई सभ कोना भेल से नहि कहल जा सकैत अछि।

प्रधानजी अपन त्याग पत्र यमराजकेँ दए देलखिन। मास दिनक भीतर एक बेर फेर नव मंत्रीमण्डलक गठनक तैयारी जोर-सोरसँ प्रारम्भ भेल। मुदा आब यम प्रतिनिधि सभ सेहो चितिंत छलाह। प्रतिनिधि सभा भंग होयबाक समाचार जोर-सोरसँ चारूकात पसरि गेल छल। यमराज सेहो सख्त रूखि अपनौने छलाह। तैँ हेतु सभक मत भए गेल छलैक जे एकटा ठोस मंत्रीमण्डल बनाओल जाए।

भूतनाथ ओ पिसाँच दलक नेता आपसमे बन्द कोठरीमे बैसार केलाह। तय ई भेल जे पिसाँच दलक नेता प्रधान बनताह। मंत्रीमण्डलमे दूटा उपप्रधान हेताह। एकटा उपप्रधान भूतनाथ दलक हेताह आ दोसर नव यम प्रतिनिधि गुटक नेता...। येन-केन प्रकारेण नव मंत्रीमण्डलक गठन भेल। यम प्रतिनिधि लोकनि आश्वस्त भेलाह जे जन सेवाक आब नीक अवसर हुनका सभहक हाथसँ नहि सरकतनि। यम प्रतिनिधि सभामे एहि मंत्री मण्डलकेँ विश्वास सेहो प्राप्त भए गेलैक। किछु दिन दोबारा यमलोकमे जनतंत्र बहाल भेल।

¦

नर्कक संसद

"सुनैत जाइ जाउ सभासद सभ। आजुक कार्रवाही प्रारम्भ हेबासँ पूर्व सभाक रपट पढ़ल जाएत। तदुपरान्त नव सदस्यक उद्घोषणा होएत आ फेर आन-आन कार्यवाही। नवगठित सदनक अध्यक्षताक भार नर्कक वरिष्ठतम सदस्य मनमोहन कैँ देल जाइत अछि।"

ई ध्वनि होइत अछि। जनता दिसिसँ आवाज आएल-

"अध्यक्षजी अपन परिचय देथि।"

मुदा ताबते संसदक सचिव उठलाह-

"बेस तँ सुनि लिअ। ई अत्यन्त निष्ठावान, नर्कक वयोवृद्ध आ वरिष्ठतम सहयोगी थिकाह। हिनका मर्त्यलोकमे फाँसीक सजाए भेटल छलनि। आ ओतए ई सिद्धहस्त खूनी छलाह। इलाका भरिमे हिनक यश पसरल छल। ओना, हिनकर खाता सभ दिन लाले रहलनि अछि, मुदा एतय अएलाक बादो वो कतेको कीर्तिमान स्थापित करैत रहलाह जाहिसँ यमराजक विशेष आज्ञासँ नर्क लोकमे रहबाक अवधि बढ़ैत रहलनि। हिनक दक्षताक सभसँ पैघ प्रमाण तँ इएह थिक जे एहू अवस्थामे नर्क लोकक सभटा सामान भयादोहन कए देल आ ककरो एकर भनकी तक नहि लगलैक। सौभाग्यवश कही वा जे कही, वो सभ सामान तस्करीक छलैक आ मृत्युलोकमे क्यो प्राणी अपन पूर्वजक प्रोन्नतिक हेतु परमात्माकैँ घूस स्वरूप गाया जा कए दान केने छल। चूँकी ई सभ सामन तस्करीक छलैक, तँ एकरा नर्क लोकसँ गुजरए पड़लैक। वो पारगमनमे छलाह कि नर्क लोकक चुंगीक सिपाहीकैँ मेन्डेक्सक गोली खुआ निशामे बुत्त कए मनमोहनजी सभटा सामन ब्लैक कए देल। मुदा धर्मराजक खुपिया विभाग बड़ चौकस अछि आ मनमोहनक एहि सुकृतिक पुरस्कार भेटलनि। पाँच बर्ख अतिरिक्त नर्क बाससँ।"

"बाह-बाह..! एकदम सही आदमीकैँ अध्यक्ष बनाओल गेल।"

"जय हो !जय हो!"

आबाज आएल चारूकातसँ।

ई निश्चय नर्कक गरिमा बढ़ओताह। थपड़ीक गड़गड़ाहटक बीचमे अध्यक्ष महोदय आसन ग्रहण कए उद्घोषणा कएल-

"मान्यवर नर्कवासी लोकनि, अहाँ सभ जे हमर सम्मान कएल अछि से युगानुकूल अछि। कलियुगमे पापक पुरस्कार धड़ाकसँ भेट जाइत छैक। तस्करी करू कोठा पीटू, घूस लिय, इन्जीनीयर जमाए करू। त्याग, तपस्या ओ चरित्रक महत्वक जमाना चल गेलैक। आब तँ लूटि लाउ, कुटि खाउ। एहि बातमे अहाँ सभ गोटे पारंगत थिकहुँ। ओना, मृत्युलोकक नियम सभ किछु आओर थिक। ओतए कानूनक राज थिक, मुदा नामे के। से जँ सत्ते रहैत तँ एहिठाम नर्कमे

कतेको भूतपूर्व महामहिम नहि पड़ल रहितथि। अहाँ लोकनिक सामने जे मंचपर छथि से मृत्युलोकमे बेस सम्मानित जन नेता रहि चूकल छथि। जय-जयकार होइत छलनि हिनकर। मुदा काजक हिसाबे नर्कमे तृतिय श्रेणी भेटल छनि। हुनका नर्कक गेटक रखबारी करबाक भाड़ भेटलनि। हमर कहब जे जहन मृत्युलोकमे सभ किछु दनादन चलिए रहल छैक, तँ नर्क लोक कथि लेल पाछा रहए। एही बातकेँ ध्यानमे राखि कए हम नर्क लोकमे पुन: भयादोहन कएल आ एकर परिणामो अनुकूले भेल।"

चारू दिससँ थपड़ी पड़ए लागल। तदुपरान्त सचिव महोदय पूर्व सभाक कार्यवाही सदनक संपुष्टिक लेल प्रस्तुत करए लगलाह-

"मान्यवर, पूर्व सभाक प्रमुख-प्रमुख कार्यवाही प्रस्तुत अछि-१. नर्कक बढ़ैत जनसंख्या वृद्धिकेँ देखैत एहिठाम यथाशीघ्र परिवार नियोजन पखवारा मनायल जाए। वस्तुत: मर्त्यलोकमे अपराधक संख्याक भारी वृद्धिक कारणेँ नर्कक संतुलन गड़बड़ायल अछि आ एहिसँ नर्कक वरिष्ठ वासी लोकनिकेँ नाना प्रकारक भयंकर कष्टक सामना करए पड़ि रहल छनि। अस्तु, ई प्रस्ताव पारित भेल जे सामान्य कोटिक पापीकेँ नर्कसँ फराक एकर सीमानसँ बाहरे उपनगरी बनाओल जाए।"

(हर्ष ध्वनिक बीचमे लोक प्रस्तावक सहमतिमे थपड़ी पीटैत छथि।)

"नर्कक चाहरदिवारी छोट अछि जाहि कारणसँ स्वर्गलोकसँ कतेको लोककेँ असानीसँ एहिमे फना देल जाइत अछि। हमरा लोकनि एहि तरहक प्रकृयाक घोर विरोध कए रहल छी। संगहि ई प्रस्ताव पारित कएल जाइत अछि जे नर्कसँ ओतबे संख्यामे लोककेँ स्वर्ग जेबाक प्रावधान कएल जाए।"

आवाज होइत अछि-

"हमरा लोकनि स्वर्ग हरगिज नहि जाएब। हमरा सभकेँ नर्के नीक लगैत अछि। एहिठाम पाकिटमारीक खूब गुंजाइश छैक। स्वर्गमे तँ ककरो पाकिटे नहि छैक। ई प्रस्ताव मंजूर नहि अछि।"

सचिव महोदय एकाएक प्रस्ताव सभ पढ़ैत गेलाह आ उपस्थित नर्कवासीगण बेरा-बेरी थपड़ी पीटैत गेलाह। एतबहिमे नर्कक घन्टा सभ घनघनाय लागल। पता लगलैक जे नर्कमे एकटा महापापीक प्रवेश भेल अछि। ओकरा यमदूत नाना प्रकारक यातना दए रहल छलैक। मर्त्यलोकमे ओ गम्भीर अपराधी छल। मुदा ओकरा लेल धनि-सन। नर्कलोकमे एहन यातनाक मध्यो वो कनखी मारैत हँसैत आगू बढ़ैत सभहक अभिनन्दन करैत चलि रहल छल। ताबतिमे नर्कवासीक किछु उचक्का ओकरा गोलिओलक आ ओकरा जेबीमे ओकर संतति द्वारा दान कएल गेल जे किछु कैंचा आ वस्तु छलैक से छीनि लेलक। ओ कनीके आगा बढ़ल की ओकरा अपन कका नजरिमे

अएलैक। ओकरा बड़ आश्चर्य लगलैक। ओकर कका तँ बेस भक्त छलैक। तीन फट्टा चानन करैत छलैक। भोर-साँझ स्नान करैत छलैक। ओ घन्टा-घन्टा भरि पूजा करैत रहैत छलैक। अरे! ओकर ककाका पाछा तँ एकटा वोर्ड लागल छलैक।

“मर्त्यलोकमे ढोंग करबामे कुशल रंजनजी अपना जीवन कालमे कतेको डकैती वो हत्या काण्डमे सम्मिलित रहला।”- भातिज गुम्म।

“बाह रे कका! ओहिठाम तँ बेस हवा बनौने छलाह।”

संसदक अधिवेशन जोरपर छलैक। नव-नव सदस्यक परिचय कराओल जाइत छलैक। पण्डालक अग्रभागमे नव सदस्य सभकेँ राखल गेल छल।

“ई थिकाह ‘ब्रजमोहन’। भूतपूर्व मुख्य मंत्री। ई अपन शासन कालमे फुसि बजबाक कीर्तिमान बनौलथि। कहिओ बैमानी करबासँ नहि हिचकला। मुदा पहिरन-ओढ़न बेस स्वच्छ सात्त्विक। हिनका नर्कमे स्थायी स्थान भेटलनि अछि। ओना सामान्य कोटिक पापीकेँ दोसर ओ तेसर सालपर कागज-पत्रक समीक्षा होइत छैक। मामलाकेँ फेरसँ जाँच-पड़ताल होइत छैक, मुदा हिनकर मामलामे यमराज एकतरफा निर्णय सुना देल जे ई नर्कक स्थायी सदस्य हेताह आ हिनकर कागज-पत्रकेँ गोपनीय कए देल जाए ताकि चित्रगुप्तक सहायक लोकनि ओहिमे कोनो प्रकारक हेरा-फेरी नहि कए सकथि।”

‘तिलक ’क पार आएल। टांग टुटि गेल छलनि। यमराजक पूत सभ लादि कए नर्क पुरी आनि रहल छल कि अकस्मात ओकर टांग नक्षत्रमे घुमि रहल स्काइलैवक टुकड़ीसँ टकड़ा गेलैक जाहिसँ भयंकर दुर्घटना भेल ओ तिलक प्रेतक टांग कटि गेलनि। ओना,तिलक मृत्युलोकमे मुखिया छलाह। ब्लौक डेबलपमेन्ट कमीटीक कार्यकारिणीक सदस्य छलाह ओ गाममे बेस धाख छलनि। गाममे राजनीति कए इलाकाक लोककेँ अपना दिसि कए अपन सहोदर भाएकेँ रातिये-राति निपत्ता कए देलनि। ओना, बाहरमे बेस बिलाप कएलनि। छाती पिटलनि। थानामे रिपोर्ट दर्ज करेलनि। इत्यादि-इत्यादि। मुदा संयोग जे ओहि समयमे नर्कमे समयोपरि काज चलि रहल छलैक आ भारतक विभागक किरानी काज कए रहल छलाह। नर्कलोकसँ वो सभ घटनाक दूरदर्शनपर देख रहल छलाह। नर्कक कागज-पत्रमे सभ लिखल छल। यमराजक कोर्टमे पहुँचि कए वो अवाक रहि गेलाह।

“के बाहर केलक ई सभ..!”

सोचैत छलाह। एवम् प्रकारेण एकसँ एक नवागन्तुक सदस्यक परिचय होइत गेल।

एतबहिमे भयंकर हल्ला सुनबामे आएल। दर्शक दीर्घासँ कूड़ा फेकल जा रहल छल। क्यो गोटे जोर-जोरसँ उद्घोष कए रहल छल-

"भाई लोकनि! यमराजक अत्याचारसँ हमरा लोकनि उबि गेल छी। नर्कक व्यवस्था साफ गड़बड़ा गेल अछि। हमरा लोकनि २५ बर्खसँ बिना सुनबाइ-के हाजतमे पड़ल छी।"

एतबहिमे दसटा बेस नमगर पोरगर जवान सभ हाथमे हथकड़ी लेने प्रवेश कएलक। हाथमे डंटा छलैक ओ आँखि लाल कए रहल छल।

संसदमे विरोधी पक्षक नेता गड़जि उठला-

"ई संसदक घोर अपमान थिक। संसदक अध्यक्षक अनुमतिक बिना एहिमे पुलिसक एहि प्रकारक प्रवेश निंदनीय थिक।"

चारू दिससँ सदस्य सभ फानय लगलाह। यमराजक प्रतिनिधि टीक पकड़ने हुनका अगत-अगत कए रहल छल। भयंकर कोलाहलसँ जखन किछु श्रुतव्य नहि रहि गेल तँ अध्यक्ष महोदय हारि कए सदनक कार्यवाही, ओहि दिनक हेतु स्थगित कए देल। संसदक किछु भाँगठ सदस्य भीड़मे डगमगा कए खसि पड़ि रहल छलाह। धक्कम-धुक्कीमे किछु नांगड़ सदस्यक दोसरो टांग आहत भेल जा रहल छलनि। बड़ी मोसकिलसँ वोहि दिन नर्कवासी अपन-अपन डेरा आपस पहुँचलाह।

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

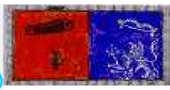
आगाँ...

३५.

जाबे अरुणओ एडली लन्दनमे पढ़ाइ-लिखाइ करैत रहए ताबे दुनू गोटे दू देह आओर एक आत्मा छल। अरुण सोचैक तँ एडली बजैक। एडली सोचैक तँ अरुण बजैक। दुनूक दोस्ती से परमान चढ़ल जे दोसर सभकेँ इर्ष्या होमए लगलैक। क्यो-क्यो चौल करैक जे ई दुनू कहीं आपसेमे ने बिआह कए लिअए। जाधरि ओ सभ संगे रहल दिन रातिक कोनो पता नहि चलैक। दुनू संगे पढ़ए, संगे टहलए आओर संगे खाए यद्यपि दुनूकँ छात्रावासमे अलग-अलग कोठरी रहैक मुदा बेसी काल दुनू एक्केठाम रहए। प्रेमक पराकाष्ठा कहल जाए तँ हर्ज नहि।

मुदा एकर सभक प्रेमक बीचमे आबि गेलैक एंगल। एंगल एडलीक मित्र छलैक। ओ एडलीक शिक्षको रहैक। मुदा ताहिसँ की? पाश्चात्य संस्कृतिमे ई सभ चलैत छल। अरुणक एडलीक संग घनिष्टताक कारण एंगलक अरुणो लग उठब बैसब होइते छल। देखए सुनएमे अरुण आकर्षक छलहे संगहि ओकर प्रतिभाक चर्च सगरे कालेजमे छल।

एक दिन एडली ओ एंगल पिकनिक मनाबए लन्दनक लगीचक झील जा रहल छल। एंगल कहलकै जे अरुणोकेँ संग कए लेल जाए। एडली ई प्रस्ताव अरुण लग रखलक तँ ओ सहर्ष तैयार भए गेल। तीनू झीलक कातमे बैसल छल। जाड़क समयमे हल्लुक रौद ओकरा सभपर पड़ि रहल छल। झीलक चारूकात अर्द्धनग्न जोड़ी सभ अपना-आपमे मस्त छल। क्यो ककरो देखत से होश नहि रहए।



एहन मनमोहक ओ उत्तेजक वातावरणमे एडली, एंगल ओ अरुण एक दोसरकेँ देखि रहल छल। एंगलकेँ की फुरेलैक जे ओ अरुणकेँ हाथ धए खिचलक आओर चलैत गेल। एडली देखिते रहि गेल। तहिआसँ अरुणक एंगलसँ आकर्षण बढ़िते गेल। साँझमे एडली, एंगलमे कहा-सुनी भेलैक। मुदा एंगल अपन जिद्दपर अड़ि गेलैक। ओ अरुणक प्रति अपन आकर्षणक आगू किछु नहि सोचि सकल। एडली ओकर पुरान दोस्त रहैक, मुदा सेहो पाछु रहि गेलैक। एडली बाजी हारि चुकल छल।

एडली बुधियार छल। ओ बातकेँ बतंगर बनबएमे विश्वास नहि करैत छल। अस्तु स्थितिसँ समझौता करैत ओ अरुणसँ अपन मित्रता बनओने रहल। एंगलसँ विचार करएमे सेहो कोनो लाभ नहि छलैक। तेँ सभ चुपचाप सहि गेल। तकर लाभ ओकरा भेलैक। गाहे-बगाहे एंगल ओकरो ध्यान रखैत रहल। एवम् प्रकारेण अरुण, एडली आओर एंगलक तिकड़ी बनि गेल, ताबे ओहिना रहल जाबे अरुण लन्दनमे रहए।

अरुण प्रशासकीय सेवामे उत्तीर्ण भए गेल छल। तकर बाद ओकरा अपन देश आपस अयबाक रहैक। एंगल संगहि जयबाक हेतु जिद्द कए देलकै। एडली सेहो एहि हेतु अरुणकेँ बुझओलक। अन्तगोगत्वा अरुण ओ एंगल संगहि दड़िभंगा आएल। एडली ओतहि रहि गेल।

q

३६.

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार दड़िभंगामे प्रगतिशील जागरण मंच ओ जनजागरण मंचक राष्ट्रीय कार्यकारिणीक सम्मेलन बजाओल गेल। देश भरिसँ ज्ञात-अज्ञात करीब पाँचसए प्रतिनिधिभाग लए रहल छलाह। दड़िभंगाक राज मैदान टेंटक शहर बनि गेल छल। कतहु लाल, कतहु हरिअर झंडा फहरा रहल छल। राष्ट्रभक्तिसँ भरल ओजस्वी गीत सभ बजाओल जा रहल छल। एहि वातावरणमे रहि-रहि कए तरह-तरहक सूचना प्रसारित भए रहल छल।

जनाधार पार्टीक सेहो आमंत्रित कएल गेल छल। परन्तु ओ सभ एहिमे भाग ली, नहि ली से दुबिधामे रहि गेलाह। स्वतंत्रताक लड़ाइ एकजुट भए लड़ब ई तँ नीक बात रहैक, मुदा नेतुत्वक समस्या ओझड़ाएल रहैक। अन्ततोगत्वा तय भेल जे ओ सभ फिलहाल यथावतक स्थितिमे रहत। माने अपन अलग आस्तित्व बनओने रहत। मुदा जनाधार पार्टीक नव निर्वाचित मुखिआ चेतन व्यक्तिगत स्तरपर आएल छल। ओकरा संगे दू-चारि गोटे आओर आबि गेल रहए।

कार्यक्रम प्रारम्भ होइते बंदे मातरम्-क नारासँ धरतीसँ आकाश एक भए गेल। सभ एक स्वरसँ "सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्" गबैत गबैत भाव विभार भए गेल। तकर बाद राजकुमार विस्तारसँ राष्ट्रीय परिदृष्यक वर्णन करैत दुनू मंचक अंदरुनी स्थितिक चर्चा केलाह आओर घोषणा केलाह जे आइसँ दुनू मंचक विलय भय गेल अछि। आब एहि मंचक नाम राष्ट्रवादी दल रहत।

एतबे बात ओ कहने छल कि उमा अपन संगे १५-२० टा महिलाक संगे नारा लगबैत मंच धरि पहुँच गेलि। हुनका सभक हाथमे पट्ट छल जाहिपर मोट-मोट आखरमे लिखल छल-

"स्त्रीक सम्मान बिना स्वतंत्रताक गप्प निरर्थक थिक।"

उमाकेँ एहि तरहेँ आओर महिला सभक संगे एहि तरहेँ आक्रमण देखि सभ सकदम भए गेलाह। बैसारक कार्यवाही रुकि गेल। जे जेना छल, तहिना रहि गेल। लगलैक जेना सम्पूर्ण वातावरणकेँ लकबा मारि देने हो। राजकुमार ओ मास्टर साहेबकेँ किछु फुरेबे नहि करनि।

बैसारमे भाग लैत अधिकांश लोक उमाक समर्थनमे बाजए लगलाह। ओहिमेसँ किछु गोटे तँ उमा लग आबि ओकरे संगे नारा लगबएलगलाह। आब की होएत?

मास्टर साहेब स्वयं उठि कए उमा लग गेलाह। जन भावनाक आदर करैत उमाकेँ मंचपर लए अनलखिन। तकर बादे बैसारक कार्यवाही प्रारम्भ भेल।

चारूकातसँ लोक उमाक समर्थनमे आबि गेल आओर आग्रह करए लागल जे उमाकेँ नवोदित राष्ट्रवादी दलक अध्यक्षा बनाएल जाए। मास्टर साहेब, राजकुमार उमासँ मंत्रणा कए हुनका राष्ट्रवादी दलक अध्यक्ष चूनि लेल गेल। 'उमा देवीक जय' सँ वातावरण गुंजायमान भए गेल।

राष्ट्रवादी दलक गठनसँ जनाधार पार्टीमे आपसी सिरफुटौअल बढ़ि गेल। पार्टी कतेको गुटमे बँटि गेल छल। पार्टीमे किछु गोटे राष्ट्रवादी दलक संगे विलएकपक्षधर रहथि। एहिसँ स्वतंत्रता आन्दोलन प्रखर होइत। मुदा पार्टीक बूढ़ नेता सभ चाहथि जे यथावत बनाओल रहए देल जाए कारण ओ सभ अपन अपन कुर्सीकेँ संकटमे नहि देबए चाहथि।

उमाकेँ राष्ट्रवादी पार्टीक अध्यक्षा बनबाक समाचार अरुणकेँ जासूसक माध्यमसँ भेटलैक। ओ अत्यन्त विचलित भए गेल। उमाक एहि तरहक प्रतिकृयाक ओकरा आशा नहि छल।

महौलकेँ गड़बड़ाइत देखि अरुण एंगलक संगे किछु दिनक हेतु लन्दन सरकारी यात्रापर चलि गेलाह। हमर माए दुखित पड़ि गेल छल। ओकरा असगरमे बहुत दिक्कत भए रहल छलैक। तँ किछु दिनक हेतु हम अपन नैहर गेलहुँ जाहिसँ माएकेँ सेवाक अवसर भेटए। एक युगक बाद हम नैहर गेल रही। हमरा देखिते हमर माए बहुत प्रशन्न भेल। लगलैक जेना तुरन्त ठीक भए गेल। टन-टन बाजए लागलि।

असलमे ओ एकाकीपनसँ उबि गेल छलि। फेर दिआदसभ सेहो तंग करनि। सम्पत्तिमे हिस्सा नहि दैक जाहिसँ ओ बहुत दुखी छलि। हमर अपन पित्ती सेहो गुजरि गेलाह। हुनका तीनटा बेटीए रहनि। अस्तु, हमर सभक समस्त सम्पत्तिकेँ हमर पितिऔत काका हरपि लेबए चाहैत छल।

माएक स्वास्थ ठीक भेल। ओमहर हमरा सासुरसँ विदागिरीक हेतु समाद आबि गेल छल। मासो दिन नैहरमे नहि भेल छल। मुदा कै बेर विदागरीक हेतु आदमी आबि चुकल। अन्तमे ओ स्वयं आबि गेलाह आओर हम सासुर विदा भए गेलहुँ।

q

३७.

"वृन्दावन बिहारी लाल की जय।" निरंतर भजन, कीर्तन ओ प्रवचनमे तल्लीन भजनानन्ददासजी महराज अध्यात्मिक पराकाष्ठापर पहुँच गेल रहथि। एकहि जीवनमे व्यक्तित्वक एहन रूपातंरण कमे सूनएमे अबैत अछि।

किन्तु जन्म-जन्मक संस्कार जोर मारैत अछि। जीवनक कतेको रहस्य अछि जकर गणितीय व्याख्या असम्भव। परन्तु सद्यः सत्य इएह छल जे एकटा डकैत गरम सिंह महान कृष्णभक्त भए गेलाह।

ततबे नहि लोक कल्याण हेतु सर्वस्व, समस्त सामर्थ्यकैं अर्पित कए देने छलाह। जहिना ओहि आश्रममे धनक बर्खा होइत छल तहिना ओहि पैसाक जन कल्याण हेतु खर्च कए देल जाइत छल। कहबी छैक :

"पानी बाढ़े नावमे, घरमे बाढ़े दाम

दोनो हाथ उलिचिये, एही सयानो काम।"

एहि कथानकक भजनानन्दजी महराज एकटा जीवन्त उदाहरण छलाह। अपना लेल किछु नहि। "तेरा तुझको अर्पण" कैं चरितार्थ करैत छलाह, अपन आश्रममानव जातिक कल्याण हेतु उपलब्ध कए देने छलाह।

आश्रममे तँ भजन किर्तन चलिते रहैत छल। भण्डारा चलिते रहैत छल। भक्तगण सभ मृदंग, ढोलक, पखावज ओ झालि बजाए कृष्ण नाम संकिर्तन करिते रहैत छलाह। समस्त वातावरण ततेक धार्मिक ओ भावनापूर्ण रहैत छल जे ओहिठाम अएनिहार कोनो, केहनो व्यक्ति शान्तिक अनुभव करैत छल।

मुदा भजनानन्दजी एतबेपर नहि ठहरल छलाह। ओ अपन राष्ट्रक प्रति कर्तव्यसँ सेहो सचेत छलाह। हुनकर कहब छलनि जे जाधरि भारतमाता परतंत्रताक बेड़ीसँ जकड़ल छथि, ताधरि स्वर्गो व्यर्थ थिक। मुक्तिक कामना अन्याय थिक।

"के बोले मा तुमि अबले...।" नहि, नहि, भारत माता अवला कदापि नहि भए सकैत छथि। कोटि, कोटि हुनक संतान हुनक प्रतिष्ठा ओ स्वतंत्रताक रक्षा हेतु र्स्वस्व त्याग करए हेतु कृतसंकल्प अछि। देश स्वतंत्र भए कए रहत। "भारत माताक जय! वन्दे मातरम्"- इएह कहि हुनकर प्रवचनक अन्त होइत छल।

राष्ट्रवादी दलक आर्थिक समस्याक समाधान तँ भजनानन्ददासजी महराजक आश्रमक माध्यमसँ भए जाइत छल। महराजजीक एकटा भक्तक दड़िभंगामे तीन महलक भवन छलैक। ओ तीनू महल भजनानन्दजी प्रेरणासँ राष्ट्रवादी दलकैं दान कए देलक। स्वयं दुनू व्यक्ति दिन-राति राष्ट्र सेवामे लागि गेल। फिरंगी सभ एक हिसाबे हिलि गेल छल। ओकरा सभकैं राष्ट्रवादी दलक बढ़ैत शक्तिसँ ततेक व्याकुलता भेलैक, ततेक भय भए भेलैक जे इज्जतिसँ देश छोड़बाक रस्ता ताकय लागल।

q

३८.

अरुण एंगल केर संग लन्दन हवाइ अड्डापर पहुँचले छल कि एडली हवाइ अड्डापर पहुँच गेल। लगैत छल जेना ओ बहुत दिनसँ एहि अवसरक प्रतिक्षामे छल। ओकर फाटल- फाटल हरिअर आँखि बहुत किछु कहि रहल छल। हवाइ अड्डासँ अरुण ओ एंगल वहिर्गमन द्वारपर एडलीक स्वागतसँ अभिभूत छलाह।

अरुण सरकारी काजसँ जोगार लगाए लन्दन गेल छल। ओहिठाम आवास सहित आओर आवश्यक सुख-सुविधाक प्रबन्ध छल। ओसभ ओतहि जेबाक हेतु उद्यत छल परन्तु एडली अड़ि गेल। ओकर बात काटबओकरा सभक बसमे नहि छल।

अस्तु, ओ सभ एडलीक बात मानि ओकर घर दिसि विदा भेल। अरुण लेल ओकर घर नव नहि छल। लन्दन प्रवासक दौरान ओ सभ कतेको दिन ओतए रहल छल। अबैत जाइत छल। एक हिसाबे ओ सभ ओकर पारिवारिक मित्र भए गेल छल। लन्दन पहुँचि अरुणकेँ उसास तँ भेलैक। कमसँ कम उमाक घात-प्रतिघातसँ तात्कालिक राहत भेटलैक। संगे पुरान दोस्त सभसँ भैंट-घाँट होइत रहलैक। ओकरा सभक संगे बिताओल मधुर, स्नेहिल समयकेँ पुन: सद्य: जीबाक अवसर भेटलैक। सरकारी कामकाज तँ बहाना छल।

एक दिन एडलीक ओहिठाम रहि अरुण सरकारी अतिथि गृहमे चलि आएल। एंगल ओ एडली ओतहि रहल। ई दुनू तँ पुरान दास्त छल। बहुत दिनक बाद एकठाम भेल छल। लगलै जेना बिर्डो उठि गेल। दुनूकेँ गप्पक अन्ते नहि होइक। गप्पेटाक बात रहितए तँ कोनो बात नहि। लगबे नहि करैक जे अरुण ओकरे संगे आबि कए कतहुँ आनठाम रुकि एंगलक प्रतीक्षा कए रहल अछि।

आखिर लन्दन, लन्दन छैक। ओहिठामक अन्मुक्त वातावरणमे बढ़ल, पढ़ल एंगल ककरो हेतु बान्हल छेकल कतेक रहि सकितैक? एहनमे तँ अरुण स्वयं सोचि सकैत छलाह। मुदा भावी प्रवल। जे हेबाक छल से भेल। दुखक बात तँ ई छल जे एहूकात गाड़ी घिसिर-फिसिर करैत छल। ओहिकात तँ सद्य: उमा गरजि रहल छलैक। अरुण सचमुचमे बेचारा भए गेल छल। कहबी ठीके छै- 'ने दौड़ि चली, ने ठेंसि खसी।'

एक सप्ताह बहुत नहि होइत छैक। देखिते देखिते शनि, रबि आबि जाइत छैक। पाँच दिनका खटैनी दू दिनका सप्ताहान्त अवकाशमे गलि जाइत छैक। अरुण सेहो पाँच दिन लन्दनक सरकारी काजमे व्यस्त रहल मुदा शुक्रक साँझ अएलापर माथ ठनकलै। आब की कएल जाए? एंगलक अएबाक गप्प कोन, फोनो नहि केलकै। ओ तँ एडली संगे तेना कए रमि गेलैक जे आगा- पाछा किछुक सुधि नहि रहलैक।

अरुण जखन एडलीक ओतए पहुँचल तँ पता लगलैक जे ओ सभ लन्दनसँ बाहर चलि गेल अछि। कतए गेल से घरक लोक ने अपना मोने किछु कहलकै आ ने अरुण पुछलक। ओहिठामक समाजमे बेसी खोध-बेधक परम्परा नहि छैक। बहुत रास बात व्यक्तिगत रहि जाइत अछि।

अरुण गुम्म छल। ओकरा एहि बातकेँ आब आभास भए रहल छलैक जे अपन सभक माटि-पानिमे जन्मल, पोसाएल पुरुखक बिआहक एहन कल्पना रहैत छैक जाहिमे ओकर स्त्री आजन्म ओकरा प्रति निष्ठावान रहैक, ओ जे चाहए सएह करैक, मुदा ई तँ लन्दन छै। से बात बहुत बिलंबसँ बुझए आबि रहल छलैक।

एडली ओ एंगल स्कूटरपर लन्दनसँ करीब चालीस किलोमीटर दूर एकटा रिजार्टमे ठहरए हेतु जा रहल छल कि एकटा तेज गतिसँ चलैत कार ओकरा टक्कर मारि देलकै। टक्कर ततेक जबरदस्त छल जे स्कूटर पचरा भए गेल। हेडली ओहीठाम कै पलटी खेलक मुदा कोनो बेसी चोट नहि लगलैक। परन्तु एंगल हवामे कै फीट ऊँचाइ धरि फेका

गेल आओर धरामसँ नीचा बीच सड़कपर खसल। ई तँ संयोग छलैक जे पाछुसँ अबैत दोसर कारक वाहन चालक एकाएक ब्रेक लए लेलक नहि तँ ओतहि ओ टुकड़ी-टुकड़ी भए जाइत।

एहि दुर्घटनामे एंगलक दहिना जाँघक हड्डी टुटि गेल छलैक। कनी- मनी चोट तँ सौंसे देहमे छलैक। एडलीक हालत सेहो ठीक नहि छलैक। क्रमश: दुनू पैर फुलि गेलैक जाहिसँ चलबामे असोकर्य होइत छलैक।

कहुना कए स्थानीय पुलिस एकरा सभकैँ लन्दनक प्रतिष्ठित अस्पतालमे भर्ती करओलक। अरुणकैँ सेहो पुलिस द्वारा सूचना भेटल। ओ तुरन्त अस्पताल पहुँचल। ओ एंगलक हालत देखि दुखी भए गेल। जाबे एंगल अस्पतालमे रहल ताबे ओहो ओतहि रहल। मुदा तकर बादक चिन्तासँ ओ व्यग्र रहए लागल।

शुरूमे अरुणक कार्यक्रम छलैक जे ओ तीन-चारि मासमे अपन देश आपस आबि जाएत। मुदा गाम-घरसँ जे समाचार सभ भेटैक आओर जाहि प्रकारेँ उमा उग्रसँ उग्रतर भए रहल छलि, ओकर मोन बेचैन भए जाइक, कोनो समाधान नहि फुराइक।

संयोग एहन भेलैक जे अंग्रेजसभकैँ खुफिआ रिपोर्ट भेटलै जे अरुणकैँ हितमे नहि छल। ओकरा सभकैँ अरुणक गति-विधिपर सन्देह भए गेल छलैक। तँ ओकरा कम-सँ-कम साल भरिक हेतु लन्दनमे रहबाक आदेश कए देलक।

सरकारी आदेश छलैक, तँ अरुणकैँ कोनो विकल्पो नहि रहैक। ओकर मोन निरन्तर अपन गाम-घरपर टांगल रहैत छलैक। तथापि ओ अपना आपकैँ लन्दनमे व्यस्त कए लेलक। दिन भरि कार्यलयमे समय बीति जाइत छल। साँझ कए समय बिताबक हेतु एतए बहुत जोगार सभ छलैक।

एंगल अस्पतालसँ छुटि कए अरुणक डेरापर अएलैक। मुदा ओकरा नीकसँ चलल नहि होइक। डाक्टरक परामर्शक अनुसार ओकरा फिजिओथिरैपीक प्रयोजन रहैक। सभ सुविधा आसे-पासमे उपलब्ध छल। मुदा घरमे बैसल-बैसल ओ तंग भए रहल छलि। कोनो उपायो नहि रहैक। अरुण कार्यालय चलि जाइक। दिन भरि ओ एसगरि कहुनाक समय बिताबथि।

एहिना एक दिन ओ उदासघरमे किछु पढ़ि रहल छलि कि एडलीक फोन आएल। एंगल ओकरा तुरन्त आबए हेतु आग्रह केलक। एडली बिना विलम्ब केने ओतए आबि गेल। दिनभरि दुनू गोटाकैँ गप्प-सप्पमे समय कोना बीति गेल सेपता नहि चलल। साँझमे ओ अपन घर आपस जेबाक इच्छा व्यक्त केलक। ताबत अरुण सेहो आबि गेल रहए। अरुण ओ एंगल दुनू गोटे ततेक आग्रह केलकै जे ओ ओहीठाम रहि गेल। एंगल, एडली संगे तेहन तल्लीन भए जाइक जे अरुणकैँ करए हेतु किछु रहिए नहि जाइक। कखनहुँक ओहो गप्पमे लारि देबाक प्रयास करैक मुदा ओकरा सभक हेतु धनिसन।

q

३९.

अरुण लन्दन चलि गेल से समाचार हमरा सभकैँ खबासिनीक माध्यमसँ भेटल। एहि बेर ओ बहुत दिनपर आएल छलि। गप्प-सप्पक क्रममे कहए लागलि जे हमर माए सम्पत्तिमे बँटबारा हेतु बहुत हल्ला केलकै। मुदा हमर पितिऔत काका टस सँ मस नहि होइत छैक। ओकर कहब जे बेटीक बिआह भइए गेल। तखन अहाँकैँ खोरिसक

अतिरिक्त किछुके अधिकार नहि अछि। कतेको बेर बैसार भेलैक। पंचसभ सेहो ओकरे संग भए गेलैक। बहुत रास सम्पत्ति तँ ओ अपना नामे करा चुकल छल।

ई बात सभ जखन हुनकर कानमे गेलनि तँ दड़िभंगामे मोकदमा कए देलाह। दड़िभंगाक नामी ओकिल मोना बाबू हमर सभक केस लड़ि रहल छलाह। कोर्टसँ नोटिस जारी भेल। हमर पितिऔत काकाकेँ दिआद सभ बहुत कहलकै। अनततोगत्वा ओ पसीजल आओर पाँच बीघा जमीन हमरा माएकेँ देबाक हेतु तैयार भए गेल। ओ एहि प्रस्तावकेँ मानि लेलाह। जतए हम सत्तरि बीघाक उत्तराधिकारी रहितहुँ कतए मात्र पाँच बीघापर समझौता करए पड़ल। कोनो विकल्पो नहि छलैक। कानूने तेहने छलैक।

समय बीतैत देरी नहि होइत अछि। देखिते-देखिते हमर बच्चा सभ जबान भए गेल। तीनू बेटीक पढ़ाइ पूरा भए गेल। ओ सभ अपन अपन रूचिक विषयमे एमए पास कए चुकल छलि। एकमात्र पुत्र सेहो इंजीनियरिंगमे पढ़ैत छल। एकरा सभक पढ़ाइ-लिखाइमे अरुणक गम्भीर योगदान छलैक। आर्थिक चिन्ता तँ कहिओ होमए नहि देलक।

पढ़ि-लिखि तँ गेल मुदा आब की कएल जाए। ई समस्या विकट छल। कारण ओहि समयमे बेटीक पढ़ाइ-लिखाइ बिरलैके क्यो करैत छल। से हम सभ केलहुँ आओर जेना-तेना पार लागि गेल। मुदा भविष्यक संघर्ष आओर प्रवल लगैत छल।

इएह सभ सोचैत रही कि हमर तीनू बेटी गाम आएल। ओकरा सभकेँ देखि मोन गदगद भए गेल। सभक व्यक्तित्वमे अद्‌भुत चमक छलैक। आत्मविश्वाससँ भरल छल। विद्यासँ ओकरा सभकेँ बहुत आत्मशक्ति प्राप्त भए गेलैक आओर ओ सभ जीवनमे किछु स्थान बनबए हेतु कृतसंकल्प लगैत छलि।

जहियासँ राष्ट्रवादी दल बनल, जनाधार पार्टीक जनाधार तेजीसँ खसकि रहल छल। राष्ट्रवादी दलक कमान उमाक हाथमे पड़िते चारूकातक स्त्रीगण खास कए मध्यवर्गीय परिवारक, ओहि दलसँ जुड़ए लागलि। लगैक जेना देशमे क्रान्ति आबि गेल अछि।

शिक्षा नहि, पारिवारिक सम्पत्तिमे हिस्सा नहि, घरसँ बाहरो निकलबाक परिस्थिति नहि, आखिर एहि बातक प्रतिकार तँ भेनहि रहैक। अस्तु, अवसर भेटिते एक दिस तँ "बन्देमातम्"केर नारा लगैत तँ दोसर दिस स्त्री सम्मानक रक्षाक चर्चा सेहो जोर पकड़ने जाइत छल।

फिरंगी सभ एहि बातसँ चिन्तित छल। ओकरा सभकेँ किछु फुरेबे नहि करैक जे एहि परिस्थितिसँ कोनो निपटी। तखन ओ सभ सोचलक जे जनाधार पार्टीक मदति लए आपसेमे उठापटक कराओल गेल।

जहिआसँ चेतन जनाधार पार्टीक अध्यक्ष भेल छल, ओकर फिरंगी सभसँ पहिल भेँट-धाँट रहैक। मुदा फिरंगीसभ ओकरा प्रभावमे नहि आनि सकल।

राष्ट्रवादी दलक प्रभावसँ हमर तीनू बेटी- हीरा, वाणी ओ गंगा प्रभावित छलीह। देश ओ समाजक हेतु किछु करबाक इच्छा हुनका सभकेँ उद्वेलित कएने छल। उच्च शिक्षा प्राप्त कए ओ समाजक दुर्दशाकेँ बेसी नीकसँ बुझैत छलीह। अस्तु, ओ सभ सभ काजकेँ पाछु कए उमाक संग भए गेलीह। राष्ट्रवादी दलक सक्रिय सदस्यता ग्रहण कए गाम-गाममे घूमए लगलीह।

आब उमा एसगरि नहि छलीह। छोट, पैघ, जवान, बूढ़ सभ ओकरा संग दए रहल छलैक। असलमे गाम-गाममे पसरल एहि अन्यायसँ मुक्तिपाबक एकटा अवसर आबि गेल छल। जतहि देखू "बन्दे मातरम्" केर नारा लागि रहल

अछि। भारत- माताक जयगान भए रहल अछि। एकहि स्वरमे समाजमे युग-युगसँ पसरल वैमनस्यता,भोदभाव, शोषणक विरुद्ध आक्रोश सेहो तीव्रतर भए रहल अछि। क्यो-क्यो कहैत छल जे समाजकेँ बिखण्डित करबाक ई फिरंगी सभक नव हथकंडा अछि।

राष्ट्रवादी दलमे महिलाक पैठसँ सभसँ बेसी प्रशन्नता भजनानन्ददासजीकेँ भेलनि। हजारो सालसँ यातनापूर्ण जीवन जीबए हेतु विवश स्त्रीगणकेँ अभिव्यक्ति एकटा साधन भए गेल छल राष्ट्रवादी दल। जखन कखनो नव प्रयोग होइत अछि, चाहे ओ सही हो, गलत हो, जे हो, ओकर विरोध, प्रतिरोध होइते अछि। मुदा ओहो विकासक एकटा पदचापे बुझबाक चाही। अन्ततोगत्वा मनुक्खक प्रयास सफल होइते अछि। से नहि होइत तँ मनुक्खक विकास नहि भए सकैत अछि। आदिकालसँ लोक परिस्थितिसँ संघर्ष केलक आओर आगा बढ़ल अछि।

भजनानन्ददासजी भक्ति, अध्यात्म ओ राष्ट्रवादक प्रखर घ्वजवाहक भए गेल छलाह। गाम घरमे भए रहल सामाजिक, राजनीतिक घटनाक्रमसँ आश्रममे अएनिहार लोकक माध्यमसँ ओ पूर्ण अवगत छलाह। हुनकर एहि उदारताक लाभ राष्ट्रवादी आन्दोलनकेँ भेटि रहल छल। एही बात सभकेँ ध्यानमे रखैत राष्ट्रवादी दलक अगिला बैसार वृन्दावनमे करबाक निर्णय भेल।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास) धारावाहिक आ दूटा लघुकथा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

9.

उमेरक चलैत अपन गिरैत दैहिक शक्तिकेँ अँकैत देवचरण हरिचरणक बिआह करब अनिवार्य बुझलैन। अनिवार्यक दू कारण भेलैन, पहिल- अपन आगू बढ़ैत परिवारकेँ अपना आँखिये देखब, जइसँ मनमे तृप्ति जगैत अछि। दोसर कारण मनमे ईहो भेलैन जे ओना हरिचरणकेँ पढ़ाएब-लिखाएबसँ लऽ कऽ ओकर बिआह-दान करब धरिक काज राधाचरणक कर्तव्यक सीमामे अछि मुदा ऊहिगर बेटाकेँ नहि रहनेआतैसंग हरिचरणक जीवनचर्याकेँ देख देवचरणक मनमे ईहो भेलैन जे जेहेन पोता क्रियाशील अछि, ओहने क्रियाशील लड़कीक संग जँ बिआह कए देबै तँ ऐगला पीढ़ीक जीवन-यापन संतोषप्रद हेबे करत। यएह इच्छा ने सभ परिवारमे वृद्धजनक होइ छैन जे अखुनका जे परिवारिक जिनगी अछि ओ दिनानुदिन अगुआइत चलए।

ओना, मिथिलांचलो तँ मिथिलांचले ने छी। जहिना कुशाग्र बुधिक लोक अनुकूल परिस्थिति भेटने नीक-सँ-नीक विद्वता, नीक-सँ-नीक कलाकारिता, नीक-सँ-नीकटेकनोलॉजी आ नीक-सँ-नीक जिनगीक पारखी बनैए

तहिना ने नीक-सँ-नीक भोगवादियो आ नीक-सँ-नीक जोगवादियो बनिते अछि। अपना सबहक मिथिला वएह ने छी जे जइ पत्नीकेँ सहयोगी-संगी बुझै छी ओइ पत्नीकेँ परिवारिक कोनो क्रिया-कलापक भार नइ पड़ैन, तँए भानस करैले भनसिया, पानि भरैले पनिभरनी, कपड़ा-लत्तासँ लऽ कऽ घरक निपाइ-पोताइ तक अनकेँ[i] सिरे-हाथे होइ। मुदा से नहि, ओहनो मिथिलांचल तँ अछिए जैठाम बेटा-पुतोहु अपन पाछूसँ अबैत खनदानी परिवारमे पिताक अनुसरण करैत सहयोगी बनि तिल-तिल, कण-कणक अनुभवक अभ्यास करैत तिले-तिल, कणे-कण अबैबला काल्हुक अनुकूल बनबैत अपन भविसकेँ अनुकूलतामे पीअबैत, निर्माण करैत आगू बढ़ैए।

मिथिलांचलक ओइ हिस्सामे देवचरण हरिचरणक बिआह करब मनमे रोपि लेलैन जेतए अपने सन सीमान्त किसान[ii] परिवार हुअए। जइ परिवारक जन-जन अपन भविसक पाछू लगि श्रम-संस्कृतिकेँ अंगीकार करैत श्रमशील-शिलाक क्रमगतिसँ निर्माण-कार्यमे लागल हुअए। ओना, ई इच्छा तँ अपन मनक भेल, मुदा जैठाम बरपक्ष छी तैठाम अपने उपकैर कऽ केना कन्यागतकेँ कहब जे अहाँ अपन कन्याक बिआह हमरा परिवारमे करू। एक तँ अनेरे लोकक मनमे उठत जे जाबे लड़का खोमाह नइ छै ताबे एहेन चर्च किए करै छैथ। तैसंग ईहो तँ अछिए जे मनोनुकूल कन्या नइ रहने एकटा-दूटा कन्यागतकेँ तँ बहटारि सकै छी, मुदा जँ तइसँ बेसीकेँ बहटारए चाहब तँ अनेरे ने सभ कहबे करत जे फल्लाँ लड़काक सिरे तेहेन बौगली[iii] सिया कऽ रखने छैथ जे कन्यागत जँ अपन डीहो-डाबर बेच कऽ लगा देत तैयो ने भरतैन...!

संजोग बनल, हरिचणक बिआह समस्तीपुर जिलाक ओहन गामक किसान परिवारमे भेल, जे परिवार अपन कृषि क्षेत्रकेँ ओहन बिसवासू रूपमे बना कऽ ठाढ़ केने अछि, जइसँ इंजीनियर, डॉक्टर तकक समावेश परिवारेमे होइक सम्भावना बनल अछि। जेहने देवचरण खेतिहर पुतोहु चाहै छला तेहने पुतोहु भेटने अपन सोलह सालक पोताक बिआह सोलह सालक कन्या- परमेसरीक संग केलैन। भुखाएल-दहेजियाएल मन देवचरणकेँ रहबे ने करैन, तँए हरिचरणक बिआहसँ सोल्होअना तृप्ति देवचरणकेँ भेलैन।

समयक अनुकूल तँ राधाचरणक सुधार नहियेँ भेलैन मुदा बेवहारिक रूपमे दूटा महींसिक सेवा करैक भार सिरचढ़ भेने धीरे-धीरे सुधरए लगलैन। सुधार देख देवचरण समयक अनुकूल महींसिक सेवाक संग आरो-आरो काज करैले राधाचरणकेँ चरिया-चरिया चरैबेति बना लेलैन। ओना, उमेर पाबि सेहो राधाचरणक मनमे परिवारक प्रति प्रेम जागल, जइसँ बकलेल-ढहलेल जकाँ जे वौआइत रहै छल तइमे सुधार भेल। ओना, परिवारमे परिवारजनक बीच जे सम्बन्धसूत्र अछि, माने पैछला पीढ़ीक बेटा-भातीज, नाइत-पोतासँ लऽ कऽवर्तमान पीढ़ीक भाए-भौजाइआ तहिना ऐगला पीढ़ीक काका, पिता, बाबा-नाना इत्यादि, सेहो अछिए। जहिना भक्त आ भगवानक बीच अभक्त रूप अछि तहिना ज्ञान आ कर्मक बीच सेहो अछिए। जखने दुनूक बीचक अभक्त रूप मेटा भक्त रूपमे परिणत होइए तखने जिनगीक सार्थकता सफल हुअ लगै छइ। जे हरिचरण आ देवचरणक बीच भेल। ओना, देवचरण किसानी जिनगीक मर्मभेदी रहनौं अपन जिनगीमे पंगु बनल रहला, मुदा अपन पंगुपनक कारणकेँ बुझि देवचरण अपनाकेँ ओही जिनगीमे समावेश करैत परिवारक गाड़ीक जुआकेँ कन्हेठ आगू मुहेँ खिंचते रहला, जइसँ अभावोकेँ कुभाव नहि बुझि सुभाव बना जीवन-बसर करबे केला, जे अपन सभ गुण-शील हरिचरणकेँ दान-दैछनामे दैत ऐ दुनियासँ विदा भेला।

देवचरणकेँ चौदह बर्ख मृत्यु भेना भऽ गेलैन। हरिचरण बतीस-तैंतीस बर्खक भऽ गेल। तीनटा सन्तानो भेलइ। राधारचरण सेहो चारिमपनमे पहुँच गेला। देशमे हरित क्रान्तिक रूपमे नव जागरण भेल। परम्परासँ अबैत कृषि-कार्यमे बदलाउ आएल। जेतए सिंचाइक करीन छल ओ बदैल पम्पसेट आएल। खेत जोतैक जे

जनकजीक समैयक तीनबित्ता हर छल ओइक जगहट्रेक्टर आएल। तेतबे नहि, धान कुटैक ढेकी बदलल, चुड़ा कुटैक उक्खैर बदलल, पाथरक जत्ता बदलल,तेल पेड़ैक कौल्हु बदलल इत्यादि-इत्यादि किसान परिवारसँ लोप भेल आ नव-नव तकनीकसँ सिरजल लोहाक इंजिन लोकक हाथमे आएल, जेकर रफ्तार दसगुणासँ लऽ कऽ हजारगुणा धरिक अछि। ओना, जइ गतिये किसानी तकनीक आगूसँ उतरल तइ हिसाबे किसान नहि उतैर सकल मुदा साफे नहियेँ उतरल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कियो उतरल वा नहि उतरल, चढ़ल वा नहि चढ़ल मुदा हरिचरण, जे बतीस-तैंतीस बर्खक जवान किसानक रूपमे उतरबे कएल। से ओइ भाव-रूपमे उतरल जहिना एक जवान हाथमे बन्दूक उठा अपन मातृभूमिक रक्षार्थ सीमापर माघक शीतलहरीक पाला, जेठक रौद आ भावदक बर्खाक अट्ठा-बज्जर सहैतअपन दायित्वक निर्वहन करै छैथ, तहिना ने जवान किसान सेहो अपन मातृभूमिक सेवार्थ भूख-पियास मेटबैले माघक पाला, जेठक रौद आ भादवक गर्जन-तर्जनकेँ अङ्गेजैत अपन दायित्वक निर्वहन करै छैथ।

हरिचरण अपन तीनू बीघा जमीनकेँ समाजिक रूपमे अदैल-बदैल, रकबाक हिसाबसँ दस कट्ठा घाटा उठबैत अढ़ाइ बीघा खेत एकठाम केलक। अपन जिनगीक सूत्रकेँ पकैड़ चारि इंचबला बोरिंग आ पाँच हॉर्स पावरबला इंजिनक साधन बना अपन फसिल सिंचाइक बेवस्था सेहो केलक। तैसंग अढ़ाइयो बीघा खेतमे ओतेक काज ठाढ़ केलक जइमे भरि दिन दुनू परानी अपन दुनियाँ बुझि अपनाकेँ सोल्होअना समर्पित केलक। तेतबे नहि, अस्पतालक डॉक्टर आ कृषि फार्मक कुशल किसान जकाँ अपन बाल-बच्चाकेँ सेहो देखा-सुनी कराइये रहल अछि। तैसंग सालो भरिक खेतीपर दैत सुअन्न, सुफल आ सुसाग-सब्जीक केतेक जरूरत मनुखकेँ अछि, तहूक उपार्जन कइये रहल अछि।

मिथिलांचलक बीच अपन मिथिला बना फलक नाओंपर खाली आमेक गाछी-कलम नहि, सालो भरिक जे फलक क्रम अछि तइ हिसाबक फल, तहिना ओइ हिसाबक तीमन-तरकारीक संग अन्नो उपजाइये रहल अछि।

अपन साधक जे क्रिया अछि तइमे तँ हरिचरण अपन सफल स्वरूप देख रहल अछि, मुदा आगूक जिनगीकेँ देखैत हरिचरण जखन अपन वृहद् स्वरूप देखए लगैए तखन पंगुपन आगूमे नचिते छइ। ओना, केतबो पंगुपन हरिचरणक आगूमे किए ने नाच करए, मुदा किसानक समाजमे किसान वृन्द कहेबाक अधिकारी तँ अछिए।

q

शब्द संख्या : 935, तिथि : 6 जून 2018

---

[i]नोकरे-चाकरेक

[ii]तीन बीघा जमीनबला किसान

[iii]रूपैआ रखैबला

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

दूटा लघुकथा

ा

हमरा नीक नहि लगैए

दिल्लीसँ एना रामरतन तीनू परानीकैँ माने रामरतन अपने, पत्नी- गुलाब आ पुत्र- परमेसर आइ सात दिन भेलैन अछि। एक दिन तँ ट्रेनक थकान मेटबैमे बीति गेलैन, तँए ने रामरतन किछु देख पेला आ ने बुझि पेला। मुदा आइ छह दिनसँ माता-पिता सहित पत्नीक लीला देखियो रहल छैथ आ विचारियो रहल छैथ मुदा बाजि किछु ने रहल छैथ। एगारह बजे दिनमे खाइले बैसला तखन पचीस बर्खक पत्नीकैँ देखलैन जे घरक चौकीपर पड़ल-पड़ल भारत-इंग्लैंडक बीच मैच देख रहल छैथ आ पचपन बर्खक माए ओसारपर पीढ़ी बैसा, लोटामे पानि रखि घरमे भोजनकथारी परोसि रहल छैथ...।

गुम्म भेल पीढ़ीपर बैसल रामरतन मने-मन विचारि रहल छला जे एकरा की कहबै, नीक कहबै आकि अधला कहबै? तही बीच थारी नेने सुनयना आबि बेटाक आगूमे रखि ऐ आशामे ठाढ़ भेली जे थारीक वस्तु देख बेटा किछु बजबो करैए आकि शान्तचित्त खाइए। थारीक भोज्य-पदार्थपर रामरतनक मन नहि पहुँच अपन पत्नीक लीला देख तरैस रहैन छेलैन। बेर-बेर मनमे चकभौर उठि रहल छेलैन जे ई केहेन भेल! कहाँ धरि एकरा उचित कहल जा सकैए? पचीस बर्खक लोक ओछाइन धेने रहए आ पचपन बर्खक अधवेशू दौड़-दौड़ काज करए! रामरतनक मन ठमैक गेलैन। किएक तँ भोजन करैसँ पहिनेजँ कोनो बिगड़ल बात मुहसँ निकालब तँ हो-न-हो ओ बात मोनि फोड़ैत धार जकाँ बहए ने लगए। जखने फुटल मनक धार बहत तखने भोजन गड़गट भऽ जाएत। गरगट भेने समुचित रूपमे ने भोजन क्रियान्वित हएत आ ने मनेक तृप्ति भऽसकत। मुदा लगले रामरतनक मनमे ईहो उठए लगलैन जे अनुचितकैँ सोझमे देख चुपचाप रहबोकैँ तँ नीक नहियेँ छी। मुदा नीक केनिहार लग अधला केनिहारक पर पीतो केना फेकल जाए। जखने पीताएल मनक पीत फेकब तँ ओकरा पड़बे ने करत। तोहूमे घरक चौकीपर पत्नी पड़ल छैथ। जखने किछु बोल मुहसँ निकलए लगत कि आरो केबाड़ सरका लेती जे माए-बेटाक बीचक बात छी, ऐमे पुतोहुकैँ कान झाँपि लेबा चाही...।

असमनजसमे विचारैत रामरतन बजला-

"माए, हमरा ई नीक नइ लगैए।"

रामरतनक बजैक क्रम पत्नीक क्रिया दिस रहैन जे सुनयना नइ बुझि पेली। हिनकर नजैर थारीमे परोसल भोज्य-वस्तुपर अँटकल रहैन। तैबीच 'हमरा ई नीक नहि लगैए' सुनि माए बजली-

"बौआ, अपन घरक अन-तीमन केतबो अधला हएत तँ अनका घरसँ नीके हएत।"

माइयक बात सुनि रामरतनक मनमे उठलैन जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल, गोला फकलौं पाकल आमपर आ चलि गेल बगुरपर जे तोड़ि अनलक बगुरक काँट! मनकेँ मारि रामरतन भोजनक बाद तीनू गोरेकेँ एकठाम बैसा अपन बात रखैक विचारमे आगूमे आएल विचारकेँ चौपैत रखि बजला-

"माए, अपन गाम-घरक जे अन-तीमन अछि ओ परदेशक थोड़े हएत। केहेन बढ़ियाँ तरकारीमे बाड़ीक हरदीक रंग रन-रन करैए। शहर-बजारमे ते कँचका ईटाक गरदीमे रंग मिला हरदी बनबैए आ मिरचाइक जगह एसिडमे लोक मिरचाइक गुण तकैए।"

रामरतनक विचारक मोड़ सुनयना नहि बुझि पेली, मुदा अन-तीमनक प्रशंसा तँ सुनबे केली तँए मुस्कियाइत बजली-

"बौआ, हम सभ गाम-घरमे रहैबला छी, मारि-घुसि कऽ एक बेर दिनमे आ एकबेर रातिमे खाइ छी। मुदा तूँ सभ ते शहरूआ-बजरूआ भेलह, दस बेर चाहो पीबैत हेबह आ दस बेर नस्तो-पान तँ करिते हेबह। तँए कम्मे-कम्मे वौस छह,जे किछु घटह से कहिहह।"

बलाएकेँ टारैत रामरतन बजला-

"कोनो आनठाम छी जे खाइमे लाज-धाक हएत। जे घटत से माँगि लेब।"

परिवारक काजमे रमल-समल सुनयना किए बात-चीतमे ओझरैतैथ तँए ऐठामसँ ससैर गेली। ओना, काज दिस तँ सुनयना ससैर गेली मुदा कानकेँ कनसोहक बेटापर जगौने रहली। यएह ने भेल सजगता। अहीले ने दुनियाँ हेरान अछि।

रामरतनकेँ भोजनक अप्पन अन्दाज छैन जे कोन समैक भोजन केते मात्रामे करी, ई अन्दाज रामरतनकेँ विद्यार्थीए जीवनसँ रहल छैन। ओना, अपना मिथिलांचलमे एहेन अन्दाज पबैमे थोड़ेक असुविधा जरूर अछि, मुदा से अछि सामुहिक भोज आ अनठामक भोजनमे। किएक तँ शुरूक परोसमे पहिने ओतबे भोज्य-वस्तु परोसल जाइए जइसँ भोजनक शुरूआत हुअए आ पछाइत एका-एकी दर्जनो विन्यास परोसल जाइए। मुदा परिवारमे तँ निमाहले जा सकैए,जैठाम प्रतिदिनक भोजन होइए। रामरतन ईहो अन्दाजि लेलैन जे उचित मात्रामे परोसल गेल अछि। उचित मात्राक अन्दाज रहने रामरतन रसे-रसे भोजनो करए लगला आ रसे-रसे पत्नी आ माइक लीला सेहो देखए लगला। ओना,सुनयना सजग छैथ तँए दोसर काज करितो बेटाक भोजनपर सेहो सजग छेली, तँए कनी हटल रहनौं बीच-बीचमे बजै छेली-

"बौआ, हम केतौ अनतए नइ छी, तूँ असथिरसँ खाह।"

ओना, माइक बात रामरतन अधसुन सुनै छलाकिएक तँ अपने भोजनो जे करै छला तहूपर धियान नइ छेलैन। धियान छेलैन पत्नी आ माइक लीलापर। जखन पत्नी आ माइकेँ फुटा-फुटा देखए लगला तखन पहिल नजैर माएपर गेलैन। माएपर नजैर उठिते रामरतनक मनमे उठलैन जे जहिना माए सदिकाल परिवारक काजमे सटल चलि रहल छैथ तहिना पितो तँ छथिए, तैबीच मोटा-मोटी अपनो सएह छी।मुदा तैबीचमे पत्नीक बेवहार एहेन किए बेदरंग[i] छैन?जखन कि सियान ओहो भऽ गेली तखन सियनपन कहिया औतैन?

लगले रामरतनक मन छिटैक परिवारिक बनाबटपर गेलैन। जइ तरहक अखन अपन परिवारक बनाबट भऽ गेल अछि तइ अनुकूल तँ ओहो ठीके-ठाक छैथ, मुदा..?

'मुदा' लग आबि रामरतनक विचार चकभौर लेलकैन। चकभौर लइते विचार छिटकलैन जे दिल्लीक लेल भलेँ पत्नी ठीक छैथ मुदा गाम लेल केना ठीक कहल जाए?पहाड़सँ गिरैत जलधार समतल जमीन होइत समुद्रमे विलीन होइए मुदा मनुखक जिनगीमे किए एकर अभाव भऽ जाइए? जरूर केतौ-ने-केतौ विषम कारण अछि। ई बात सत् जे मनुखक शरीर जलधार जकाँ नहि अछि, मुदा मनुखक ज्ञान-शक्ति तँ जलधारोसँ जलधार अछि माने पानियोँसँ पातर अछि, तखन ओ किए ने सर्व-हिताइ भऽ पबैए? विचारकेँ समेट उसारि रामरतन भोजन केलैन। भोजन केला पछाइत जखन ओछाइनपर आराम करए गेला तखन पत्नीक विचार पुन: जगि गेलैन।ओना, दिनमे सुतैक अभ्यास रामरतनकेँ नहि छैन मुदा विचारमे थाकल मन सुतैले मजबूर केलकैन। विचारमे उलझल मनकेँ ओछाइने धरब नीक होइतो अछि। किएक तँकाजक दौड़मे अधला होइक सम्भावना भइये जाइए, तीनकेँ तेरह आ तेरहकेँ तीनक परेखक बीच मन फँसि जाइए।

ओछाइनपर रामरतनक देह तँ पड़ि रहलैन मुदा मन माता-पितासँ पति-पत्नीक संग परिवारमे दौड़ गेलैन। दौड़ते उठलैन- दुनू बेकतीमाने पति-पत्नी, परिवारक ऐगला सृजक तँ छीहे। तैठाम जँ पैछला पीढ़ीक गुण-धर्मकेँ अङेज नहि लेब, तखन विषम परिस्थितिकेँ सम केना बनाएब? एक दिस भविस अछि तँ दोसर दिस भूतो तँ अछिए, तैबीच तँ अपने सभ ने वर्तमान भेलिऐ।

पत्नीक परिवारपर नजैर पहुँचते रामरतनक मन दुनू परिवारक भूत, वर्तमानआभविसक क्रिया-कलापपर गेलैन। अपन किसान परिवार रहल अछि आ पत्नीक पिता नोकरी करै छैथ जइसँ हुनकर परिवार नोकरिहाराक रूप पकैड़ नेने अछि, जेकर उपज पत्नी छैथ...।

ऐठाम आबि रामरतनक विचारमे सिकुड़न तँ एबे केलैन जे तैसंग फैलाव सेहो एलैन। परिवार छोड़ि गामसँ निकललौं। जहिना पिताक अनुकरण–मरदा-मरदी, काजक–अपने करितौं तहिना माइक अनुकरण तँ पत्नियो करबे करितैथ। मुदा से भेल नहि। लगले रामरतनक मनमे दुनू परिवारक माने नोकरिहाराक आ गामक किसान परिवारक सिकुड़न-फैलावक बीच फँसि गेलैन। मनमे उठलैन- धारक बीच जहिना पानिक घुमाव होइए तहिना तँ परिवारिक काजक बीच सेहो मनक घुमाव होइते अछि। घुमावो केना ने हएत? गामक परिवारमे अनेको दिशा अछि। बेकतीसँ लऽ कऽ परिवार होइत समाज धरि। जइमे परिवारजन अपन समय आ क्षमताक अनुकूल अपनाकेँ पीरो लइए, मुदा नोकरिहाराक तँ से नहि अछि। ओ तँ नोकरीक अनुकूल अपन समय आ शक्तिकेँ ओइ अनुकूल बना लइए। तहूमे नोकरीक काजक बान्हल समय अछि। ओना, कहैले बान्हले अछिमुदा ओ बान्हल-खुजल दुनू अछि। सरकारी काम-काजक संग कारखानाक काज आठ घन्टा बान्हल अछि मुदा कारखानोमे ओभर टाइम आ बिनु कारखानोक परिवार वा अन्य अनेको तरहक काज एहनो तँ अछिए जे नोकरीदाताक अनुकूल करए पड़ैए...।

रामरतन जेतेक विचारक तहमे जाइ छला तेते मनमे ओझरौठ बढ़ल जाइ छेलैन। मुदा मनमे पत्नीक प्रति जे भरास उपैक गेल छेलैन ओ पूर्ववते छेलैन। कछमछ करैत रामरतन घन्टा भरिक पछाइत ओछाइन छोड़िमुँह-कान धोइते छला कि मनमे उठलैन- पत्नी आ माइकेँ एकठाम बैसा गप-सप्प करब नीक नहि हएत। किएक तँ जहिना गुलाबक संग अपन पतिक रूपक सम्बन्ध अछि तहिना माइयोकेँ ते सासु-पुतोहुक सम्बन्ध छैन्हे। तैसंग दुनू माय-पुतक विचारो तँ निर्णित नहियेँ अछि जे एक राय बना बाजब। जइसँ विचारमे भिन्नता एबाक सम्भावना अछि। जँ हम कोनो विचार पत्नीकेँ अनुकरणीय रूप कहबैन आ माइक जँ अनुकरणीयपर सँ धियान हटि अपन बेटा-पुतोहुक सुख-भोग दिस बढ़ि जाइन तखन तँ अनेरे दुनू गोरेक विचारोमे द्वन्द्व शुरू भऽ

जाएत, जइसँ जे मनमे अछि, से नहियेँ हएत। तँए नीक हएत जे माएकेँ छोड़ि पत्नियेकेँ किए ने चेतौनी रूपमे कहिऐन...।

रामरतनक मनक विचारमे थीरपन एलैन। तही बीच गुलाब सेहो चाह नेने पहुँचली।

चाह देख रामरतनक मनमे उठलैन जे बिनु चाह पीने जँ गप-सप्प चला देब तँ हो-न-हो क्रोधमे चाहे पीब गड़गट भऽ जाए। तइसँ नीक जे पहिने दू घोंट चाहे पीब ली। चाह पीब रामरतन बजला-

“अहाँ तँ बुझै छी जे परिवार अपन छी, परिवारक सभ कियो अपने छैथ, तैबीच अधबेसू माए जे दौग-दौग काज करै छैथ आ अहाँ बिजली-पंखा तर बैस टी.बी.मे भारत-इंग्लैंडक मैच देखै छी, ई केहेन विचार भेल?”

ओना, अखन तक रामरतनकेँ पत्नीक परख नीक जकाँ नहि आएल छेलैन जे कोन रूपक जीवन-संगिनी छैथ। पति-पत्नीक बीचक जे आजुक परिवेश बनि गेल अछि ओ बहुआयामी बनि गेल अछि, जइसँ किछु-ने-किछु सभ प्रभावित भइये रहल छैथ। मुदा आयामोक तँ अपन ज्वाला होइते छइ।

जहिना रामरतन पत्नीपर शब्द-वाण फेकलैन तहिना गुलाबो शब्द-वाणकेँ रोकैत बजली-

“गाम एलौं हेँ माता-पिताक ऐठाम पहुनाइ करए आकि..?”

पत्नीक विचार सुनि रामरतनक मन क्रोधसँ भभैक उठलैन। बजला-

“अपना जे बुझि पड़ए मुदा हमरा नीक नइ लगैए।”

q

शब्द संख्या : 1458, तिथि : 19 जुलाई 2018

भारीपन भार बनि गेल

जिनगीक आधा उमेर[ii] बीतला पछाइत पचास बर्खक चेतनाननकेँ अपन चेतन-शक्ति बदैल गेलैन। चेतन शक्ति बदलने सोचनो-शक्ति आ क्रियो-शक्ति बदैल गेलैन। जइसँ चेतनानन अपने-आपमे समाहित भऽ गेला।

जेठ मासक बेरुका तीन बजेक समय, दरबज्जापर बैसल चेतनाननक मन अपन जिनगीक समीक्षा करए लगलैन। समीक्षाक दौड़मे विचार फुटलैन-

“भारीपन भार बनि गेल..!”

चेतनाननक मनसँ फुटि कऽ विचार बहरेबे कएल छेलैन कि पत्नी- बुधिवादिनी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, सभ दिनक चाह पीबैक अभ्यास चेतनाननकेँ सभ रंगक छैन। माने गरमी मासमे तीन बजे, मध्यमास– आसिन-कातिक आ फागुन–मे अढ़ाइ बजे आ जाड़क मासमे दू बजे बेरुका चाह पीब चेतनानन

दोसर उखड़ाहक काजमे लगै छैथ। अभ्यासक हिसाबसँ चाह पीबैक इच्छा समयपर जगिते छेलैन मुदा चाह पीबैसँ पहिने जे बदलल जिनगीक विचारक मथन मनमे उठि गेल छेलैन तइसँ चेतनानानक मन थोड़ेक ओझरा गेल रहैन। माने, चाह पीबैक जेतेक इच्छा आन दिन रहै छेलैन तइमे आइ थोड़ेक कमी आबि गेल छेलैन। चाह पीबैक इच्छा कमने पत्नीसँ गप करैक इच्छा सेहो कमि गेल छेलैन जइसँ आगूमे ठाढ़ पत्नीपर एक नजैर खिरा चुपचाप चाहक गिलास देखए लगला।

ओना, अपन बुइधिक ओकातिये बुधिवादिनीक मनमेविचार जगि गेल छेलैन जे भरिसक पति कोनो चिन्तामे पड़ि गेल छैथ तँए जेहेन मन उछटगर हेबा चाही से नहि छैन। फेर भेलैन जे किए ने पुछिये लिऐन जे मन खसल देखै छी। मुदा फेर भेलैन जे खसलो मनक (गम्भीर रूपमे) तँ अपन-अपन दिशा होइते अछि। माने ई जे एक खसब भेल जे कोनो संकटकेँ दूर करैले ओकर समधानल रस्ता खोजैमे खसैए आ दोसर होइए जे नीक जिनगी पेबा-ले भविसक बाट समधानि कऽ खोजबमे सेहो मन खसबे करैए। लगले बुधिवादिनीकेँ भेलैन जे जखन किछु बाजि नहि रहल छैथ तखन अनेरे मधुमाछी-छत्तामे गोला मारि कटाएब नीक नहि। तँए, अपन जे अखुनका काज अछि पहिने तेकरा मुसताजिसँ कऽ ली। जँ कोनो दुखो-तकलीफ मनमे हेतैन तँ एक्केबेर बिढ़नी जकाँ थोड़े हनहना उठता...।

चाहक गिलास चेतनानानक आगूमे रखि बुधिवादिनी पान आनए आँगन विदा भेली। जे काज चेतनानानकेँ सेहो सभ दिनक बुझले छैन।

चाह-पान पीला-खेला पछाइत जहिना चेतनानन अपन जीबनपट खोलए अपन विचारधारा दिस विदा भेलातहिना बुधिवादिनी सेहो अपन जीवनघट पार करए अपना घाट दिस विदा भेली। समुन्नत परिवारक जे घट-घटवारि होइए ओ जहिना चेतनानानकेँ बुझल छैन तहिना बुधिवादिनीकेँ सेहो बुझले छैन। ओ बुझब भेल जे परिवारक सभ जनकेँ अपन-अपन शक्तिक अनुकूल परिवारक क्रिया-कलापमे लागल रहब। जहिना कोनो घरमे अपन-अपन जगहपर वस्तु-जात सैंत कऽ राखल रहैए जइसँ एक-दोसरमे टकराइक सम्भावना नइ रहै छै, तहिना परिवारमे मनुखोक अछिए। जे किछु दिन पूर्व तक चेतनानानक परिवारमे नइ छेलैन मुदा आब से बात नइ रहलैन। आब परिवारक सभ कियो अपन-अपन परिवारिक दायित्व बुझि रहल छैन जइसँ एक-दोसराक बीच अढ़बै-चढ़बैक रस्ता बन्न भऽ गेलैन।

ओना, बुधिवादिनी अँगनाक काज दिस विदा भऽ गेली मुदा पतिक खसल चेहराक रूप देख मनमे विचार जगिये गेल छेलैन जे मन किए मलिन छैन? अर्द्धांगिनी होइक नाते दुनियाँमे जँ कियो लग[iii] छैन तँ ओ हमहीं ने छिऐन। जाधैर हमर सम्बन्ध नहि बनल छल, माता-पिता जीबैत रहथिन ताधैर ओ दुनू गोरे छेलैन, मुदा हुनका दुनूक परोछ भेने आ हमरा एने तँ सम्बन्धमे बदलाव एबे कएल। मुदा जखन मनमे कोनो तरहक परिवारिक उलझन आबि गेल होनि तखन जँ हमरा किछु नहि कहि मने-मन बेथित बनल रहता सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। विचार अबिते बुधिवादिनीक मनमे दोसर विचार टपैक पड़लैन। ओ टपकलैन ई जे जँ परिवारिक उलझन नहियेँ रहल होनि, समाजिक वा बेकतीगते कोनो रहल होनि, तखन जँ किछु नहियेँ कहलैन तँ ओ उचिते केलैन।

उचित अनुचितक बीच बुधिवादिनीक विचार समुचित होइते अपन काजमे लगि गेली।

पत्नीकेँ लगसँ हटिते चेतनानानक मनक जेना नि:साँस छुटलैन। नि:साँस छुटिते मनमे उपकलैन जे भने पत्नी लगसँ हटि गेली। लगमे रहितैथ तँ विचारमे बाधा उपस्थित करितैथ।

एकान्त होइते चेतनानानक मन साकांच भऽ सजगलैन। सजगिते अपन बीतल जिनगीपर नजैर निछोह दौड़लैन। की जीवन छल, की सोच-विचार छल आ आइ[iv] की अछि? आब तँ सोझ जीवन देख रहल छी जे दुनियाँमे जेतेक मनुख छैथ ओ सभ ने चाहि रहला अछि जे सोझ जीवन भेटए। मुदा सोझ जीवन-ले सोझ ज्ञानक

खगता अछि किने,जेकर प्राप्ति भेला पछातिये ने कियो सुखसँ सुखी बनैत आ अपन स्वतंत्र रूपमे शासनसूत्र अपनबैत जिनगीक धारमे बहए लगैए। ऐठाम शासनसूत्रक माने भेल, जिनका किनको जिनगीमे सफलता भेटल छैन हुनका मनमे ईहो तँ जगिये जाइ छैन जे असफल जिनगी जीनिहारकेँ सही दिशा देखबैत सही बाटपर आनि, कखनो आगूसँ बाँहि पकैड़ आगू मुहेँक विचारक बाट धराबी तँ कखनो खच्चा-खुच्चीमे लसकैत देख पाछूसँ बल लगा आगू मुहेँ ठेलैक परियास सेहो करी। जइसँ जे विचार सूत्र बनैए वएह भेल शासनसूत्र। जखने मनुखक जिनगीमे प्रकाशित मन स्वतंत्र बाटक शासनसूत्र पकैड़ चलए लगैए तखने ओ सफल जिनगीक आनन्दसँ आनन्दित सेहो हेबे करैए। जे चेतनाननकेँ आधा जिनगी बितला पछाइत भेलैन। मुदा आधा जिनगी जे बितल छेलैन ओ सोल्होअना उनटल छेलैन जेकर पछाड़सँ अखनो पछड़िये रहला अछि। अखन धरि जे समाजक बीच मनुखक निर्माण भऽ रहल अछि ओ समाजिक बेवस्थाक अनुकूल भऽ रहल अछि जइमे शासन बेवस्थाक भरपूर प्रभाव सेहो पड़िते अछि। खाएर जे अछिमुदा ई तँ हर जीवनमे अछिए जे परिवारसँ समाज धरि अपन भारीपन[v] बनल रहए। जे चेतनाननकेँ सेहो छेलैन्हे।

कौलेज तकक पढ़ाइ छोड़ला पछाइत चेतनानन स्वतंत्र जिनगी धारण करैक खियालसँ नोकरी दिस नहि तकलैन। ओना, अपनो परिवारिक सम्पैत ओतेक छेलैन्हे जे एक परिवारक जीवन-यापनक कोन बात जे तीनियोँ-चारि परिवारक जीवन-यापन भइये सकैत छल, जँ समुचित ढंगसँ समुचित श्रमक उपयोग करितैथ, मुदा समाजिको परिवेश तँ परिवेश छीहे। एके-दुइये चेतनानन समाजक बीच सेवाक रूपमे बिआह-दान, श्राद्ध-मुड़नक संग पूजा-पाठमे आगू बढ़ए लगला। जइसँ किछु-किछु समाजक बीच जन-मतो आ जन-संघो बनियेँ गेल छेलैन। जखने जनमत, जनसंघ बनत तखने राजसत्ताक शिकारी सभ अपना-अपनीकेँ हथियाबए चाहिते अछि। शुरुहमे तँ चेतनानन अबूझ-अबोध जकाँ छला, तँए एक्के पक्षक बीच पहुँचला मुदा कनी आँखि-पाँखि भेने आब दोसरो-तेसरोसँ सम्बन्ध बनबए लगला अछि। जइसँ भीतरे-भीतर भलेँ बहुरूपिया बनि रहल होथि मुदा ऊपरसँ (देखौआ) तँ समाजक अगुआएल लोक भइये गेला किने। जँए अगुएला तँए सबहक बीच पूछ सेहो भेलैन। तहूमे मनुखक पूछ। ओना, जानवरक पूछ भलेँ माछी-मच्छड़ रोमैबला किए ने हुअए मुदा मनुखक पूछ तँ से नहियेँ छी, मनुखक पूछ तँ मनुखकेँ भरियेबे करैए। जखने मनुख अपन भारीपन देखैए तखने ने अपन जिनगीक सफलताक भान ओकरा होइ छइ। जे पबिते मनुख सुरसा (रामायणिक) जकाँ हनुमानसँ दोबर रूप अपन देखैबते अछि।

पचास बर्ख बितला पछाइत चेतनाननक विचारमे जहिना बदलाव एलैन तहिना सोचै-बुझैमे सेहो एलैन जइसँ जीवन पद्धति सेहो बदलिये रहल छेलैन।

ओना, चेतनानन गामक चौकपर साँझ-भोर चाह पीबैक बहन्ने सभ दिन जाइ छैथ जइसँ भरि दिनक गामसँ दुनियाँ तकक उड़न्ती समाचार साँझू पहरकेँ भेट जाइ छैन आ भरि रातिक समाचार भोरमे भेटिये जाइ छैन। समाचारकेँ समाचार जकाँ चेतनानन एकहरफी सुनि लइ छैथमुदाओइपर अपन कोनो टीका-टिप्पणी वा राय-विचार नइ दइ छथिन। तेकर कारण ई अछि जे ओ नीक जकाँ बुझए लगल छैथ जे जहिना रेडियो-अखबारक उड़न्ती समाचारकेँ आरो उड़न्ती आ फुड़न्ती-सुड़न्तीकेँ आरो फुड़न्ती-सुड़न्ती समाचार बना बँटिते अछि। जइसँ ओकर असलियत रूप झँपाइये जाइ छै, तँए टीका-टिप्पणी मात्र बातकेँ बतंगर बनाएब छोड़ि आर किछु ने रहैए। मुदा समाजक धारासँ अपन मुहोँ बन्न कए राखब तँ उचित नहियेँ भेल। जेकरा पुड़बैले चेतनानन चौकक उड़न्ती समाचारक नाँगैर पकैड़ नेङड़ियबैत घटनाकेँ घटित बेकती लग पहुँच अपन विचार रखए लगला अछि।

आइ भोरमे जखन चेतनानन चौकपर पहुँचला कि एक गोरे चाहक गिलास आगू बढ़ा देलकैन। चाह देख चेतनानन बुझि गेला जे भरिसक कोनो काजक भार ऊपर औत। मुदा बिनु कहने मानियोँ लेब तँ उचित नहियेँ हएत। चाहो पीबए लगला आ आँखि उठा-उठा ओकरोपर नचबौ लगला जे मुहसँ की निकलै छैन। आधा गिलास चाह जखन चेतनाननक ससैर कऽ पेटमे चलि गेलैन तखन राधारमण बाजल-

"चेतन भाय, अहाँसँ एकटा भारी काज अछि..!"

काज तँ काज भेल, मुदा 'भारी काज' की भेल? बिनु बुझने चेतनानन बजला-

"काज तँ काज भेलओ भारी की हएत?"

राधारमणक मन मानि गेलैन जे काज हेबे करत। बाजल-

"भाय साहैब, इण्टरमे बेटा फेल भऽ गेल हेन, दिन-राति घरमे पेटकान लाधि कनैत रहैए, तीनियेँ दिनमे मरैमान भऽ गेलअछि ने किछु खाइए आ ने पीबैए। से कनी यूनिवर्सिटीक काज सल्टिया दिअ।"

चेतनानन-

"बच्चा पढ़ैमे केहेन अछि?"

राधारमण-

"हाइ स्कूलमे सब दिन फस्ट करैत रहल। मैट्रिकमे सेहो सत्तैर प्रतिशतसँ बेसीए नम्बर आएल छेलइ।"

राधारमणक बात सुनि चेतनानन बजला-

"अच्छा..!"

मदनानन सेहो चाहेक दोकानपर छल। चेतनाननक मुहसँ 'अच्छा' सुनि अपन नम्बर लगबैत बाजल-

"चेतन भाय, हाइ कोर्टक काज हमरो बजैर गेल अछि।"

चेतनानन पुछलखिन-

"की?"

मदनानन-

"दुनू भैयारीमे जमीनक विवाद अछि, डिस्ट्रिक कोर्टमे केस चलै छल, एकतरफा जजमेन्ट भऽ गेल, सैह...।"

गप्पक क्रममे चेतनानन 'अच्छा' तँ कहि देलखिन मुदा जखन चाहक दोकानसँ घरमुहाँ भेला तखन आइ धरिक जिनगी चेतनाननक नजैरपर नचलैन। अपन पैछला पचास सालक जिनगी ओहन दिशाहीन भऽ गेल जे टुटि-टुटि खसि-खसि ओतेक नीचाँ खसि पड़ल जे ओकरा सम्हारि कऽ आजुक सीमापर आनब कठिन भऽ गेल अछि।कहुना-कहुना अपन जिनगीकेँ समयक पटरीपर चढ़ा चलबए चाहै छी, सएह ने पार लगि रहल अछि। तैठाम अनकर काज सम्हारब तँ आरो जपाल भइये जाएत। अपना दिस जखन तकै छी तखन बुझि पड़ैए जे ओतेक अधला वृत्तियो आ विचारो अपना अपन जीवनक गाड़ी दौड़ेलौं जे नर्कक अट्ठाइसो भोगक अधिकारी बनि गेल छी, तेकरा पुराएब आ कि..?

घरपर पहुँचते चेतनाननक नजैर बुधिवादिनीपर पड़लैन। ओना, बुधिवादिनियोँ चेतनेननक रस्ता तकै छेली। नजैर पड़ि चेतनानन बजला-

"भारीपन भार बनि गेल अछि।"

अपने बोझक तर दबाएल पतिक बात सुनि बुधिवादिनी किछु ने बजली।

q

शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

---

[i]बेदराक रंग माने बालपन-रंग

[ii]साए बर्खक आधारपर

[iii]नजदीक

[iv]पचास बर्खक पछातिक

[v]गुरुआइ वा गुरुत्व

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३. पद्य

१.अरुण लाल- ६ टा क्षणिका आ ३ टा कविता २. नन्द विलास रायक किछु कविता ३.संतोष कुमार राय 'बटोही'- दू टा कविता

१

अरुण लाल

६ टा क्षणिका आ ३ टा कविता

१.

हास

ठमकि गेल छी

तहिये स' हमरा मन मे

अहाॅक उनमुक्त हॅसी छल

वा परिहास

थाह कहाॅ लागल

हम तं सूरदास , मन मे

अंटबैत रहलौं

सुनैत रहलौं अहाॅ केर हास .

२.

खास

लोक तं सड़को पर

मरैत अछि वा

स्वाभाविक मौत सेहो

मुदा ककरो मन मे

पइस क' जे मरैत अछि

ओ मौत ओकरा

बनबैत छैक खास .

३.

बात

शब्द ब्रह्म होइत छै

जॅ निकलि गेल मूॅह स'

अनायास

जॅ सोचि -बिचारि क'

संधानि- तानि क' बजलौं

तं तीर जकाॅ चुभैत छैक

भ' जाइत छैक बात

४

तेसर नयन

क्यौ नञि अपन

बढि रहल सबतरि

अश्लीलताक प्रदर्शन

दिन दूगुना राति चौगुना

असहज सब घटना

हे त्रिलोचन !

खोलू अपन तेसर नयन .

५

उफाइंट

जिनगी जँ भेल उफाइंट

भांजब कतबो गोटी

नञि हएब लाल

लागत पवन्नी

मन पर स हटाउ गदाॅ

नञि त कोरैत रहू माइट

६

शूल

ककरो जिनगी

मे शूलहि शूल

ककरो जीवन कते समतूल

ककरो ब हिस्से बराबर

ककरो हिस्से बराबर

कविता

१

घर

घर त' सबदिन

जाइत छलौं

हम ,

बस स उतरि

राति के बारहो बजे

निभी ॅक भेल झटकि क'

एक पेरिया

खुरपेरिया

बाट पकरने, पकरने

थाल कीच पिछ्छड़ मे

बरखा पानि बुन्नी के

सामना करैत

टह टह रौद मे

घामे पसीने नहाइत

पूस माघक राति मे

सदी ॅआयल ठिठुरैत

कनकनाइत

अन्हरिया वा होइ

इजोरिया

मुदा एक राति

ठकमुरिया लागि गेल

थकमका गेलौं ,

आब कत' जाऊ

कि बाजू

ककरा शोर करू

के सूनत

नदी के बेग मे

विलीन भ' गेल घर

हमरा स कत्ते दूर

भ' गेल घर,,,,,.

२

जीब लए छी हम

(ई रचना अपन छोटकी

बेटी आभा कें समर्पित

केलहुं।)

हंसैत हंसैत कले बले

जीब लए छी हम

जीवन जं एक जहर छै

तं पीब लए छी हम

अहांक सतरंगी दुनियां

अहां कें मुबारक बहुत

हमर फाटल जं चादरि

अपन सीब लए छी हम

खसा क' देखलौं बहुत

कोनो छोड़लौं नै दाव

मुकाबिला केर शअख

एखनो रखने छी हम

प्रेम स्वर्गॆहु स' कम नै

करै छी अगर सांच मे

कहियो सोचब ई बात

आई कहैत छी हम

हम हंसी वा कानी

मतलव की अछि

अरैज लए छी ओतबा

जतेक चाहैत छी हम

दोख हमरे गिनाबी

से कोनो बात ने

अहांक लचरल हंसी

पर हंसैत छी हम

३

प्रेमक बाट

प्रेम एकांत भेल
चुपचाप गबदी मारने
अपलक निहारैत मगन भेल कात

मिलिन्द माली के आहट मे ,
घुरिया घुरिया
तकैत रहल बाट
कांट मे ओझरायल
गुलाबक कली
मने मन प्रस्फुटित
होयबाक उमंग मे नाचि रहल
उझकि उझकि उठा
रहल गरदनि
निहारि रहल अपन
सौंसे शुभ्र देह
लोबान केर खूशबू
जेना पसरि गेल
कली सब गमकि उठल
अभिसारक आतुरता मे
माली स' लगा रहल गुहारि ,
मुदा, बसंत एखन कहाॅ आयल

-अरुण कुमार लाल दास, विद्यापतिनगर मधुबनी

२

नन्द विलास रायक

किछु कविता

इन्दिरा आवास

एक दिन मुखियाजीक चमचा एलैथ
ओ हमरासँ हाथ मिलौलैथ
हम हुनका कुर्सीपर बेसौलयैन
प्योर दुधक चाह पियौलयैन
खैनीमे चुन मिलेलौं
अपनो खेलौं हुनको खियेलौं
खैनी खा कऽ ओ बजला

अपना एबाक भेद खोलला।

बड्ड मोसकिलसँ मुखियाजीकेँ मनेलौं हेन
अहाँक नाओं हुनका डायरीमे लिखेलौं हेन
ओ कहाँ मानै छला
अहाँकेँ कहाँ जानै छला
जँ करेबाक हुअए काम
तँ जल्दी करू इन्तजाम
जुनि करू सोच-विचार
लाउ टका पाँच हजार
नहि तँ दोसरो अछि तैयार
मुदा अहाँ अपन छी खास
अहाँपर अछि पूरा बिसवास
दियाएब अहाँकेँ इन्दिरा आवास
की यौ अहाँकेँ नहि लागल
हमर बात रास।
ऐ बकलेल बनि जाएत
मोफतमे अहाँकेँ मकान
भऽ जाएत धिया-पुताक कल्याण
समाजमे बढ़ि जाएत अहाँक मान
अहाँ बुझब एकरा अपन शान
जँ हमर गप्प अहाँकेँ कनीको पसीन अछि
तँ जल्दी करू भैया किएक तँ समये चन्द अछि।
नहि तँ बादमे बड्ड पचताएब
आ हमर दिमाग खाएब
मुदा हम की किछु कऽ सकब
अहाँकेँ की किछु दऽ सकब।

आखिर हम चमचाजीक बातमे एलौं
महाजन लक्ष्मी भैयाक ओइठाम गेलौं
हम केलिऐन हुनकासँ अर्ज
यौ महाजन दिअ हमरा पाँच हजार टका कर्ज
लऽ लिअ कागजपर औंठा निशान

मुदा टाका करू जल्दी भुगतान।

महाजन लक्ष्मी भैया बजला-
ई लिअ रूपैआ करू अपन काम
समयेपर आपस करब
नहि तँ भऽ जाएत अहाँक महींस नीलाम।

हम देलिऐन चमचाजीकेँ टका पॉंच हजार
ओ मुस्की दैत भऽ गेला
फटफटियापर सवार
हम केतेको बेर ब्लॉकक चक्कर लगेलौं
मुदा आइ धरि इन्दिरा आवासक
राशि नहि पौलौं।

ब्लॉक दौड़ैत-दौड़ैत हमर चप्पल घिसल
ओमहर महाजनक टाका
आपस करबाक समय बीतल
हम चमचाजीसँ कहलयैन
अपना बोलीमे साए मन मिश्री घोरलयैन
यौ नेताजी, अन्नदाताबड़का बौआ
कृपाकय आपस कऽ दिअ
हमर पॉंच हजार ढौआ
मुदा ओ करए लगला टाल-मटोल
किएक तँ हुनकर नेति छेलैन
करब पॉंच हजार टाका गोल
हम सोचलौं जे हमरा ठकलक
आ हमर महींस नीलाम करौलक
ओकरो बिगाड़ि दिऐन खेल
आ चमचाजीकेँ पहुँचए दिऐन जेल
मुदा हम ई काज नहि करि सकलौं
चमचाजीसँ लड़ाइ नहि लड़ि पेलौं
किएक तँ आजादीक आइ
72म बर्खक बादो हमरा

जकाँ गरीब असहाय अनाथ छै
जखन कि चमचाजीकेँ माथपर
एम.एल.ए; एम.पी.क हाथ छै
आखिर हमर महींस भऽ गेल नीलाम
नहि बनि सकल हमर मकान
बिगड़ल हमर सभ काम
दूध बेचि कऽ करै छेलौं गुजर
आब जीरी रोपैले
करै छी पंजाब प्रस्थान।q

मिथिलाधाम

जहाँ बहै कोसी, कमला, वागमती, वलान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन नहि आन यौ
छैन मण्डन, अयाचीक बड्ड नाम यौ
विद्यापति केर धाम यौ
पावण मिथिला धाम यौ।

जैठाम सीता सन भेली नारी
छला राजा जनक सदाचारी
आओर पाहुन छेलखिन श्री राम यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन नहि आन यौ
पावण मिथिलाधाम यौ...।

छैथ सखड़ामे माए सखेश्वरी
आओर ठाढ़ीमे परमेश्वरी

जैठाम बरहम बाबा विराजैथ गामे-गाम यौ
मिथिला सन नहि आन यौ
पावण मिथिलाधाम यौ...।

जैठाम आर्द्रा, चौठचन्द्र, जीतिया
भाए-बहिनक स्नेहक पाबैन अछि भातृ-द्वितीया
जैठाम कोजगराकेँ बड्ड नाम यौ
बँटैथ पान-मखान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन...।

नेहरा, सरिसव आओर पोखरौनी
कोयलख, पिलखवाड़, मंगरौनी
ओइठाम पैघ-पैघ भेल विद्वान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन...।

जैठाम नामी माछ-मखान
आओर अछि फलक राजा आम
जैठाम जमाएकेँ बुझल जाइए भगवान यौ
आओर पाहुनकेँ भेटए सम्मान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिलासन...।

जैठाम कियो नहि भेटत लफंगा
सबसँ नीक शहर दरभंगा
ओइठाम पैघ-पैघ दोकान यौ
भेटत सभ समान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन...।

मिथिला पेटिंग मधुबनीकेँ दुनियाँमे बड्ड नाम छैक

खादी भण्डार मधुबनीकैँ भाँति-भाँतिक काम छैक
जैठाम मानव सेवा करब सभसँ बड़का काम यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
भेला ललित बाबू सन नेता
मिथिलाक सच्चा बेटा
विकासक खातिर देलखिन अपन प्राण यौ
मिथिला...।

मिथिला विभूति सूरज बाबू सन पैघ-पैघ भेला नेता
अजादीक लड़ाइ लड़बामे
रसिक, अनन्त, गुरमैता
देशकैँ अजाद करबामे
ऐ धरतीकैँ बड्ड योगदान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन...।

मिथिलाक कला, मिथिलाक साहित्य
मिथिला केर संस्कृति नीक
फूसि ने बाजब दान करब
ई मैथिलकैँ प्रवृति थिक
अन्न, वस्त्र वर्तनक संगे
करै छैथ लोक गोदान यौ
पावण मिथिलाधाम यौ
मिथिला सन...।

बड्ड मधुर अछि सुनब बाजबमे
मिथिलाक मैथिली भाषा
मिथिलाक विकास हुअए खूब
हमरो अछि अभिलाषा
मिथिलाक विकासक खातिर
हमहूँ देब योगदान यौ
पावण मिथिला धाम यौ

मण्डन अयाची केर छैन बड्ड नाम यौ
विद्यापतिक धाम यौ। q

जनता

अखन जनता सुतल अछि
मुदा ओ भूखल अछि
भूखलमे निन्नो
की होइ छइ
तँए ओ जागत
आ बाजत
बाजत अपन अवस्थापर
करत प्रहार
वर्त्तमान बेवस्थापर। q

ढौआ- 1

समयक संग लोकक
बदैल जाइत अछि
बेवहार
आन तँ आने छैथ
बदैल जाइ छैथ
अपनो रिश्तेदार।
यएह अर्थक युग छी
भाय यौ,
जँ ढौआ नै रहत
संगमे
तँ नहि चिन्हत
अपन जिगरी यार।

३.

संतोष कुमार राय 'बटोही'

दू टा कविता

1. गामक दुर्गा मंदिर

गामक लोकनि कँ सोच पर

हँसी आबि रहल अछि आइ

की उचित आओर की अनुचित हेतै

कियो नहि कहनिहार आब रहलै

सरिपहुँ सभ कियो मद्य पीने छथि

गाम मौगिया गेल छै

सभ किछु मे राजनीति

नीक नहि होएत छै

श्रद्धा सँ पैघ

किछु नहि होएत छै

पूजा कँ पूजा रहअ दियौ

फुसियौंह मे गामक बँटवारा

जुनि करू

गामक इज़्ज़त माटि मे

नहि मिलबियौ बाबू-भैय्या

गामक संस्कृति कैं बँटनै

गामक आत्मा कैं हरण करनै जँका छै

इ ज़मीन किनकर छियैन्ह

जखन सभ कियो कैं टिकट कटले छन्हि

फसाद करनै कोनहु नीक गप नहि छियैए

सभ कियो इएह माएक संतान छी

माएक मंदिर जुनि बँटियौ।

2.गाम-घरुआ

गामक तीसी सेहो अमरित लगैत छै

नवका धानक चिउरा आओर गुँड़

मुनगा आओर बरहरक फूलक तरकारी

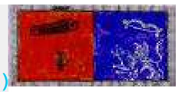
पोठी माछक संग मरुआक रोटी

बथुआ साग आओर मूरही

तुलसी-फूलक खीरक जवाब नहि

आउ भाई,मिल-बाँटि क' खाउ

जिनगी केर कोन ठिकान



सभ किछु सोहनगर छै

अपन महिंंषक दूध आओर घी

पोखरिक मखान

आम,जामुन,कटहर,गुल्लैर

सभ किछु अपन छी

जीभ सँ पानि टपकैत अछि

करब-त-करब की परदेश ओगरने छी

परञ्च हम सरिपहुँ गाम-घरुआ छी।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम-मंगरौना, पोस्ट-गोनौली, थाना-अंधराठाढ़ी, अनुमंडल-झंझारपुर, जिला-मधुबनी, बिहार-847401

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

प्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

आहत अगस्त

भारत देशक धरती करुणित
शहीदाञ्जली दऽ प्रणमए हस्त।
धुजातिरंगा दुलरैत बाजए
अछि एखनो आहत अगस्त।।

चहुँदिशि गूंजए पन्द्रह अगस्त
नेना-भुटका संग-लोक व्यस्त
आजाद हिन्द भए रहल त्रस्त
स्वारथ सह-सह देखैछ मस्त
तैं अछि आहत पन्द्रहअगस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

अछि जन प्रतिनिधि मौका परस्त।
भारत मिथिला अछि अस्त-व्यस्त।।
सत्ता सेवक खुशहाल मस्त।
कोन भष्ट पतिक अछि वरद हस्त।।
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

किछु संविधान सुख अछि निरस्त
मर्यादित अछि-फिरका परस्त
किए, आतंकी दिन-दिन प्रशस्त
राष्ट्रीयताकेँ देवए शिकस्त...।। 0।।

आशाक तिरंगा कोटि हस्त
झण्डोत्तोलन भए रहल सस्त
औ, सर्व धर्म समभाव पस्त
हाय, राष्ट्र पर्व केर उदय-अस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।
q

अधपेड़ियाक अखराहा

सतजुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग
सन जेकर नाम लेल
संसार वा जगतीक
संभार पर सवार भेल।
सृष्टिक अखराहापर
सभ्यता, संस्कृति केर बदलैत परिवेश संग
एक्खन धरि सवारी कसने अछि।
तैयो, तऽड़ पड़ल अछि मनुक्खक महत्त्वाकांक्षा
जुम्मुस बान्हि, कोनो ने कोनो दांवकेँ जुगतमे
कच्छ मच्छ करैत, घुसकुनियाँ मारैत अपस्याँत भेल
प्रत्यक्षदर्शी कँ उत्साह लऽ
कलजुगक क्रूरता सँ लड़ि रहल अछि
दोसर दिश, गब्दी मारने मूकदर्शी मण्डली,
असमर्थ.., अधमरू भेल जा रहल अछि
संस्कारक संवेदना...
दम्भीक दुर्भावी...
लङ्गड़पेंचमे हुकहुकाइत...
हारऽकेँ नाम नहि लऽ रहल अछि।
मुदा पछिमाही...
अंगरेजिया सेहन्ताकेँ पजियौने
शौक औ स्वादकेँ संगोरैत
हां हां, हीं हीं, मे रमैत...
अधपेड़ियाक गुनधुनी संग...
घरमुहाँ भेल जा रहल अछि।
धड़ामक गूंज सूनि... देखल,
कि अखराहापर लंगड़क धकेलसँ...
फेंकाएल अछि दुर्काल!
मुदा फेरसँ टलबाहि गूंजल,
दुन्नु दिशि, शुरू भेल फेरसँ 'कालयुद्ध',
आओर मुँहदेखुआ सभकेँ, गुफरा-गुफरी...

जाइत-जाइत, घुरि-घुरि देखए
कायर कापूत सभ, देखैत जाइत...
अधपेड़ियाक अखराहा...।।
q

यश-अपयश

केओ नाम कऽ गेलाह, केओ काम कऽ गेलाह
केओ धरना दऽ चक्कोकँ जाम कऽ गेलाह
केओ क्रान्ति शमन लऽए फुसराहैट कऽए
चुप्पा चोर जकाँ दुर्काल दऽ गेलाह
ओ के छलाह...।। 0।।

हमहूँ टुघरैत रही दुःखे कुहरैत रही
कोनो बैसाखी धऽ केहुना सम्हरैत रही
दैव जानए कोनो गौंआँ अनगौंआँ सन
कन्हा-कोतरा छलाह, गुम्मा भोतरा छलाह
से जानब अछि च्योट्टहि ओ के छलाह
ओ के छलाह...।। 1।।

केओ छड़ैपि आवि, हमरा सम्हारैत रहल
केओ सुधरलहा जिनगी कँ बिगारैत रहल
नेंगड़ा-लुल्हा जकाँ भाग्य भोगे मरी
आलसी-इर्ष्या-अपमान-रोगे मरी
जानवर आचरण केर गुम्हरैनीपर
आन रहितो मुदा ओ अप्पन भऽ गेलाह
ओ के छलाह ओ के छलाह...।। 2।।

गाम घरमे सदति लोक चरचा करए
गौंआँ-घरुआक पुरखौंती दिन-दिन मरए
नीक-बेजाए घड़ी केर हर हाल मे

लोक अपनेहि पड़ोसियोसँ सदिखन जरए
लोकक मनमे केहन लागल अगराही जे
हमरा धुकधुक्की छातीकेँ बढ़वैत गेलाह
ओ के छला...।। 3।।

बाट औ घाट केओ बिगाड़ैत रहल
ज्ञानी बाउर जकाँ बमकी दैत कहल
किछुयो सूझए कहाँ आब देखब कथी
अगवे दुर्दिन हँसए सुन्न कोठा महल
भाव-भाषाक अकबक्की कोनटा धएने
देखि कलजुग कहए काल पुरखा छलाह
गाम केर भलमानुष जकाँ ओ छलाह
काल पुरखा छलाह, गाम पुरखा छलाह।। 4।।

q

भक्तिक ढोंग

ज्ञान धरम घेंट जोड़ि कऽ कानए
बकुआएल भगवान यौ...
सगरो श्रद्धा भक्ति कनैए
मठ-मस्जिद संस्थान यौ...
ज्ञानी-पण्डित मुल्ला-साधु
बना रहल शैतान यौ...
सगरो श्रद्धा...।। 0।।

केना दाव-दावा चन्दासँ
मन्दिर मस्जिद बनए विशाल
जन मानसमे छल-बल बढ़बैत
भक्त संचालक करए कमाल
पूजा-पाठकँ भाव-प्रभावो

अगवे दुखनहुत भऽ गेल
मेला-उत्सव-समारोह सभ
दिनो-दिन अपयशिया भेल
मूर्ति भसानक बाऊर बमकी
डीजे डिस्को केर शान यौ
सगरो श्रद्धा...।। 0।।

देश औ लोक धरमसँ हटि कऽ
जेहादीक फतवा फरमान
सनक मिजाजी सतालोलुप
निरमावै आतंकी शान
इसकुलो-मकतबसँ कानैत
भागैए आब ज्ञान-विज्ञान
लवलाइटिस रोगियाहा लवगुरु
कएल कलंकित ज्ञान बथान
प्रार्थना आओर नमाज वृत्ति संग
हत्या-घृणा बखान यौ, सगरो श्रद्धा...।। 0।।

अहोश्री युगपति बुझनुक प्रियजन
आगत श्री युग देखैत कहू
सार्थक ज्ञान-विज्ञान सहारे
नाश बुद्धिकँ फेकैत रहू
शुभचिन्तक होऊ नव पीढ़ीकँ
पथ निर्देशक बनि बढ़ियौ
लोक समाजक श्रम-विधान संग
प्रीतम उपदेशक गढ़ियौ
जगत लोक मंगल पथ जोहए
खुखदा सांझ-विहान यौ, सगरो श्रद्धा...।। 0।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

राम विलास साहुक

किछु कविता

ठेँस

बाट चलैत लगल ठेँस
फुटि गेल पएर
ठेंगा ठेँगहैत
बाट चलै छी देख-देख
केना पहुँचब एतेक दूर
गाम-घर अछि दूर
पेटमे एगो दाना नहि
पियाससँ सुखि गेल
कण्ठ, मुँह-ठोर
ऊपरसँ चैतक रौद
गरम हवा लू चलैए
तबधल धरती फूटल पएर
बाटपर चलब केना
कोसक-कोस दूर
मन घबड़ाइत रहए
देह दइए जवाब
मुदा हमर कोन कसूर
ई तँ ठेँसक छी दोष
मुदा हम छी लचार
ई बाट बनल अछि
दुर्गम अगम अपार
ठेंगासँ ठेँगहैत चलै छी
तैयो लगैए बेर-बेर ठेँस
गीरैत पड़ैत भेलौं बेजान
बीच बाटपर तेजलौं प्राण। q

आजुक दिन- 2

आजुक दिन मनुख
कर्त्तव्यसँ चुकल अछि
अपनाकेँ बीरान आ
बीरानकेँ अपना बुझैए
तइसँ नीक तँ
जानवर अछि जे
जीवित आ मुइलोपर
सभक उपकार करैए

मुदा मनुख
एक दोसरकेँ
जानक दुश्मन बनल-ए
उचित अनुचित नै बुझि
आफदे-आफद कीनैए
आजुक दिन...।

आइसँ पहिने नीक
काल्हि की हएत
से के जनैए
अखनो विचार करू
वर्त्तमान किए बिगड़ल-ए
विज्ञानेटा नहि
इतिहासोकेँ देखियौ
दुनू मिला कऽ
अमृत बना कऽ
दुनियाँ लेल बाँटियौ
जरूरत अछि मानवकेँ सुधारियौ
देश समाज लेल
आजुक दिन...। q

धनक खातिर

धन कमेबाक लेल
सभक मनसा अछि
मुदा, ज्ञान कमेबाक
नहि जनैए कियो
माए-बाप परिवार छोड़ि
दिन-राति एक बनौने
परदेशमे खटैए
धनक खातिर।

ज्ञानक महत् जेना भूलि गेल
की उचित की अनुचित
नइ रहल कोनो ठेकान
धिया-पुताक जिनगी
बिगैड़ चौपट्ट भेल
परिवार-समाज सेहो छुटल
नइ रहल साविकक पहचान
सभ टुटि छिड़ियाए गेल

धनक खातिर।। q

शिवक नचारी

भोला अहाँ छी बड़ रूसना
कोठा महलमे मनो ने लगैए
वन-जंगल छी अहाँक अँगना
बाघ बघम्बर ओढ़ना-बिछौना
मृगछल्ला छी अहाँक पहिरना
भोला अहाँ छी बड़ रूसना।

दूध-मलाइ अहाँकेँ मनहु ने भाबैए
मेवा मिठाइ छोड़ि कऽघरसँ भागै छी
भरि दिन घोटबै छी भंग घोंटना
फूलक सुगन्धसँ दूरे रहै छी
आक-धूथूर भांग छी चखना
भोला अहाँ छी बड़ रूसना।

भरि दिन रहै छी धुनी रमौने
नाग साँपसँ भरल घर-अँगना
देह बनौने रहै छी भूतना
भरि दिन खाइ छी भांगक गोला
केना रहब हम एहि घर अँगना
भोला अहाँ छी बड़ रूसना।

सखी-सहेली मिलि हमरा लजबैए
पिया छौ तोहर केहेन भूतना
तोड़ासँ घोंटबै छौ भंग घोंटना
केना दिन काटब हे भोलेनाथ
केतेक दुख सहब तोरे संगे-ना
भोला अहाँ छी बड़ रूसना। q

दिनक दोख

दिनक कोन दोख?
दोख तँ लोकक छी
जे हरदम बदलैत रहैए
रीति-रिवाज विचारसँ
मौसम बदलैए

हवा-पानि-रौदसँ
रितु बदलैए समयसँ
ऐमे दिनक कोन दोख?
चान-सुरुज धरती नै बदलैए
कीए बदलैए लोकक इमान-धर्म
जँ दिनक दोख होइए
तँ पानि, दूध, खून
किए ने बदलैए
माए-बाप छोड़ि कऽ
जाति-धर्म बदलैए
ऐमे दिनक कोन दोख?
हँ, दिनक नाओं बदलैए
दिन-राति बितलापर
भोर-साँझ सभ दिन होइए
जे हेबाक छै होइत रहैए
ऐ अद्‌भुत प्रकृतिमे
सभ दिन एक समान
सत्य छी की झूठ
ऐमे दिनक कोन दोख?

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

मैथिल

नहि आबैत छनि शंख बजाब
घड़ी घन्टोसँ भैंट नै छनि
पूजा पाठ शास्त्र ज्ञान आओर
पूज्य अपुज्यक धियान नहि छनि।
मैथिल ओ मिथिला केर जिनका
रतियो भरि परवाह ने छनि
मिथिला केर मैथिल ओ कहावैथ

अपनो कूलक मान नहि छनि।

छोटकी-बड़की

छोटकी जँ बड अगराए

बूझू बाबू छथि पौगराएत।
बड़की सभ दिन चुलही निपए
छोटकी पान तमाखू खाय
हर बरदकेँ करए चाकरी
पनपियाए लऽ खेतो जाय
जो गए बड़की नेना कानउ
छोटकी नित्य सिनेमा जाए
मायक ममता देल हेराए।

आइ जेठकी केर बेटा बनि कऽ
सरिपहुँ लिलसा देलक पुराए
अपन माय बेमातर भेलए
बेमातर भेलए अपन माय
जनम जे देलकए गाम ओगरने
बड़की बेटा पाबि मुस्काय। q

घाघस

अथवल सोंच चलय गुड़कुनियाँ
देखनहुँ देखए ने देह
झूठहि मेघ देखावए घाघस
ओहिना करए ओ खेल।
बात करममे मेल कतहु नहि
करए घिनौना मेल
स्वार्थक पाछू अछि बताह ओ
कोना रहत कहु मेल। q

परम्परा

तिमिराच्छादित सकल शुभ चिंतन

डेग डेग गति रोधक
घटाटोप कज्जल बिच कखनहु
कोना मिलत शुभ शोधक
बाट घाट सभ अछि सकबेधल
परम्पराकैं बोधक
हमहूँ परम्पराकैं गछारल
ऊँच नीच बिच गोलक।
सभ दिन अहिना मिथिला रहलै
अपन बीच विष घोलक
अपन अपन सभ
पीठ ठोकैत जाऊ
भविष ने किनको छोड़त। q

राग

सुर बिनु राग रूप बिनु रचना
सकल पदारथ अछि कुरचना।
यामिनी गंधा फुलएल भकरार
गमगम गमकय बारिक अँगना।
चम्पा गुलाब फुलल फुलबारी
नाचए वृंतपर पाबि सुरचना।
मैथिल भाषाक सरस सुभाव
तें संसारक बनल अछि गहना।
रागमे बान्हल सोहर समदाऊन
सुख दुख वर्णित मैथिल बयना।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

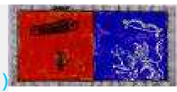
Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017



Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from: http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e

books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

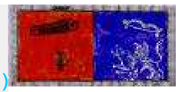
विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कौँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम



मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

*सिद्धिरस्तु*